42 वाँ राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह

42nd National Film Festival

1995

संपादन
पूर्बा रॉय

Editor
PURBA ROY

समन्वय
अजीत गुप्ता

Co-ordination
AJIT GUPTA

उत्पादन
जी. पी. धुसिया
वी. के. मीणा
ए. के. सिन्हा

Production
G.P. DHUSIA
V.K. MEENA
A.K. SINHA

फ़िल्म समारोह निदेशालय के लिए विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आकल्पित और प्रकाशित।
मुद्रक: वीरेन्द्रा प्रिंटर्स, करोल बाग, नई दिल्ली 110008

Designed and produced by the Directorate of Advertising & Visual Publicity, Ministry of Information & Broadcasting, Government of India, for the Directorate of Film Festivals. Printed at Veerendra Printers, Karol Bagh, New Delhi 110005.

CONTENTS

विषय सूची

	Page No.	
निर्णायक मण्डल	1	**JURY MEMBERS**
कथाचित्र पुरस्कार	5	**AWARDS FOR FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार	6	Best Feature Film
निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार	8	Indira Gandhi Award for Best First Film of a Director
लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए पुरस्कार	10	Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र का नर्गिस दत्त पुरस्कार	12	Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration
परिवार कल्याण संबंधी सर्वोत्तम फ़िल्म	14	Best Film on Family Welfare
अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म	16	Best Film on other Social Issues
पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम फ़िल्म	18	Best Film on Environment/Conservation/Preservation
सर्वोत्तम बाल फिल्म	20	Best Children's Film
सर्वोत्तम निर्देशन	22	Best Director
सर्वोत्तम अभिनेता	24	Best Actor
सर्वोत्तम अभिनेत्री	26	Best Actress
सर्वोत्तम सह-अभिनेता	28	Best Supporting Actor
सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री	30	Best Supporting Actress
सर्वोत्तम बाल-कलाकार	32	Best Child Artiste
सर्वोत्तम पार्श्व गायक	34	Best Male Playback Singer
सर्वोत्तम पार्श्व गायिका	36	Best Female Playback Singer
सर्वोत्तम छायांकन	38	Best Cinematography
सर्वोत्तम पटकथा	40	Best Screenplay
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	42	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	44	Best Editing
सर्वोत्तम कला निर्देशन	46	Best Art Direction

सर्वोत्तम वेशभूषाकार	48	Best Costume Designer
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	50	Best Music Direction
सर्वोत्तम गीत	52	Best Lyrics
निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार	54	Special Jury Award
सर्वोत्तम विशेष प्रभाव	56	Best Special Effects
सर्वोत्तम नृत्य संयोजन	58	Best Choreography
सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र	60	Best Feature Film in Assamese
सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र	62	Best Feature Film in Bengali
सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र	64	Best Feature Film in Hindi
सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र	66	Best Feature Film in Kannada
सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र	68	Best Feature Film in Malayalam
सर्वोत्तम मणिपुरी कथाचित्र	70	Best Feature Film in Manipuri
सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र	72	Best Feature Film in Tamil
सर्वोत्तम अंग्रेजी कथाचित्र	74	Best Feature Film in English
विशेष उल्लेख	76	Special Mention
ग़ैर कथाचित्र पुरस्कार	79	**AWARDS FOR NON-FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम ग़ैर कथाचित्र पुरस्कार	80	Best Non-Feature Film
निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम ग़ैर कथाचित्र पुरस्कार	82	Best First Non-Feature Film of a Director
सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फ़िल्म	84	Best Anthropological/Ethnographic Film
सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फ़िल्म	86	Best Arts/Cultural Film
सर्वोत्तम वैज्ञानिक फ़िल्म	88	Best Scientific Film
सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण फ़िल्म	90	Best Environmental/Conservation/Preservation Film
सर्वोत्तम प्रोत्साहन देने वाली फ़िल्म	92	Best Promotional Film
सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फ़िल्म	94	Best Historical Reconstruction/Compilation Film
समाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म	96	Best Film on Social Issues
सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फ़िल्म	98	Best Educational/Motivational/Instructional Film
सर्वोत्तम खोजी फ़िल्म	100	Best Investigative Film
सर्वोत्तम कार्टून फ़िल्म	102	Best Animation Film

विशेष निर्णायक मण्डल पुरस्कार 104 Special Jury Award
सर्वोत्तम लघु कल्पित फ़िल्म 106 Best Short Fiction Film
परिवार नियोजन पर सर्वोत्तम फ़िल्म 108 Best Film on Family Welfare
सर्वोत्तम छायांकन 110 Best Cinematography
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन 112 Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन 114 Best Editor
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन 116 Best Music Director
विशेष उल्लेख 118 Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिए गए 120 Awards Not Given

सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन पुरस्कार 121 **AWARDS FOR WRITING ON CINEMA**
सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक (1994) 122 Best Book on Cinema (1994)
सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक (1994) 124 Best Film Critic (1994)

कथासार : कथाचित्र 127 **SYNOPSES: FEATURE FILMS**

अभय 128 Abhay
आमोदिनी 129 Amodini
द्रोहकाल 130 Drohkaal
इंगलिश अँगस्त 131 English August
हागोरोलोई बोहू दूर 132 Hkhagoroloi Bohu Door
हम आपके हैं कौन 133 Hum Aapke Hain Koun
कादलन 134 Kaadhalan
कारुथम्मा 135 Karuthamma
कोचानियन 136 Kochaniyan
कोट्टरेशी कनासु 137 Kottreshi Kanasu
क्रांतिवीर 138 Krantiveer
मम्मो 139 Mammo

मायोफी गी माचा	140	Mayophy Gee Macha
मोघा मल	141	Mogha Mull
मुक्ता	142	Mukta
नामावर	143	Nammavar
निर्बाचन	144	Nirbachana
परम वीर चक्र	145	Param Vir Chakra
परिनयम	146	Parinayam
पवित्र	147	Pavithra
सुक्रुतम्	148	Sukrutham
स्वाहम्	149	Swaham
थेनमाविन कोमबाथ	150	Thenmavin Kombath
उनिशे एप्रिल	151	Unishe April
व्हील चेयर	152	Wheel Chair
कथासार: ग़ैर कथाचित्र	153	**SYNOPSES: NON-FEATURE FILMS**
अ लिटिल वार एवं अनदर वे ऑफ लर्निंग	154	A Little War & Another Way of Learning
ब्लू फ्लेम्स्, ग्रीन विलेजेस् एवं क्लिंट	155	Blue Flames, Green Villages & Clint
फादर, सन एण्ड होली वार एवं गेमस् वी प्लेड इन माइ यूथ	156	Father, Son, Holy War & Games We Played in My Youth
महागिरी एवं न्यूज़ मैगज़ीन 268 (ए) प्लेग-क्यूरेबल एंड प्रिवेंटिबल	157	Mahagiri & News Magazine No. 268 (A) Plague-Curable and Preventable
ऑफ टेगोर एंड सिनेमा एवं ओर्माइन्डे थीरंगलील	158	Of Tagore and Cinema & Ormaynde Theerangalil
पेंटिंग इन टाइम एवं फाल्के चिल्ड्रेन	159	Painting in Time & Phalke Children
रसयात्रा एवं स्टिल लाइफ	160	Rasayatra & Still Life
द मिथ ऑफ द ट्री, द सरपेन्ट एण्ड द मदर एवं द स्टोरी ऑफ इंटिग्रेशन	161	The Myth of the Tree, the Serpant and the Mother & The Story of Integration
द ट्रेप्ड एवं विशुद्ध वनंगल	162	The Trapped & Visuddha Vanangal

निर्णायक मण्डल Jury Members

सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

उनीशे अप्रैल (बंगला)

निर्माता: **रेनु राय** को स्वर्ण कमल तथा 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **रितुपौरनो घोष** को स्वर्ण कमल तथा 25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कथाचित्र का 1994 का पुरस्कार बंगला फिल्म **उनीशे अप्रैल** को भारत के शहरी जीवन में टूटते पारिवारिक संबंधों और अनूठे अभिनय के लिए प्रदान किया गया है। मां-बेटी के संबंधों को विशिष्ट दिग्काल में प्रस्तुत किया गया है और एक साफ सुथरे नाटक की रचना की गई है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM

UNISHE APRIL (BENGALI)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the Producer : **RENU ROY**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to the Director : **RITUPARNO GHOSH**

Citation

The Award for the Best Feature Film of 1994 is given to the Bengali Film **UNISHE APRIL** for a complex and impeccable rendition of fragmenting family relationships in urban India. The bond between a mother and daughter is extended to a defined space and time, and a drama immaculately constructed.

रेनु राय ने अपनी पढ़ाई तो अंग्रेजी साहित्य में की परन्तु अपनी सांस्कृतिक रुचियों को बनाए रखा। उन्होंने एक सांस्कृतिक संस्था "स्पंदन" की स्थापना में 1992 में एक मुख्य भूमिका निभाई और इस समय उसकी कार्यपालक-निर्देशक हैं। रेनु राय रचित कविताओं की एक पुस्तक भी प्रकाशित की गई है। **उनिशे एप्रिल** उनकी निर्मित पहली कथाचित्र है।

Renu Roy took her Masters degree in English but retained her interest in cultural events and committed herself to the performing arts. She played a pivotal role in the setting up of 'Spandan', a cultural organisation, in 1992 and is presently its Executive Director. She has one publication of poems to her credit.
Unishe April is her first feature film.

रितुपौरनो घोष एक जाने माने गैर-कथाचित्र निर्माता के पुत्र हैं। वे अर्थशास्त्र के पोस्ट ग्रेजुएट हैं परन्तु संचार माध्यम में भी रुचि रखते हैं। उन्होंने दूरदर्शन और सिनेमा के विज्ञापन क्षेत्र में बहुत काम किया है और विज्ञापन क्षेत्र में ही 18 पुरस्कार जीते हैं। उन्होंने दूरदर्शन के लिए **बन्दे मातरम्** का निर्देशन किया जिसके पश्चात् उन्होंने अपनी प्रथम कथाचित्र **हिरेर अंगटी** का निर्देशन किया। इस फिल्म को आठवें अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह 1993 में चुना गया था। **उनिशे एप्रिल** उनकी निर्देशित द्वितीय कथाचित्र है।

Rituparno Ghosh is the son of a noted documentary film-maker. With a Masters degree in Economics, he has retained his interest in communication. Rituparno has worked with advertising agencies on TV and cinema commercials and public service communications since 1985. He has won 18 advertising awards. He began working independantly with a telefilm **Bande Matram** and went on to make his first feature film **Hirer Angti** which was selected in the Information Section of the 8th International film festival in 1993.
Unishe April is the second Feature Film by Rituparno Ghosh.

निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार

मोघा मल(तमिल)

निर्माता: **जे. धर्माम्बल** को स्वर्ण कमल तथा 25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **ज्ञान राजाशेखरन** को स्वर्ण कमल तथा 25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए1994 का इंदिरा गांधी पुरस्कार तमिल फिल्म **मोघा मल** को उसकी साहित्यिक कलाकृति के प्रति भावपूर्ण अनुवाद, वर्णनात्मक अत्यंत भावपूर्ण संगीत रचना और विशिष्ट नियंत्रित निर्देशन के अनुरूप सिनेमा को स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत करने के लिए प्रदान किया गया है।

INDIRA GANDHI AWARD FOR THE BEST FIRST FILM OF A DIRECTOR

MOGHA MULL (TAMIL)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to the Producer : **J. DHARMAMBAL**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to the Director : **GNANA RAJASEKARAN**

Citation

The Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director for the year 1994 is given to the Tamil Film **MOGHA MULL** for an able translation of a literary work of art, for integrating music with melodramatic narrative and for a cinematic simplicity matched with remarkable directorial control.

जानकीरमन धर्ममाम्बल फिल्म इन्डस्ट्री में जॉनी नाम से परिचित है। उनकी पहली फिल्म **धकम्** जिसका अर्थप्रबंध राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम द्वारा किया गया था, इंगलैंड के फिल्म समारोह में प्रदर्शित की गई थी। उनकी पत्नी उनके फिल्म निर्माण कार्य में उनका हर प्रकार से सहायता करती हैं।
धर्ममाम्बल ने अपने चारों फिल्मों में नए तक्नीशियन, कैमरामैन, संपादक तथा निर्देशकों को अवसर दिया जो आगे चलकर अपने कार्य के लिए प्रसिद्ध हुए।

Janakeramen Dharmambal is popularly known as Johny in the film industry. His first film **Dhakam**, financed by NFDC, was released in England during the film festival. His wife has been assisting him in all respects, from selecting themes to identifying fresh talents.
J. Dharmambal in all his four movies has introduced new Technicians, Camera-man, Editors and Directors, who on the long run have become pioneers in their fields.

ज्ञान राजासेखरन केरेला कैडर के आई. ए. एस. आफिसर हैं जो उप-कलक्टर से ट्रीचूर के कलक्टर के ओहदे पर काम कर चुके हैं। उन्होंने उद्योग एवं खेल और युवा विभागों में भी कार्य किया है। वे केरला राज्य फिल्म विकास निगम में प्रबन्ध निर्देशक भी थे और अब मद्रास में केन्द्रिय फिल्म सर्टिफिकेशन बोर्ड के क्षेत्रीय आफिसर हैं। उन्होंने तमिल में कई नाटक लिखे और निर्देशित किए हैं तथा कई किताबों, ब्रोशर और कैलेन्डर की अभिकल्पना भी की है।
मोधामल उनके द्वारा निर्देशित पहली कथाचित्र है।

Gnana Rajasekaran is an IAS officer of Kerala Cadre and has served in various prestigious positions ranging from Sub-collector to the District Collector of Trichur. He has held important positions in Industry and Sports & Youth Affairs departments. Rajasekaran has held the post of Managing Director of Kerala State Film Development Corporation and is the Regional Officer, Central Board of Film Certification in Madras, presently. He has written and directed several plays in Tamil and has designed several book covers, brochures and cal-enders.
Mogha Mull is his first directorial ven-ture in films.

लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए पुरस्कार

हम आपके हैं कौन (हिन्दी)

निर्माता: राजश्री प्रोडक्शन्स प्रा.लि. को स्वर्ण कमल तथा 40,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक: सूरज आर. बर्जात्या को स्वर्ण कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम कथाचित्र का 1994 का पुरस्कार हिंदी फिल्म **हम आपके हैं कौन** को पारिवारिक मनोरंजन और प्रेम-प्रसंगों से भरपूर भारत में जनसाधारण का मनोरंजन करती धूम मचा देने वाली फिल्म के लिए प्रदान किया गया है जिसने सरल-स्पष्ट भाषा का प्रयोग करके भी सफलता प्राप्त की है।

AWARD FOR THE BEST POPULAR FILM PROVIDING WHOLESOME ENTERTAINMENT

HUM AAPKE HAIN KOUN (HINDI)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 40,000/- to the Producer : **M/S RAJSHRI PRODUCTIONS P. LTD.**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director : **SOORAJ R. BARJATYA**

Citation

The Award for the Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment of 1994 is given to the Hindi Film **HUM AAPKE HAIN KOUN** for revolutionising mass entertainment in India with a family entertainer and a fantasy film that succeeds without recourse to familiar narrative idioms of violence.

सूरज आर. बर्जातिया ने अपनी फिल्मी जीवन की शुरूआत महेश भट्ट की फिल्म **सारांश** में निर्देशन सहायक से की। उन्हें हिरेन नाग के साथ **अबोध** में और एन. चन्द्रा के साथ **प्रतिघात** में सहायक बनने का अवसर भी मिला। सूरज राजश्री प्रोडक्शन के टी.वी. सिरियल **पेइंग गेस्ट** में मुख्य सहायक भी रहे।

मैंने प्यार किया सूरज द्वारा निर्देशित पहली कथाचित्र थी। इस कथाचित्र को फिल्मफेयर 1989 का सर्वोत्तम फिल्म पुरस्कार मिला। साथ ही सूरज को निर्देशन के लिए 1989 के प्रथम प्रयास का पुरस्कार भी मिला।

हम आपके हैं कौन सूरज बर्जातिया के द्वारा निर्देशित दूसरी कथाचित्र है।

Sooraj R. Barjatya started his career as Asstt. Director to Mahesh Bhatt in **Saaransh**. He assisted Hiren Nag in **Abodh** and N. Chandra in **Pratighat**. Barjatya was Chief Assistant in Rajshri Productions TV Serial **Paying Guest**. His first film as an independant director was **Maine Pyar Kiya**. The film apart from getting the Filmfare award for the Best Film of 1989, won him the special award for the Most Sensational Debut for 1989. **Hum Apke Hain Koun** is his second film as an independant Director.

राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार

मुक्ता (मराठी)

निर्माता: **अशोक बी. महात्रे** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **जब्बर पटेल** को रजत कमल तथा 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र का 1994 का पुरस्कार मराठी फिल्म **मुक्ता** को राष्ट्रीय जाति उत्पीड़न के चित्र के उग्ररूप को नाटकीय शैली में प्रस्तुत करने और भारत के दलित जनसमूह के संबंधों का प्रचार करने के लिए प्रदान किया गया है।

NARGIS DUTT AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM ON NATIONAL INTEGRATION

MUKTA (MARATHI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer : **ASHOK B. MHATRE**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the Director : **JABBAR PATEL**

Citation

The Award for the Best Feature Film on National Integration of 1994 is given to the Marathi Film **MUKTA** for mapping a sharply defined dramatic style on to a canvas of national caste oppression and for unversalising the alliances of the Indian Dalit peoples.

अशोक बी. महात्रे

Ashok B. Mhatre

जब्बार पटेल एक डाक्टर से निर्देशक बने और घासीराम कोतवाल नाटक का निर्देशन करके प्रसिद्ध हुए। उनकी पहली कथाचित्र **सामना** को 1974 का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उसके बाद उन्होंने कई प्रसिद्ध कथाचित्रों का निर्देशन किया **उमबर्था, जैत रे जैत, सिंहासन** तथा **एक होता विदूशक**। इस समय वे एक अंतर्राष्ट्रीय योजना के दौरान बाबा साहब अम्बेदकर पर चित्र बना रहे हैं।

Jabbar Patel, the medical practitioner turned director came to the national cultural scene as a theatre director with Ghasiram Kotwal. His debut as a film director for **Saamna** in 1974 won him the National Film Award. Following that on regular intervals he has made a few renowned films like **Umbartha, Jait Re Jait, Simhasan** and **Ek Hota Vidushak**. Presently he is working on an international project — a feature film on Dr. Babasaheb Ambedkar.

परिवार कल्याण संबंधी सर्वोत्तम फिल्म पुरस्कार

कारुथम्मा (तमिल)

निर्माता: **वेट्रीवेल आर्ट क्रीयेशन्स** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **भारतीराजा** को रजत कमल तथा 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

परिवार कल्याण संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र का 1994 का पुरस्कार तमिल फिल्म **कारुथम्मा** को तमिलनाडु के ग्रामीण चित्रण को व्यापक रूप प्रदान करते हुए अतिभावुकतापूर्ण रूप में बालिकाओं की शैशवकाल में की जाने वाली हत्याओं के दबाए गए सामाजिक विषय को प्रस्तुत करने के लिए प्रदान किया गया है। इसमें एक ऐसे आयाम को दर्शाया गया है जिस पर अब सिर्फ भारतीराजा की ही छाप दिखाई देती है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM ON FAMILY WELFARE

KARUTHAMMA (TAMIL)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer : **VETRIVEL ART CREATIONS**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the Director : **BHARATHIRAJAA**

Citation

The Award for the Best Film on Family Welfare for 1994 is given to the Tamil Film **KARUTHAMMA** for extending the pressing social issue of female infanticide onto a melodrama spanning the canvas of rural Tamil Nadu, a dimension that is now uniquely Bharathirajaa Signature.

भारती राजा का जन्म मदुरई जिले के अलिनगरम् गाँव में हुआ। वे लम्बे संघर्ष के बाद फिल्म इण्डस्ट्री में 1968 में निर्देशन सहायक बनकर आए और बाद में निर्देशक बने।

उन्होंने कभी अपने आप को स्टूडियो या सेट्स की गर्मी या घुटन में बाँध कर नहीं रखा बल्कि खुली हवा में शूटिंग करना ज्यादा पसंद किया। उनकी फिल्मों में रोजमर्रा की जिन्दगी की पहचान है जैसे—16 **व्याथीनीले, अलइगल ओवीथिल्लई, कदालोरा, कविताइगल,** आदि जो आदमी को भीतर तक भेद करती हैं।

भारती राजा ने 1978 से कई बार सर्वोत्तम निर्देशक का पुरस्कार प्राप्त किया है।

Bharathirajaa born in Allinagaram Village of Madurai district. He joined the film industry after a prolonged struggle as an Assistant Director in 1968 and later on graduated as Director.

He has never restricted himself to the heat, glare and suffocation of the studio sets, rather took to nature for shooting. His films which etched real life characters viz. **16 Vayathinile, Alaigal Oyvathillai, Kadalora, Kavithaigal** etc. had delved deep into the minds of people one by one.

He has won many awards as a best director since 1978.

मद्यनिषेध, महिला तथा बाल कल्याण, दहेज विरोधी, नशीले पदार्थों से हानियाँ, विकलांग कल्याण आदि जैसे अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म पुरस्कार

परिनयम् (मलयालम) एवं व्हील चेयर (बंगला)

निर्माता: **जी.पी. विजयकुमार** (परिनयम्) एवं **राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि.** (व्हील चेयर) को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **हरिहरन** (परिनयम्) एवं **तपन सिन्हा** (व्हील चेयर) को रजत कमल तथा 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

मद्यनिषेध, महिला तथा बाल कल्याण, दहेज विरोधी, नशीले पदार्थ, विकलांग कल्याण जैसे अन्य सामाजिक विषयों के सर्वोत्तम कथाचित्र का 1994 का पुरस्कार मलयालम फिल्म **परिनयम्** को केरल के सामाजिक इतिहास की सच्ची घटना को दोहराने के लिए दिया गया है जिसमें पारम्परिक जाति प्रधान समाज, सेक्स उत्पीड़न की प्रासंगिकता को निरंतर दर्शाया गया है और बंगला फिल्म **व्हील चेयर** को उद्देश्यपूर्ण कार्यवाई का सुझाव देने वाली, विकलांग व्यक्तियों की स्थिति को प्रभावशाली रूप में प्रदर्शित करने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON OTHER SOCIAL ISSUES SUCH AS PROHIBITION, WOMEN AND CHILD WELFARE, ANTI-DOWRY, DRUG ABUSE, WELFARE OF THE HANDICAPPED ETC.

PARINAYAM (MALAYALAM) & WHEEL CHAIR (BENGALI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producers : **G. P. VIJAY KUMAR** (for **PARINAYAM**) **& N.F.D.C.** (for **WHEEL CHAIR**)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the Directors : **HARIHARAN** (for **PARINAYAM**) **& TAPAN SINHA** (for **WHEEL CHAIR**)

Citation

The Award for the Best Film on other Social issues such as prohibition, women and child welfare, anti-dowry, drug abuse, welfare of the handicapped, etc., of 1994 is given to the Malayalam Film **PARINAYAM** for recreating a real incident in the social history of Kerala, thereby indicating the continued relevance of gender oppression in traditional caste-dominated society, and to the Bengali Film **WHEEL CHAIR** for a positive rendition of the condition of handicapped people suggesting affirmative action.

जी. पी. विजय कुमार सैवेन आर्टस् इन्टरनैशनल लि. के प्रबंध निदेशक हैं। पिछले 10 सालों से वे फिल्म निर्माता तथा वितरक हैं। उन्होंने अब तक 28 फिल्मों का निर्माण तथा वितरण किया है जिनमें कुछ पुरस्कृत हुई हैं और कुछ अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में दिखाई गई हैं। उनकी फिल्मों के कुछ नाम इस प्रकार हैं—**पंचाग्नी, तालावट्टम, स्वतीतिरूनल, भारतम्,** आदि।

हरिहरन फिल्मों में 1965 में आए तथा अब तक 60 फिल्मों का निर्देशन कर चुके हैं। उनकी बेहतरीन फिल्मों में से कुछ, अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में सम्मिलित हो चुकी हैं। उत्तरी कोरिआ के प्योंगयान फिल्म समारोह में डिप्लोमा भी प्रदान किया गया था। 1993 में उनकी फिल्म **सरगम** को सर्वोत्तम निर्देशक का राज्य पुरस्कार तथा लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन के लिए सर्वोत्तम कथाचित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला।
परिनयम् उनकी न्यूनतम प्रस्तुती है।

तपन सिन्हा का जन्म 1924 में हुआ। विज्ञान में स्नातक बनने के बाद वे न्यू थियेटर में सहायक साउण्ड इंजीनियर के रूप में कार्यरत रहे। 1952 से उन्होंने फिल्म निर्देशन आरम्भ किया और अब तक 38 फिल्में बना चुके हैं। उनकी फिल्म **काबुलीवाला** को 1956 में सर्वोत्तम कथाचित्र का स्वर्ण कमल प्राप्त हुआ। इसके बाद उन्हें **हाटे बजारे** के लिए भी सर्वोत्तम फिल्म पुरस्कार प्राप्त हुआ। 1990 में **एक डॉक्टर की मौत** के लिए उन्हें सर्वोत्तम निर्देशक का पुरस्कार मिला।
तपन सिन्हा को कई अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है।

G. P. Vijay Kumar, Managing Director of Seven Arts International Limited, is a leading film producer and distributor. He has been associated with the film production and distribution for the last 10 years. He has so far produced and or distributed 28 films, of which some were award winners while a few earned the distinction of representing India in International Festivals. Some of his popular films include **Panchagni, Thalavattom, Swathithirunal, Bharatham,** etc.

Hariharan entered the Malayalam film industry in 1965, and has so far directed 60 films, many of which were highly successful both commercially and critically. A few of his films have entered the Indian Panorama of International Film Festival of India also. He has also been honoured with a Diploma by the Pyongyan Film Festival of North Korea. In 1993 **Sargam** won the State Award for the Best Director and also National Award for wholesome and popular entertainment.
His latest film is **Parinayam**.

Tapan Sinha was born in 1924. After graduating in Science, Tapan Sinha worked as an assistant sound engineer at New Theatre Studio. Since 1952 he started his prolific career as a film director and since then has made 38 feature films. His film **Kabuliwala** won the Swaran Kamal for the Best Film of the year in 1956. He later also won the National Award for the Best Film for **Hatey Bazarey**. In 1990 **Ek Doctor Ki Maut** won him the National Award for Best Director.
He has also won many international awards from different countries for his various films since 1962.

पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

निर्बाचन (उड़िया)

निर्माता: **राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम** और **दूरदर्शन** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **बिप्लब राय चौधरी** को रजत कमल तथा 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण के सर्वोत्तम कथाचित्र का 1994 का पुरस्कार उड़िया फिल्म **निर्बाचन** को भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में अनूठे रूप से नियंत्रित और अनुपम सिनेमा रूपक एवं करुणा और उपहास के बेजोड़ प्रदर्शन सहित पर्यावरण की कठिनाइयों को सूक्ष्मता से प्रस्तुत करने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON ENVIRONMENT/CONSERVATION/PRESERVATION

NIRBACHANA (ORIYA)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer : **N.F.D.C.** and **DOORDARSHAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the Director : **BIPLAB RAY CHAUDHURI**

Citation

The Award for the Best Film on Environment/Conservation/Preservation of 1994 is given to the Oriya Film **NIRBACHANA** for a stunningly controlled and uniquely cinematic metaphor of rural India and an impending environmental catastrophe shown with compassion and satire.

बिप्लब राय चौधरी ने फिल्म संपादन का कार्य 1963 से आरंभ किया। उनकी अपनी फिल्मों के अलावा उन्होंने 50 से ऊपर फिल्मों का संपादन किया है। 1969 से उन्होंने लघु फिल्म बनाना आरंभ किया तथा 1972 में **बर्न बिहर्न** से कथाचित्र निर्देशन आरंभ किया। आजकल वे भुवनेश्वर स्थित कलिंग स्टूडियो के बोर्ड के एक निर्देशक हैं। उनकी प्रमुख पुरस्कार प्राप्त फिल्में हैं— **चिलिका तीरे, शोध, महापृथ्वी, आश्रय, ये कहानी नहीं, स्पंदन, अरन्य रोदन,** आदि। बिप्लब राय चौधरी को कई राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

Biplab Ray Chaudhuri began editing films in 1963. Apart from his own films he has edited more than 50 films at Calcutta and Bombay. He began producing - directing short films in 1969 and made his debut as a feature film director in 1972 with **Barna Biharna.** Presently he is also on the Board of Directors of the well - equipped Kalinga Studios, Bhubaneshwar, Orissa. His major award winning films include **Chilika Teerey, Shodh, Mahaprithivi, Ashray, Yeh Kahani Nahin, Spandan, Aranya Rodan,** etc. Biplab Ray Chaudhuri has won several national and international awards.

सर्वोत्तम बाल कथाचित्र पुरस्कार

कोचानियान (मलयालम) एवं अभय (हिन्दी)

निर्माता: **बुशुरा शाहुदीन** (कोचानियान) और **एन'सीप** (अभय) को स्वर्ण कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **सतीश वेंगनूर** (कोचानियान) और **अन्नू कपूर** (अभय) को स्वर्ण कमल तथा 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बाल कथाचित्र का 1994 का पुरस्कार मलयालम फिल्म **कोचानीयान** को युवा बालक के अनुभवों और स्वप्नों के माध्यम से वर्णित केरल के मध्यवर्गीय परिवार की साधारण लेकिन सार्थक कहानी के लिए प्रदान किया गया है और हिन्दी फिल्म **अभय** को जीवन के तर्कसंगत दृष्टिकोण के समर्थक बालक और प्रेत के बीच मानव प्रेम के समर्थक मनोरंजक कथाचित्र के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST CHILDREN'S FILM

KOCHANIYAN (MALAYALAM) & ABHAY (HINDI)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 30,000/- to the Producers : **BUSHURA SHAHUDEEN** (for **KOCHANIYAN**) & **N'CYP** (for **ABHAY**)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the Directors : **SATHEESH VENGANOOR** (for **KOCHANIYAN**) & **ANNU KAPOOR** (for **ABHAY**)

Citation

The Award for the Best Children's Film of 1994 is given to Malayalam Film **KOCHANIYAN** for a simple but effective tale of a middle class Kerala family told through the experiences and dreams of a young boy and to the Hindi Film **ABHAY** for an entertaining film advocating humane love between a child and a ghost advocating a rational outlook to life.

बुशुरा शहुदीन 47 वर्ष की आयु में इतिहास फिल्मस् प्रा. लि. की प्रबंध निदेशक हैं। उन्होंने **अच्चन पट्टालम** का निर्माण किया जिसके लिए उन्हें राज्य सरकार से पुरस्कार मिला तथा यह फिल्म त्रीवेन्द्रम में 1991 के अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह में दर्शायी गयी।

Bushura Shahudeen is 47 years old and is the Managing Director of M/s. Itihas Films (P) Ltd. Her previous film produced viz. **Achan Pattalam** won the State Government Award and the film was also screened in the International Childrens' Film Festival which was held at Trivandrum in 1991.

सतीश वेगंनूर ने फिल्म एवं टेलीवीजन संस्था से डिप्लोमा प्राप्त किया है। फिल्म निर्देशन के साथ ही वे फ्रेटोग्राफी तथा विडियोग्राफी में भी रूचि रखते हैं। **कोचानियन** उनकी पहली फिल्म है।

Satheesh Venganoor has a diploma in Film Direction and Film making from Film and Television Institute. Other than film direction he is also interested in photography and videography.
Kochaniyan is his first film.

अन्नु कपूर का असली नाम अनिल कपूर है। उन्होंने भोपाल में अपनी स्कूली पढ़ाई समाप्त करने के पश्चात् दिल्ली के नैशनल स्कूल ऑफ ड्रामा से ड्रामाटिक्स का डिप्लोमा प्राप्त किया। उन्होंने फोक और समकालीन दोनों प्रकार के नाटकों में काम किया। उन्हें कई प्रसिद्ध निर्देशकों के साथ काम करने का अवसर मिला— इ. अल्काज़ी, बैरी जॉन, एम. के. राइना, बी. वी. कारांथ, आदि। अन्नु कपूर ने कई फिल्म एवं टेलिवीज़न धारावाहिकों में भी काम किया है। उनकी कुछ प्रमुख फिल्में हैं— **मण्डी, तेज़ाब, बेताब, राम लखन, उत्सव, मैं आज़ाद हूँ, मिस्टर इन्डिया, परफेक्ट मर्डर, घायल,** आदि। इनमें कई फिल्मों को कई पुरस्कार भी प्राप्त हैं। फिल्म निर्देशन उनका पुराना उद्देश्य था — **अभय** उसी का एक नमूना है।

Annu Kapoor is the screen name adopted by Anil Kapoor. After completing his schooling from Bhopal Annu Kapoor took a Diploma in Dramatics from the National School of Drama, Delhi. He is a theatre buff and has acted in both folk and modern theatre. He has had the opportunity to work under renowned directors like E. Alkazi, Barry John, M.K. Raina, B.V. Karanth and many others. He has acted in films and TV serials as well. The films he has worked in include **Mandi, Tezaab, Betaab, Ram Lakhan, Utsav, Main Azad Hoon, Mr. India, Perfect Murder, Ghayal**, etc. many of which have won several awards. Directing films has always been in Annu Kapoor's plans and **Abhay** is the result.

सर्वोत्तम निर्देशन पुरस्कार

जाह्नु बरुआ

निर्देशक: **जाह्नु बरुआ** को स्वर्ण कमल तथा 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम निर्देशन का 1994 का पुरस्कार **जाह्नु बरुआ** को असमिया फिल्म **हागोरोलोई बोहू दूर** के निर्देशन से संबंधित मूल फार्मेट में असमिया जीवन की झांकी और वास्तविकता के अनूठे प्रस्तुतीकरण के लिए दिया गया है जिससे भारतीय सिनेमा के स्पेक्ट्रम में वृद्धि हुई है।

AWARD FOR THE BEST DIRECTION

JAHNU BARUA

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Director : **JAHNU BARUA**

Citation

The Award for the Best Direction for 1994 is given to **JAHNU BARUA** for his work in the Assamese Film **HKHAGOROLOI BOHU DOOR** for capturing Assamese life and reality in an original format uniquely associated with the director, and for enriching the spectrum of Indian Cinema thereby.

जाह्नु बरुआ फिल्म एवं टेलीविजन संस्था के स्नातक हैं। उनकी प्रथम कथाचित्र **अपरूपा** को 1983 का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ था। **पापोरी** और **हलोधिआ चोराए बाओधन खाई** भी सराहनीय थी। **हालोधिआ चोराए बाओधन खाई** को 1988 के राष्ट्रीय फिल्म समारोह में स्वर्ण कमल तथा लोकार्नो अंतराष्ट्रीय फिल्म समारोह में रजत पदक प्राप्त हुआ था। 1989 में टोकियो फिल्म समारोह में इस फिल्म को सर्वोत्तम एशियाई फिल्मों में दर्शाया गया था। 1990 में जाह्नु ने **बनानी** और उसके बाद **फिरिंगोती** बनाई। **फिरिंगोती** को 1992 में रजत कमल मिला। फिल्मों से पहले वे भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन में काम करते थे। वे आजकल ज़ेवियर इनस्टिट्यूट ऑफ कम्यूनिकेशन, बम्बई में सिनेमा विषय को पढ़ाते भी हैं।

Jahnu Barua is a graduate in Film Direction from Film and Television Institute of India. His first feature film has been **Aparoopa** which won the National Award in 1983. His other film include **Papori** and **Halodhia Choraye Baodhan Khai** (The Catastrophe). The latter won him the Swarna Kamal at the National Film Festival, 1988 and Silver Leopard at the Locarno International Film Festival, 1988. It was also in the Best of Asia Section of the Tokyo International Film Festival, 1989. He has also made **Banani** (The Forest) in 1990. Then he made **Firingoti** (The Spark) which has also won him the Rajat Kamal at the National Film Festival, 1992. Before making feature films, Jahun Barua worked in the Indian Space Research Organisation (ISRO) making educational programmes for Satellite Television. He also teaches Cinema at the Xavier Institute of Communciations, Bombay.

सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार

नाना पाटेकर

अभिनेता: **नाना पाटेकर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेता का 1994 का पुरस्कार **नाना पाटेकर** को हिन्दी फिल्म **क्रांतिवीर** में एक ऐसे व्यक्ति का प्रभावशाली अभिनय करने के लिए प्रदान किया गया है जो अपने ढंग से जीता है। वह आम व्यक्ति के गहन और छिपे शक्ति-स्रोत को उजागर कर सका है जो प्रत्येक व्यक्ति में सुप्त पड़ी है।

AWARD FOR THE BEST ACTOR

NANA PATEKAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Actor : **NANA PATEKAR**

Citation

The Award for the Best Actor of 1994 is given to **NANA PATEKAR** for his work in the Hindi Film **KRANTIVEER** for his impressive portrayal of a man who lives life on his own terms. He is able to rekindle in the common man the deep, hidden resource of strength that lies dormant in each one of us.

नाना पाटेकर ने कई फिल्मों में प्रतिभाशाली अभिनय किए हैं जैसे **अंकुश, प्रतिघात, कल की आवाज, प्रहार** तथा **तिरंगा** पर **क्रांतिवीर** के लिए उन्हें स्क्रीन पैनासोनिक तथा फिल्म फेयर की ओर से भी सर्वोत्तम अभिनेता का पुरस्कार मिला।

Nana Patekar was always acclaimed as a fine actor for his performance in **Ankush, Pratighaat, Kal Ki Awaaz, Prahaar,** and **Tiranga** but it was with **Krantiveer** that he won his first award as Best Actor adjudged by Screen Panasonic and Filmfare.

सर्वोत्तम अभिनेत्री पुरस्कार

देबोश्री राय

अभिनेत्री: **देबोश्री राय** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेत्री का 1994 का पुरस्कार **देबोश्री रॉय** को बंगला फिल्म **उनीशे अप्रैल** में एकाकी डाक्टर के पात्र को हूबहू अभिनय करने के लिए प्रदान किया गया है। इस फिल्म में विभिन्न भावों को अत्याधिक संवेदी और संतुलित रूप में चित्रांकित किया गया है।

AWARD FOR THE BEST ACTRESS

DEBASREE ROY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Actress: **DEBASREE ROY**

Citation

The Award for the Best Actress of 1994 is given to **DEBASREE ROY** for her complete identification with the character of the lonely doctor in the Bengali Film **UNISHE APRIL.** The wide range of emotion is portrayed in a most sensitive and controlled manner in this film.

देबोश्री राय बंगला फिल्मों की एक जानी मानी अभिनेत्री हैं। उनकी प्रथम फिल्म तपन सिन्हा द्वारा निर्देशित **कुहेली** है जिसमें उन्होंने एक बच्चे की भूमिका में काम किया था। बाद में बड़े होकर उन्होंने **36 चौरंगी लेन, मेघ मुक्ती, नटी बिनोदिनी** आदि फिल्मों में अभिनय किया।

देबोश्री राय एक मशहूर ओडिसी नृत्यांगना भी हैं। वे अपने नृत्य संस्था **'नटराज'** में नृत्य सिखाती भी हैं।

Debasree Roy is a leading commercial star of Bengali Cinema. She started her carrier as a child artist in Tarun Mazumdar's **Kuheli**. Later she established herself as a heroine in films like, **36 Chowringheelane, Megh Mukti, Nati Binodini,** etc.

She is also a renowned Odissi dancer. She teaches and choreographs Odissi compositions in her dance school **'Natraj'**.

सर्वोत्तम सह-अभिनेता पुरस्कार

आशीष विद्यार्थी (द्रोहकाल) एवं नागेश (नामावर)

सह-अभिनेता: **आशीष विद्यार्थी** और **नागेश** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सह-अभिनेता का 1994 का पुरस्कार **आशीष विद्यार्थी** को **द्रोहकाल** में अपनी भूमिका को पूर्ण क्षमता और दृढ़ विश्वास के साथ सही रूप में प्रस्तुत करने के लिए प्रदान किया गया है और **नागेश** को **नामावर** में महत्वपूर्ण और दुविधापूर्ण स्थिति में शोक संतप्त पिता की भूमिका को जीवंत करने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST SUPPORTING ACTORS

ASHISH VIDYARTHI (for Hindi Film 'DROHKAAL')
& NAGESH (for Tamil Film 'NAMMAVAR')

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Supporting Actors : **ASHISH VIDYARTHI & NAGESH**

Citation

The Award for the Best Supporting Actor of 1994 is given to **ASHISH VIDYARTHI** for bringing credibility to his role with strength and total conviction in **DROHKAAL** and to **NAGESH** for making the heart break of a broken father come alive with dignity and poise in **NAMMAVAR.**

आशीष विद्यार्थी का जन्म 1965 में हुआ था। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से अपनी शिक्षा प्राप्त की जिसके पश्चात् उन्होंने दिल्ली के ही नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा से नाटक पर डिप्लोमा प्राप्त किया। उन्हें कई प्रसिद्ध नाटककारों के साथ काम करने का सौभाग्य मिला - हबीब तनवीर, प्रसन्ना, बैरी जॉन, सत्यदेव दुबे आदि। उन्होंने चाणक्य, सी-गल, फ्रॅदर, वेस्ट-साइड स्टोरी जैसे प्रसिद्ध नाटकों में भी अभिनय किया है।

आशीष ने अपनी फिल्मी जीवन में केतन मेहता (**सरदार पटेल**), विधु विनोद चोपड़ा (**1942 - अ लव स्टोरी**), महेश भट्ट (**नाजायज़**) आदि निर्देशकों के साथ काम किया है।

Ashish Vidyarthi was born in 1965 and completed his education from Delhi. He is a Diploma holder is dramatics from the National School of Drama, New Delhi. He has worked with renowned directors like Habib Tanvir, Prasanna, Barry John, Satyadev Dubey and others. Major plays in which he has acted include Chanakya, Sea-gull, Father, West-Side story etc.

Ashish's film career include films by Ketan Mehta (**Sardar Patel**), Vidhu Vinod Chopra (**1942-A Love Story**), Mahesh Bhatt (**Najayaz**), etc.

नागेश का जन्म 1933 में हुआ और उन्होंने बहुत ही अल्प आयु में रंगमंच पर काम करना शुरू किया। वे 1951-1957 तक रेल विभाग में कार्यरत रहे जिसके पश्चात् उन्होंने फिल्म में काम आरंभ किया। उनकी पहली फिल्म थी **तामाराई कालम** (तमिल) अब तक वे 1000 से अधिक फिल्मों में काम कर चुके हैं जिनमें तमिल, तेलेगु, कन्नड़, मलयालम तथा हिन्दी भाषाओं की फिल्में प्रमुख हैं। उन्हें रंग मंच तथा फिल्मोंमें अभिनय के लिए कई पुरस्कार भी मिले हैं।

Nagesh was born in 1933 and started acting on stage at a very early age. He worked in the Railways from 1951-57 and entered film industry in 1957 with the Tamil film **Tamarai Kalam**. He has since acted in over 1000 films in Tamil, Telugu, Kannada, Malayalam & Hindi. He has won many awards for stage and film acting.

सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री पुरस्कार

सुरेखा सीकरी रेगे

सह अभिनेत्री: **सुरेखा सीकरी रेगे** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सह अभिनेत्री का 1994 का पुरस्कार **सुरेखा सीकरी रेगे** को हिन्दी फिल्म **मम्मो** में मां की प्रतिनिधि भूमिका को निश्चल, भावुकता और सौम्यता से सहज रूप से निभाने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST SUPPORTING ACTRESS

SUREKHA SIKRI REGE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Supporting Actress : **SUREKHA SIKRI REGE**

Citation

The Award for the Best Supporting Actress of 1994 is given to **SUREKHA SIKRI REGE** for her portrayal of the surrogate mother, underplayed with quiet sensitivity and gentleness, in the Hindi Film **MAMMO.**

सुरेखा सीकरी रेगे दस सालों तक रंगमंच तथा फिल्मों की छात्रा रही हैं। उन्होंने प्रसिद्ध रंगकर्मी इब्राहीम अल्काज़ी से रंगमंच की सुक्ष्मियों की शिक्षा प्राप्त की है। वे नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के रेपरटॅरी कम्पनी के नाटकों में काम कर चुकी हैं और उन्होंने कई नाटकों का हिन्दी रुपान्तर भी लिखा है।

सुरेखा ने **परिनित, नज़र** तथा **मम्मो** में उल्लेखनीय चरित्र निभाया है। उन्होंने गोविन्द निहालिनी, मृनाल सेन, मणि कौल, श्याम बेनेगल आदि प्रसिद्ध निर्देशकों के साथ काम किया है।

सुरेखा को **तमस** के लिए 1988 का सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री का पुरस्कार प्राप्त हुआ था तथा अपनी देन के लिए 1989 का संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था।

Surekha Sikri Rege has been a student of theatre and film arts and has trained under Ebrahim Alkazi for over a decade. She has performed in many of the NSD Repertory Company's productions. She has also translated a number of plays from English to Hindi.

Her recent foray into the world of cinema has been in the form of significant roles in **Parinit, Nazar** and **Mammo**. She has worked with eminent directors viz., Govind Nihalini, Mrinal Sen, Mani Kaul, Shyam Benegal and others.

Surekha won the Best Supporting Actress in '88 for **Tamas** and Sangeet Natak Academy Award in '89 for her contribution to theatre acting.

सर्वोत्तम बाल कलाकार पुरस्कार

मास्टर विजय राघवेंद्र

बाल कलाकार : **मास्टर विजय राघवेंद्र** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बाल कलाकार का 1994 का पुरस्कार **मास्टर विजय राघवेंद्र** को कन्नड़ फिल्म **कोट्टेरेशी कानासु** में प्रतिभावान छोटे बालक की भूमिका निभाने के लिए प्रदान किया गया है। जिसका समाज ने बहिष्कार कर दिया है। उसने अपने मधुर और प्रेममय व्यवहार से सबका मन जीत लिया है।

AWARD FOR THE BEST CHILD ARTISTE

MASTER VIJAYA RAGHAVENDRA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Child Artiste : **MASTER VIJAYA RAGHAVENDRA**

Citation

The Award for the Best Child Artiste of 1994 is given to **MASTER VIJAYA RAGHAVENDRA** for his work in Kannada Film **KOTTRESHI KANASU** for his portrayal of the bright little boy who is a social outcast. He wins your heart with his soft and endearing mannerisms.

मास्टर विजय राघवेन्द्र विशिष्ट कलाकार जैसे श्री अप्पाजी गौडा के परिवार के वंशज हैं। उन्होंने तीन साल की आयु में अपनी प्रथम फिल्म **चालीसुवा मोडागालु** में अभिनय किया था। उसके पश्चात् विजय ने पारवताम्मा राजकुमार द्वारा निर्मित **परशुराम** तथा **अरालिडा हूगालू** में भी अभिनय किया है।

Master Vijaya Raghvendra belongs to a family of great artists like Sri Appaji Gowda. He made his debut at the age of three in the film **Chalisuva Modagalu**. Later he also worked in the films **Parashurama** and **Aralida Hoogalu** which was produced by Smt. Parvathamma Rajkumar.

सर्वोत्तम पार्श्व गायक पुरस्कार

उन्नीकृष्णन

पार्श्व गायक: **उन्नीकृष्णन** को रजत कमल तथा 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्व गायक का 1994 का पुरस्कार **उन्नीकृष्णन** को दो तमिल फिल्मों **पवित्र** और **कारालन** के गीतों को अपने सहज और उत्कृष्ट स्वर में गाने के लिए प्रदान किया गया है जिस पर उन्होंने व्यावसायिकता की झलक भी नहीं पड़ने दी या जिसमें उन्होंने अपने उन्मुक्त गायन और तकनीक पर अधिपत्य का प्रदर्शन किया है।

AWARD FOR THE BEST MALE PLAYBACK SINGER

UNNIKRISHNAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Male Playback Singer : **UNNIKRISHNAN**

Citation

The Award for the Best Male Playback Singer of 1994 is given to **UNNIKRISHNAN** for his range and masterly rendition of the songs of two Tamil Films **PAVITHRA** and **KAADHALAN,** demonstrating a rare professionalism and command over technique.

पी. उन्नीकृष्णन ने 12 वर्ष की आयु से ही संगीत शिक्षा आरंभ की। उन्होंने परसोनल मैनेजमेंट में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा भी किया है। वे आकाशवाणी में ग्रेड 'ए' के कलाकार हैं तथा उनके गाने नियमित रूप से सुनवाए जाते हैं। उन्हें 1988 में सर्वोत्तम जूनियर गायक का पुरस्कार मिला एवं उसके बाद उन्हें कई और पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। वे सी. एम. ए. एन. ए. के सौजन्य से अमेरिका में अपने गाएकी के फन को प्रस्तुत कर चुके हैं।

P. Unnikrishnan a Post Graduate Diploma holder in Personnel Management, started learning music at the age of 12. He is a grade 'A' artist of All India Radio and has been performing regularly. Starting with the 'Best Junior Vocalist' award in 1988, he has since won many awards. Early this year he completed a 2½ months tour of the U.S under the sponsorship of CMANA.

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका पुरस्कार

स्वर्णलता

पार्श्व गायिका : **स्वर्णलता** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका का 1994 का पुरस्कार **स्वर्णलता** को कारुथम्मा के पोराले पोन्नुथायी गाने में अत्यधिक संवेदनशील/भावपूर्ण गायन के लिए प्रदान किया गया है जिसमें तमिल फिल्म **कारुथम्मा** में निर्णायक प्रभावशाली नाटक बनाने के लिए छायांकित किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEMALE PLAYBACK SINGER

SORNALATHA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Female Playback Singer : **SORNALATHA**

Citation

The Award for the Best Female Playback Singer of 1994 is given, to **SORNALATHA** for her extraordinarily compassionate song **PORALE PONNUTHAYI** upon which much of the crucial dramatic action in the Tamil Film **KARUTHAMMA** is enacted.

स्वर्णलता का जन्म शिमोगा, कर्नाटक में 1973 में हुआ। उन्होंने 1987 में **नीकीक्कर धान्डनाई** फिल्म से अपने पार्श्व गायिका के जीवन की शुरुआत की। उन्हें 1991 में तमिल नाडु सरकार का राज्य पुरस्कार तथा 1994 में 'कलइमामणि' की उपाधि से पुरस्कृत किया गया।

Sornalatha was born in 1973 in Shimoga, Karnataka. She was introduced in play back singing in **Neehikker Dhandanai** film in 1987. She has been the recipient of the Tamil Nadu Government state award in 1991 and honoured with 'Kalaimamani' title in 1994.

सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार

के. वी. आनन्द

कैमरामैन : **के. वी. आनन्द** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार
फिल्म को प्रोसेसिंग करने वाली प्रयोगशाला : **जेमिनी कॅलर लैब, मद्रास** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम छायांकन का 1994 का पुरस्कार **के. वी. आनन्द** का मलयालम फिल्म **थेन्माविन कोमबाथ** में सदभावपूर्ण कल्पना और रुपांतरण से निष्पादित विशिष्ट छायांकन का परिचय देने के लिए प्रदान किया गया है। कैमरे की धारा-प्रवाह गतिशीलता, प्रशंसनीय संयोजन और लाइट का प्रयोग ही इस प्रत्यक्ष अनुभव की विशेषताएं हैं।

AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHY

K.V. ANAND

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Cameraman : **K.V. ANAND**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the laboratory processing the film : **GEMINI COLOUR LAB, MADRAS.**

Citation

The Award for the Best Cinematography of 1994 is given to **K.V. ANAND** for the Malayalam Film **THENMAVIN KOMBATH** in recognition of the outstanding cinematography executed with sincerity, imagination and flexibility. Fluid camera movements, praise compositions, and use of light are the highlights of this visual experience.

के. वी. आनन्द का जन्म 1966 में हुआ तथा उन्होंने विशुअल कम्युनिकेशन में पोस्ट ग्रेजुएशन भी किया। वे चार वर्ष तक प्रेस फोटोग्राफर रहने के बाद सिनेमाटोग्राफर पी. सी. श्रीराम के सहायक बन गए। उसके पश्चात् आनन्द ने कई टी. वी. सीरीयल और विज्ञापनों में काम किया। उनके सिनेमाटोग्राफ की हुई फिल्मों में कुछ हैं— **थेमाविन कोमबात, मिन्नाराम, पुन्य देशम ना भूमि,** आदि। उन्हें 1994 का मलयालम फिल्मों के सर्वोत्तम सिनेमाटोग्राफर पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

K.V. Anand born in 1966, did his Post Graduate Course in Visual Communiciations. After having worked for four years as Press Photographer he had the opportunity to work under cinematographer P.C. Sriram. Independently he has cinematographed a number of TV serials and advertisement films other than a few feature films like **Themavin Kombattu, Minnaram** and **Punya Desham Na Bhumi**. K.V. Anand has received the Best Cinematographer award for 1994 Malayalam films.

सर्वोत्तम पटकथा पुरस्कार

एम.टी. वासुदेवन नायर

पटकथा लेखक : **एम.टी. वासुदेवन नायर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पटकथा का 1994 का पुरस्कार **एम. टी. वासुदेवन नायर** को मलयालम फिल्म **परिनयम** में सिनेमा के कौशलपूर्ण प्रयोग, संवेदनशील पात्रों की रचना के माध्यम से 1940 पूर्व केरल की छवि प्रस्तुत करने के लिए, संतुलित विशिष्ट संवादों के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST SCREENPLAY

M.T. VASUDEVAN NAIR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Screenplay Writer : **M.T. VASUDEVAN NAIR**

Citation

The Award for the Best Screeplay of 1994 is given to **M.T. VASUDEVAN NAIR** for his masterly use of fiction in cinema, reconstructing pre-1940s Kerala through sharply defined characters and remarkable control over dialogue in the Malayalam film **PARINAYAM.**

एम. टी. वासुदेवन नायर ने अपना कार्यकाल एक लघु कहानीकार के रूप में आरंभ किया। उन्होंने 31 किताबें लिखी हैं जिनमें से कई का विभिन्न भाषाओं में रूपांतर किया गया है। उन्हें साहित्य में कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं जिनमें प्रमुख है साहित्य अकादमी पुरस्कार।

उन्होंने केरेला की फिल्मों से 1966 में। एक पटकथाकार के रूप में संबंध जोड़ा। उनकी कहानी तथा पटकथा पर कई फिल्में बनी हैं जैसे **इरूटीन्डे अतमावु, निर्मलयल, बन्दनम्, अप्पोल, अरूधम, पंचाग्नी, नक्खाक्षटंगल, रितुबेदम्, वैशाली, ओरू वादाक्कन वीरगाथा** आदि। उन्हें 1989-1992 तक लगातार सर्वोत्तम पटकथा का पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

M.T. Vasudevan Nair started his career as a short story writer. He is the author of 31 books and his works have also been translated widely. He is the recipient of several literary honours including the Sahitya Akademy Award.

Vasudevan started associating with Kerala's film scene in '66 as a screen play writer. Many of the films based on his stories and screenplays like **Irutinde Atmavu, Nirmalyal, Bandanam, Oppol, Aroodham, Panchagni, Nakhaksha-tangal, Rithubedham, Vaisali, Oru Vadakkan Veeragatha,** etc. have won National recognition. He has won the National Award for Screenplay for years 1989-1992.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार

ए. एस. लक्ष्मी नारायणन एवं वी. एस. मूर्ति

ध्वनि आलेखक : **ए. एस. लक्ष्मी नारायण** और **वी. एस. मूर्ति** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का 1994 का पुरस्कार **ए. एस. लक्ष्मी नारायनन** एवं **वी. एस. मूर्ति** को तमिल फिल्म **कादलन** में विभिन्न ट्रैकों के असंख्य प्रभावों को मिलाकर और संगीत और ध्वनि के अनोखे तकनीकी नियंत्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHY

A. S. LAKSHMI NARAYANAN & V.S. MURTHY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Audiographers : **A. S. LAKSHMI NARAYANAN & V.S. MURTHY**

Citation

The Award for the Best Audiography of 1994 is given to **A. S. LAKSHMI NARAYANAN** and **V. S. MURTHY** for combining numerous effects in multiple tracks and an often dazzling arroy of music, sound and dialogue with remarkable technical control in the Tamil Film **KAADHALAN.**

ए. एस. लक्ष्मीनारायनन मद्रास फिल्म संस्था के साउन्ड इन्जीनियर तथा साउन्ड रेकॉर्डिंग के स्नातक हैं। उन्होंने साउन्ड संबंधी एक छः महीने का न्यूयॉर्क से ट्रेनिंग भी किया है। 1981 से वे सुजाता रेकॉर्डिंग डिविशन, मद्रास में वी.एस. मूर्ती के साथ साउन्ड रेकॉर्डिस्ट का काम कर रहे हैं। उन्होंने भारतन्, अरविन्दन्, मनिरत्नम् तथा भारतीराजा जैसे प्रसिद्ध फिल्म निर्देशकों के साथ काम किया है।

A. S. Lakshminarayanan, a graduate from Madras Film Institute in Sound Recording and Engineering underwent a six months training course in New York. Since 1981, he is working in Sujatha Recording Division (Madras) as a Sound Recordist doing all post production work, along with V.S. Murthy as an associate. He has had the opportunity to work with film directors like Bharathan, Aravindan, Manirathnam, Bharathi Raja etc.

वी. एस. मूर्ती मद्रास फिल्म संस्था के साउन्ड इन्जीनियर तथा साउन्ड रेकॉर्डिंग के स्नातक हैं। उन्होंने 1967 से 1979 तक रामानाथन तथा वी. पांडूरंगन के साथ काम किया। इस दौरान उन्होंने कन्नड़, तेलेगु तथा तमिल फिल्मों में जी.के. वेंकटेश, राजन नागेन्द्र तथा इलिया राजा की देख-रेख में काम किया। उसके पश्चात् 1980 में वे सुजाता इन्टरनैशनल के साथ युक्त हो गए।

V. S. Murthy after having graduated from Madras Film Institute in Sound Engineering and Sound Recording, worked as an associate with Ramanathan and V. Pandurengan from 1967 to 1979. During this period he also worked for many Kannada, Telugu and Tamil films under the able guidance of G.K. Venkatesh, Rajan Nagendra and Iliya Raja. Later in 1980 he joined Sujatha International.

सर्वोत्तम संपादन पुरस्कार

बी. लेनिन एवं वी.टी. विजयन

संपादक : **बी. लेनिन** और **वी.टी. विजयन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम संपादन का 1994 का पुरस्कार **बी. लेनिन** एवं **वी.टी. विजयन** को तमिल फिल्म **कादलन** में चमत्कारिक रूप से भाषा-संपादक कर उसे विस्मयकारी ढंग से यथेष्ट समय से तैयार करने, अविश्वासनीय घटनाओं को विश्वासनीय बनाने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST EDITING

B. LENIN & V.T. VIJAYAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Editors. **B. LENIN & V.T. VIJAYAN**

Citation

The Award for the Best Editing of 1994 is given to **B. LENIN & V.T. VIJAYAN** for the sheer magic of an editing idiom, cut to perfect timing even at a breath taking pace, in sequences that often make the implausible a plausibility in the Tamil Film **KAADHALAN.**

बी. लेनिन एक पेशेवर फिल्म संपादक तथा निर्देशक हैं। उन्होंने 1988 से कई पुरस्कार प्राप्त किए जिसमें **नक आउट** लघु फिल्म के लिए सर्वोत्तम निर्देशक पुरस्कार भी शामिल है। उनकी कुछ चर्चित फिल्में हैं — **मूनम पक्कम, अमरम, सोबनम,** आदि मलयालम में; **नायकन, अंजली** तमिल में; तेलेगु में **गीतांजली,** तथा टेली फिल्म **कादवु।**

बी. लेनिन ने एम. टी. वासुदेवन नायर, पद्मराजन, प्रताप पोथेन जैसे प्रसिद्ध निर्देशकों की फिल्मों का संपादन किया है। वे फिल्म टैक्नोलॉजी संस्था, मद्रास से भी जुड़े हैं।

B. Lenin is professionally a film editor and also a Director. He has received a number of awards since 1988 including the National Award for the Best Director for short film Knock - out. A few of his award winning films are **Moonam Pakkam, Amaram, Sobanam,** etc in Malayalam, **Nayakan, Anjali** etc. in Tamil, **Geethanjali** in Telugu and a telefilm **Kadavu.**

Lenin has had the opportunity to work with and edit films of reputed directors like M.T. Vasudevan Nair, Padmarajan and Pratap Pothen. He has also been actively associated with the Institute of Film Technology, Madras.

वी. टी. विजयन पिछले 20 सालों से बी. लेनिन के साथ संपादन कर रहे हैं तथा उन्हें तमिलनाडू और केरल के कई पुरस्कार भी मिले हैं। उन्होंने **अग्नि नाटचथिरम** (मनिरत्नम), **लीवालाप्पेरी** (प्रताप पोथेन), **जेन्टलमैन, कादलन** (शंकर) आदि फिल्मों का संपादन किया है।

V.T. Vijayan has had the experience of working as an editor under the renowned B. Lenin for two decades. He is the recipient of many Tamil Nadu and Kerala State Awards. Among the renowned films edited by him are Manirathnam's **Agni Natchathiram,** Pratap Pothen's **Leevalapperi Pandi,** Shankar's **Gentleman, Kadlan** etc.

सर्वोत्तम कला निर्देशन पुरस्कार

साबू सिरिल

कला निर्देशक : **साबू सिरिल** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कला निर्देशन का 1994 का पुरकार **साबू सिरिल** को मलयालम फिल्म **थेन्माविन कोम्बाथ** में छायांकन सहित सिनेमास्कोप में अनुबद्ध छायांकित रुमानी स्वप्न के लिए उपयुक्त वातावरण प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ART DIRECTION

SABU CYRIL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Art Director : **SABU CYRIL**

Citation

The Award for the Best Art Direction of 1994 is given to **SABU CYRIL** for his work in the Malayalam Film **THENMAVIN KOMBATH** for creating an appropriate space for a romantic fantasy in cinemascope in tandem with the cinematography.

साबू सिरिल विज़ुअल कम्युनिकेशन, मद्रास के स्नातक है और एक ग्राफिक डिसाइनर रह चुके हैं। साथ ही वे फिल्मों में विशेष प्रभाव भी देने लगे। 1988 से वे विज्ञापन तथा फिल्मों में कला निर्देशन करने लगे। उन्होंने अब तक कोई 40 विज्ञापन तथा 30 विभन्न भारतीय भाषाओं जैसे हिन्दी, मलयालम, तमिल, तेलेगु, कन्नड़ आदि के फिल्मों में कला निर्देशन किया है। उन्हें सर्वोत्तम कला निर्देशक के साथ-साथ कई और पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है।

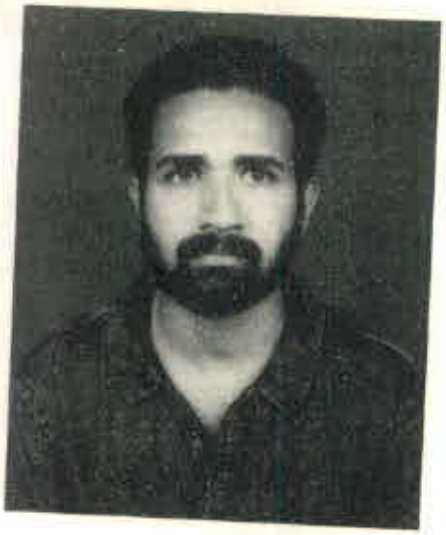

Sabu Cyril graduate in visual communication design from Madras University initially worked as a freelance graphic designer. Simultaneously, he worked on special effects for Videos and Motion pictures. In 1988, he started working as an Art Director for Ad films and feature films. Till date, he has done about 40 Ad films and 30 feature films in various languages like Hindi, Malayalam, Tamil, Telugu and Kannada. Cyril has received the Filmfare Award for the Best Art Director in 1993 alongwith other State Awards.

सर्वोत्तम वेशभूषाकार पुरस्कार

सुप्रिया दासगुप्ता

वेशभूषाकार : **सुप्रिया दासगुप्ता** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम वेशभूषाकार का 1994 का पुरस्कार **सुप्रिया दासगुप्ता** को बंगला फिल्म **आमोदिनी** में 18 वीं शताब्दी के वेशभूषा को सुरुचिपूर्ण ढंग से पुन: तैयार करके बंगला चित्रकारी और संघ की परम्पराओं को जागृत करने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST COSTUME DESIGNER

SUPRIYA DASGUPTA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Costume Designer : **SUPRIYA DASGUPTA**

Citation

The Award for the Best Costume Designer of 1994 is given to **SUPRIYA DASGUPTA** for her work in the Bengali Film **AMODINI** for an aesthetic recreation of 18th century costumes, evoking the traditions of Bengali painting and theatre.

सुप्रिया दास गुप्ता कलकत्ता विश्वविद्यालय की स्नातक हैं। वे कुछ वर्ष तक फेडरेशन ऑफ फिल्म सोसाइटीस ऑफइंडिया, कलकत्ता की संपर्क सचिव रह चुकी हैं तथा उन्होंने विभिन्न विदेशी फिल्मों का फिल्म सोसाइटी द्वारा चित्रण के लिए चयन भी किया है। सुप्रिया दास गुप्ता कलकत्ता फिल्म सोसाइटी की संस्थापक सदस्या भी हैं। उन्होंने तान्तीवी प्रेस, लंदन के लिए भारतीय फिल्मोग्राफी पर एक संकलन भी किया है। सुप्रिया एक लघु कहानी लेखक और अनुवादिका है तथा उन्होंने बंगला कथाचित्र **बिलेत-फेरोत** के रंग सज्जा की अभिकल्पना भी की है।

Supriya Das Gupta is a graduate of the Calcutta University. She was for some years liaison Secretary of the Federation of Film Societies of India at Calcutta and selected films from various foreign missions for shows at film societies, besides being a founder - member of the Calcutta Film Society. She has also compiled Indian filmography for the Tantivy Press, London. Supriya is a short story writer and translator. She designed the decor for the Bengali film **Bilet-Pherat.**

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन पुरस्कार

रवि (बम्बई) एवं जॉन्सन

संगीत निर्देशक: **रवि (बम्बई) एवं जॉन्सन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का 1994 का पुरस्कार **रवि** (बम्बई) को मलयालम कथाचित्र **सुकृतम्** और **परिनयम** को मधुर धुनों से संवारने और जॉन्सन को **सुकृतम्** में पार्श्व संगीत देने के लिए दिया गया है। इन दोनों फिल्में में संगीत की मौलिकता और सम्पूर्ण भावों की विशेषताओं को नए रूप में प्रस्तुत किया गया है।

AWARD FOR THE BEST MUSIC DIRECTION

RAVI (BOMBAY) and JOHNSON

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Music Directors : **RAVI** (Bombay) and **JOHNSON**

Citation

The Award for the Best Music Director of 1994 is given to **RAVI** (Bombay) for his melodious rendering of his tunes in the Malayalam Films **SUKRUTHAM** and **PARINAYAM** and **JOHNSON** for scoring the background Music in **SUKRUTHAM.** The music in both of these films exhibit originality and creatively highlights the entire mood of the two films, achieving musical harmony.

रवि (बम्बई) का पूरा नाम रवि शंकर शर्मा है। उन्होंने 1948 में दिल्ली आकशवाणी से गायन आरंभ किया। 1950 में वे पार्श्व गायक बनने बम्बई पहुँचे। उन्होंने संगीत निर्देशन में हेमन्त कुमार का सहयोग किया। उनकी अपनी प्रथम फिल्म थी **वचन** जिसके पश्चात् अब तक वे करीब 200 फिल्मों में संगीत निर्देशन कर चुके हैं जिनमें हिन्दी, उर्दू, पंजाबी, कन्नड़, तेलेगु, भाषाएं प्रमुख हैं।
रवि को 1961 से कई पुरस्कार मिल चुके हैं तथा 1971 में उन्हें भारत सरकार ने पद्मश्री पुरस्कार से भी सम्मानित किया।

Ravi (Bombay) was originally named Ravi Shankar Sharma. He began singing from All India Radio, Delhi in 1948. In 1950, he come to Bombay to become a playback singer. Initially he worked as an assistant to Hemant Kumar. His first film as a Music Director was **Vachan**. Till date Ravi has composed music for about 200 films in various languages like Hindi, Urdu, Punjabi, Kannada, Telugu, etc. Ravi received the 'Padamshri' award in the year 1971. Since 1961 he has received many filmfare and other awards.

जॉनसन ने अब तक 200 से ऊपर फिल्मों में संगीत निर्देशन किया है। उन्होंने संगीत निर्देशन का कार्य **प्रेमागीतम** फिल्म से आरंभ किया थी। उनके सौजन्य से कई पार्श्व गायक-गायिकाओं को पुरस्कार प्राप्त हुए। उन्हें भी मलयालम में सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का राज्य पुरस्कार मिला है।

Johnson has scored music for more than 200 films till now. He made his debut with **Premageetham**. He has been instrumental for several singers to get State Awards for playback singing. He has also received the State Award for Best Music Director in Malayalam.

सर्वोत्तम गीत पुरस्कार

वैरामुथु

गीतकार : **वैरामुथु** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम गीतकार का 1994 का पुरस्कार **वैरामुथु** को तमिल फिल्म **कारुथम्मा** में उनके गीत **पोराले पोन्नुथायी** और तमिल फिल्म **पवित्र** में **उडलम नीये, उरियम नीये** के लिए प्रदान किया गया है। अपने गीतों के माध्यम से वे गीतमय भावों को अपने भरपूर खजाने से प्रस्तुत करने में सफल हुए हैं जो फिल्म के भावों को अत्याधिक संवेदनशीलता से आगे बढ़ाता है।

AWARD FOR THE BEST LYRICS

VAIRAMUTHU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Lyricist : **VAIRAMUTHU**

Citation

The Award for the Best Lyrics of 1994 is given to **VAIRAMUTHU** for his lyrics **PORALE PONNUTHAYI** in the Tamil Film **KARUTHAMMA** and **UDALUM NEEYE, URIYUM NEEYE** in the Tamil Film **PAVITHRA.** Through their lyrics he is able to bring to the fore his rich repertory of poetic expression which sensitively enhances the mood of the films.

वैरामुथु को बचपन से ही कविताओं का शौक था। सुब्रमनियम भारती तथा भारतीदासन से प्रेरणा प्राप्त कर वैरामुथु की अब तक 24 किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनके प्रभावशाली लेखन एवं कविताओं के लिए उन्हें कई पुरस्कार भी मिले हैं। भारतीराजा ने पहली बार उन्हें तमिल फिल्मों में 1980 में काम करने का अवसर दिया। 1985 में वैरामुथु को सर्वोत्तम गीतकार का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। तमिल वलार्ची मंड्रम ने उन्हें '**काव्यरसु**' (कवियों के राजा) की उपाधि से नवाजा। अब तक वे 3000 से ऊपर गीत लिख चुके हैं।

Vairamuthu had the love for poetry from a very tender age. Inspired by Shri Subramaniam Bharathi and Bharathidasan he has till date published 24 books on innumerable essays, novels and short stories. His commendable and virile prose styles and good incandescent peotry have earned him many awards. Bharathiraja introduced Vairamuthu to Tamil Film in 1980. In 1985 he was conferred the National Award for Best Lyrics. He was also conferred the title **'Kaviyarasu'** (King of poets) by the Tamil Valarchi Mandram, Madras. So far he has composed 3000 lyrics.

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

(स्व) राधु कर्मकार एवं शाजी एन. करुण

(स्व) राधु कर्मकार (परम वीर चक्र) एवं **शाजी एन. करुण** (स्वहम्) को रजत कमल तथा 25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

निर्णायक मंडल का 1994 का विशेष पुरस्कार कैमरामैन **(स्व) राधु कर्मकार** को हिन्दी फिल्म **परमवीर चक्र** को और भारतीय फिल्म इतिहास के सबसे अधिक स्मरणीय क्षणों की रचना करने में जीवनकाल उपलब्धि की सराहना और निर्देशक **शाजी एन. करुण** को मलयालम फिल्म **स्वहम** में भारतीय सिनेमा के एक अत्याधिक विशिष्ट निर्देशक को प्रदान किया गया है, जो परिवार में रिक्त को संवेदनशीलता से भरने की कोशिश करते हैं जबकि उसके पूरक पात्र की मृत्यु हो जाती है।

SPECIAL JURY AWARD

(LATE) RADHU KARMAKAR and SHAJI N. KARUN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to : (Late) **RADHU KARMAKAR** (for **PARAM VIR CHAKRA**) and **SHAJI N. KARUN** (for **SWAHAM**)

Citation

The Special Jury Award of 1994 is given to the Cameraman (Late) **RADHU KARMAKAR** in the Hindi Film **PARAM VIR CHAKRA,** and in appreciation of a lifetime achievement in creating some of the most memorable moments in Indian film history and to the Director **SHAJI N. KARUN** in the Malyalam Film **SWAHAM** for one of the most outstanding directors of Indian Cinema, for sensitively probing the vaccuum created in a family, when its central pivot is lost in death.

(स्व) **राधु कर्मकार** एक मशहूर कैमरामैन थे जिन्होंने राज कपूर की **आवरा** से लेकर सभी फिल्मों में काम किया।

(Late) Shri Radhu Karmakar was a legendary camerman who had worked with Mr. Raj Kapoor in all of his films since **Awara**.

शाजी एन. करून फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान, पुणे के स्नातक हैं। उन्हें निर्देशन और पटकथा लेखन के लिए कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हैं जिनमें सर चार्ली चैपलिन ईस्टमैन कोडैक पुरस्कार और अपनी पहली फिल्म **पिरवी** के निर्देशन के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार भी शामिल हैं।

Shaji N. Karun is a graduate from Film and Television Institute of India. As a cinematographer and Director, he has won several State, National and International Awards including Sir Charlie Chaplin Eastman Kodak Award and the National Best Director for his first debut film **Piravi**.

सर्वोत्तम विशेष प्रभाव पुरस्कार

सी. मुरुगेश एवं एस. टी. वेंकी

प्रभाव सृजक: **सी. मुरुगेश एवं एस. टी. वेंकी** को रजत कमल तथा 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम विशेष प्रभाव का 1994 का पुरस्कार **सी. मुरुगेश** और **एस. टी. वेंकी** को तमिल फिल्म **कादलन** के लिए नए रूप में रचित बहुत सी दर्शनीय घटनाओं को प्रदर्शित करने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST SPECIAL EFFECTS

C. MURUGESH & S.T. VENKI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Creators : **C. MURUGESH & S.T.VENKI**

Citation

The Award for the Best Special Effects of 1994 is given to **C. MURUGESH & S.T.VENKI** in recognition of the many spectacular sequences creatively engineered for the Tamil Film **KAADHALAN.**

सी. मुरूगेश मद्रास में रहते हैं और उन्होंने 600 से अधिक फिल्मों में विशेष प्रभाव दिए हैं जो मलयालम, तमिल तथा तेलेगु भाषाओं में बनी हैं।

C. Murugesh is based in Madras and has more than 600 films to his credit. They include films in Malayalam, Tamil and Telugu languages.

एस. टी. वेन्की मद्रास से कला के पोस्ट ग्रेजुएट हैं तथा वे 10 साल से एनिमेशन, ऑप्टिकल और कमप्यूटर ग्राफिक्स का काम कर रहे हैं। इन दिनों वे फिल्मों में विशेष प्रभाव देते हैं। उनको कुछ फिल्में हैं— **अंजली, जेन्टलमैन, भैरवा, द्वीपम,** आदि।

S.T. Venki did his Post Graduation in Fine Arts from Madras. He has 10 years of experience in Animation, Optical and Computer graphics and is presently occupied in Special Visual Effects. A few films for which he has executed Special Effects are **Anjali, Gentleman, Bhairava Dweepam** etc.

सर्वोत्तम नृत्य संयोजन पुरस्कार

जय बोराडे

नृत्य संयोजक : **जय बोराडे** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम नृत्य संयोजन का 1994 का पुरस्कार **जय बोराडे** को हिन्दी फिल्म **हम आपके हैं कौन** में शालीन और भावपूर्ण मोहक नृत्यकला समकालीन और भारतीय संस्कृति की प्रथाओं को निभाने में परम्परानुकूल होने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST CHOREOGRAPHY

JAY BORADE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Choreographer : **JAY BORADE**

Citation

The Award for the Best Choreographer of 1994 is given to **JAY BORADE** for his work in the Hindi Film **HUM AAPKE HAIN KOUN** for a graceful and aesthetically pleasing choreography, contemporary and yet traditional in its adherences to Indian cultural practices.

जय बोराड़े ने अपने 58 वर्ष की आयु में 13 वर्ष भारतीय नौसेना में टेलीग्राफिस्ट का काम किया और 1962 की गोआ ऑपरेशन में पदक भी प्राप्त किया। 1970 में उन्होंने फिल्मों में प्रवेश किया और (स्व) सूर्य कुमार जी, (स्व) कमल जी और विजय के सहायक बनकर नृत्य संयोजक में महारत हासिल की। अब वे एक माने हुए नृत्य संयोजक हैं और उनकी प्रसिद्ध फिल्मों में **लव इन गोआ, मैंने प्यार किया** आदि शामिल हैं।

Jay Borade 58 years old, has served the Indian Army as a leading Telegraphist for 13 years since 1952 and also earned a war medal in Goa Operation in 1962. He joined the Indian Motion Pictures in 1970. Having the privilege of working as an assistant to top dance directors like Late Shri Surya Kumar, Late Shri Kamalji and Vijay for more than a decade, Jay Borade is now one of the leading choreographers in the country today. He has choreographed in films like **Love in Goa, Maine Pyar Kiya** and many others.

सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र पुरस्कार

हागोरोलोई बोहू दूर

निर्माता: **शैलाधर बरुआ एवं जाहू बरुआ** को रजत कमल तथा 20,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **जाहू बरुआ** को रजत कमल तथा 10,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र का 1994 का पुरस्कार असमिया फिल्म **हागोरोलोई बहु दूर** को फिल्म निर्माता की योग्यता के लिए प्रदान किया गया है जिसमें उन्होंने छोटे पर्दे पर जटिल कथानक को प्रेरक, संयमित और अत्यधिक संवेदनशील पात्रों के माध्यम से बखूबी प्रस्तुत किया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN ASSAMESE

HKHAGOROLOI BOHU DOOR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producers : **SAILADHAR BAROOAH & JAHNU BARUA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **JAHNU BARUA**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Assamese of 1994 is given to **HK HAGOROLOI BOHU DOOR** for the filmmaker's ability to tell a complex tale with a minimal canvas, handling the medium with control, restraint and extraordinary sensitivity.

शैलाधर बरूआ एक सामाजिक कार्यकर्ता, खेल प्रेमी होने के साथ ही भवन निर्माण क्षेत्र के व्यापारी भी हैं। उन्होंने जाह्नु बरूआ के साथ मिलकर **पापोरी, हलोधिया चोराए बाओधन खाई** तथा **फिरिंगोती** जैसी फिल्मों का निर्माण किया। उनकी सभी फिल्मों को कोई न कोई पुरस्कार अवश्य मिले हैं। **हलोधिया चोराए बाओधन खाई** को स्वर्ण कमल के साथ ही कई अंतर्राष्ट्रीय पदक भी प्राप्त हुए हैं।

Sailadhar Barooah a construction business man has been a constant promoter of Arts, Culture and sports in Assam. He and Jahnu Barua have together so far produced four feature films including **Papori, Halodhia Choraye Baodhan Khai** and **Firingoti**. All of their films apart from having figured in National Awards and Indian Panorama, have been internationally acclaimed. **Halodhia Choraye Baodhan Khai,** a winner of Swarna Kamal, has also won many international awards and recognitions.

जाह्नु बरुआ फिल्म एवं टेलीविजन संस्था के स्नातक हैं। उनकी प्रथम कथाचित्र **अपरूपा** (असमिया) को 1983 का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ था। **पापोरी** और **हलोधिआ चोराए बाओधन खाई** भी सराहनीय थी। **हालोधिआ चोराए बाओधन खाई** को 1988 के राष्ट्रीय फिल्म समारोह में स्वर्ण कमल तथा लोकार्नो अंतराष्ट्रीय फिल्म समारोह में रजत पदक प्राप्त हुआ था। 1989 में टोकियो फिल्म समारोह में इस फिल्म को सर्वोत्तम एशियाई फिल्मों में दर्शाया गया था। 1990 में जाह्नु ने **बनानी** और उसके बाद **फिरिंगोती** बनाई। **फिरिंगोती** को 1992 में रजत कमल मिला। फिल्मों से पहले वे भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन में काम करते थे। वे आजकल ज़ेवियर इनस्टिट्यूट ऑफ कम्यूनिकेशन, बम्बई में सिनेमा विषय को पढ़ाते भी हैं।

Jahnu Barua is a graduate in Film Direction from Film and Television Institute of India. His first feature has been **Aparoopa** film which won the National Award in 1983. His other film include **Papori** and **Halodhia Choraye Baodhan Khai** (The Catastrophe). The latter won him the Swarna Kamal at the National Film Festival, 1988 and Silver Leopard at the Locarno International Film Festival, 1988. It was also in the Best of Asia Section of the Tokyo International Film Festival, 1989. He has also made **Banani** (The Forest) in 1990. Then he made **Firingoti** (The Spark) which has also won him the Rajat Kamal at the National Film Festival, 1992. Before making feature films, Jahun Barua worked in the Indian Space Research Organisation (ISRO) making educational programmes for Satellite Television. He also teaches Cinema at the Xavier Institute of Communciations, Bombay.

सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र पुरस्कार

अमोदिनी

निर्माता : **एन. एफ. डी. सी.** एवं **दूरदर्शन** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **चिदानन्द दास गुप्ता** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र का 1994 का पुरस्कार **आमोदिनी** को 18वीं शताब्दी में बंगला के क्रांतिकालीन जटिल सामाजिक संबंधों के चित्रण, कैमरे की गतिविधियों दृश्य-सज्जा सहित अभिनय कौशल प्रस्तुत करने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN BENGALI

AMODINI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producers : **N.F.D.C.** and **DOORDARSHAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **CHIDANANDA DASGUPTA**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Bengali of 1994 is given to **AMODINI** for a stylised and innovative period rendition of complex social relations in 18th century Bengal, integrating performance with camera movements and mise en scene.

चिदानन्द दासगुप्ता सिनेमा, साहित्य और सामाजिक विषयों के माने हुए लेखक हैं। उन्होंने 1974 में कलकत्ता फिल्म सोसाइटी की स्थापना की थी और उससे पहले 1960 में सत्यजीत रे से साथ फेडरेशन ऑफ फिल्म सोसाइटी की स्थापना की थी।

उन्होंने अपना जीवन 1945 में अंग्रेजी के अध्यापक से आरंभ किया था और 50 साल के कई नए कारनामों के बाद अंत में टेलिग्राफ अखबार के कला संपादक बने। उन्होंने कई गैर-कथाचित्र और दो कथाचित्रों का निर्देशन किया तथा विभिन्न अखबारों एवं पत्रिकाओं में 2000 से अधिक लेख लिखे। वे अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेडरेशन के सदस्य है तथा उसी के भारतीय अंक के अध्यक्ष हैं।

चिदानन्द दासगुप्ता 1987 के सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।

Chidananda Das Gupta who has been writing on Cinema, literature and social issues since the midforties had founded the Calcutta Film Society in 1974 and also the Federation of Film Societies in 1960 with Satyajit Ray.

Starting his career as a Lecturer in English, in 1945 he finally became the Arts Editor in the Telegraph, after having achieved many feats within about 50 years. He has made several documentaries and two full length feature films. Some 2000 articles of his have been published in newspapers, periodicals and academic journals in India and abroad.

He is the member of the International Federation of Film Critics and is the President of its Indian Chapter.

Chidananda Dasgupta was the recipient of the National Award for the Best Film Critic in 1987.

सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र पुरस्कार

मम्मो

निर्माता : **राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि.** एवं **दूरदर्शन** को रजत कमल तथा 20,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **श्याम बेनेगल** को रजत कमल तथा 10,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र का 1994 का पुरस्कार मम्मो को उस परिवार की मर्मस्पर्शी कहानी के लिए प्रदान किया गया है जिसमें विभाजन के बाद भारत में प्रवासी नागरिकों के मानसिक आघातों को दर्शाया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN HINDI

MAMMO

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producers : **N.F.D.C. & DOORDARSHAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **SHYAM BENEGAL**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Hindi of 1994 is given to **MAMMO** for a poignant narrative of a family set against the trauma of exiled peoples in past post partition India.

श्याम बेनेगल, जिन्हें भारत सरकार ने पद्मश्री तथा पद्म भूषण से सम्मानित किया, ने लगभग 20 कथाचित्र, कई गैर - कथाचित्र और कुछ टेलीविज़न धारावाहिकों का निर्माण किया है। विज्ञापन क्षेत्र में लम्बे समय के बाद, उन्होंने 1974 में अपनी पहली फिल्म **अंकुर** का निर्देशन किया। उनकी प्रसिद्ध फिल्मों में कुछ हैं **निशांत, मंथन, भूमिका, सत्यजीत रे, अंतरनाद,** आदि।

Shyam Benegal, the recipient of Padma Shri and Padma Bhusan, two of India's most prestigious award, has about 20 feature films in addition to television serials and documentaries to his credit. After pursuing a long career in advertising, his directorial debut came with the film **Ankur** in 1974. Among his renowned films are **Nishant, Manthan, Bhumika, Satyajit Ray, Antarnaad** etc.

सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र पुरस्कार

कोट्टेरेशी कानासु

निर्माता : **जी नन्दकुमार को** को रजत कमल तथा 20,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **नागाथीहल्ली चन्द्रशेखर** को रजत कमल तथा 10,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र का 1994 का पुरस्कार **कोट्टेरेशी कानासु** को कर्नाटक के देहातों में जातिवाद के कारण होने वाले अन्याय के प्रति संघर्षरत युवा हरिजन बालक की साधारण लेकिन प्रभावशाली कहानी के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN KANNADA

KOTTRESHI KANASU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer : **G. NANDAKUMAR**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **NAGATHIHALLI CHANDRA SHEKARA**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Kannada of 1994 is given to **KOTTRESHI KANASU** for a simple but effective tale of young harijan boy fighting caste injustice in rural Karnataka.

जी. नन्दकुमार ने अपनी जीविका एक सिविल कॉनट्रैक्टर के रूप में आरम्भ किया। बाद में वे ग्रनाइट के निर्यात एवं ज़मीन-जायदाद के व्यवसाय में जुट गए। उनकी सामाजिक कल्याण कार्यों में रूचि के साथ ही वे फिल्मों के सह-निर्माता भी बने। उनकी फिल्म **चिन्नारी मुथा** को 1993 में सर्वोत्तम प्रादेशिक फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। इस फिल्म को अंतर्राष्ट्रीय ख्याती भी प्राप्त हुई जिससे प्रभावित होकर नन्दकुमार ने **कोट्टरेशी कनासु** का निर्माण अकेले किया।

G. Nandakumar started his career as a civil contractor, later became a granite exporter and promoter of real estates. Other than having a niche for social work by encouraging and inspiring the poor, he entered the film world as a co-producer of **Chinnari Mutha** in 1993 which won the National Award for the Best Regional Film. The film has also been acclaimed internationally. Inspired by the success, he stepped up as an independent producer and made **Kottreshi Kanasu**.

नागाथीहल्ली चन्द्रशेकरा साहित्य के पोस्ट ग्रेजुएट होने के साथ कॉलेज के अध्यापक तथा कन्नड़ के लेखक भी हैं। उन्होंने 7 किताबे और बहुत सी लघु कहानियाँ लिखी हैं तथा वे फिल्मों के पटकथा लेखक, सम्वाद लेखक, गीतकार तथा निर्देशक भी हैं। उन्होंने पर्यावरण पर 3 लघु चित्र तथा दूरदर्शन के लिए कई कार्यक्रम बनाए हैं। उन्हें **सक्रांति** तथा **उन्दुहोदा कोन्दुहोदा** के लिए राज्य सरकार का सर्वोत्तम कहानी का पुरस्कार तथा **उद्भाव** के लिए सर्वोत्तम सम्वाद का फिल्मफेयर पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

Nagathihalli Chandrasekara, a post graduate in literature, is a college lecturer and a prolific writer in Kannada with 7 books and scores of short stories to his credit. His involvement in feature films cover screenplay, dialogues, lyrics and direction. He has directed 3 short films on environment and a number of TV programmes. He has received the State Award for Best Story for films **Sankranthi** and **Unduhoda Konduhoda**, and Filmfare Award for best dialogues for film **Udbhava**.

सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र पुरस्कार

सुकृतम्

निर्माता : **एम. एम. रामचन्द्रन** को रजत कमल तथा 20,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **हरिकुमार** को रजत कमल तथा 10,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र का 1994 का पुरस्कार **सुकृतम्** को दिया गया है। इसमें आसन्न मृत्यु, बेमेल-विवाह और सामाजिक संबंधों/कुरीतियों को पृष्ठभूमि में उभारा गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN MALAYALAM

SUKRUTHAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer : **M.M. RAMACHANDRAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **HARI KUMAR**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Malayalam of 1994 is given to **SUKRUTHAM.** Against the backdrop of impending death, complex marital and social relationships are explored.

एम. एम. रामचंद्रन ने कमर्शियल बैंक ऑफ कुवैत की नौकरी छोड़कर एटलस जुवेलरी ग्रुप की स्थापना की जिसके कुवैत, दुबई तथा न्यूयॉर्क में कई शोरूम हैं। रामाचंद्रन द्वारा निर्मित प्रथम कथाचित्र **वैशाली**, जिसका निर्देशन भारतन् ने किया था, को 1988 में कई पुरस्कार प्राप्त हुए। 1990 से रामाचंद्रन ने फिल्म वितरन का व्यवसाय आरंभ कर दिया है।

M.M. Ramachandran after leaving a banking career with Commercial Bank of Kuwait established the reputed Atlas Jewellery Group which has several show-rooms in Kuwait, Dubai, and New York. His maiden venture in films was 'Vaisali', directed by Bharathan which won many awards at state and national levels in 1988. He later started distribution of films in 1990.

हरिकुमार एक उभरते हुए निर्देशक हैं जिन्होंने मलयालम में 9 कथाचित्रों और कई गैर कथाचित्रों के निर्देशन किए हैं। **स्नेहपूर्वम् मीरा, जालाकम्, आयानम्** उनकी कुछ मानी हुई फिल्म हैं। हरिकुमार 1992 में राज्य फिल्म पुरस्कार मण्डल के सदस्य भी रह चुके हैं।

Harikumar the young talent of Malayalam film has to his credit 9 feature films and several documentries. A few of his notable films are **Snehapoorvam Meera, Jalakam, Ayanam** etc. He was the Jury member of the State Film Award Committee in 1992.

सर्वोत्तम मणिपुरी कथाचित्र पुरस्कार

मायोफी गी माचा

निर्माता : **थौयांगबा** एवं **थौंगाम्बा** को रजत कमल तथा 20,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **ओकेन आमाक्चम** को रजत कमल तथा 10,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मणिपुरी कथाचित्र का 1994 का पुरस्कार **मायोफी गी माचा** को मणिपुरी ग्रामीण जीवन-शैली के सरल कथानक के लिए प्रदान किया गया है जिसमें पात्रों का चित्रण नियंत्रित रुप से दक्षतापूर्ण किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN MANIPURI

MAYOPHY GEE MACHA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producers : **THOUYANGBA & THOUNGAMBA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **OKEN AMAKCHAM**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Manipuri of 1994 is given to **MAYOPHY GEE MACHA** as a simple story of rural life in Manipuri handled with a deft mastery over the medium.

थौयांगबा ने मणिपुर की प्रथम कथाचित्र **उरित नपांगबी** तथा उसके बाद **लाइधी लुबक** का निर्माण किया। निर्माता होने के साथ उन्होंने कई पुस्तकों का भी प्रकाशन किया है जिनमें साँप एवं कुत्ते के काटने पर घरेलू दवाइयों का विवरण है। उन्होंने पुरानी मेईतेई हस्तलिपि का उद्‌वाचन तथा प्रकाशन भी किया है।

Thouyangba is the first producer of Manipuri Video Feature Film **Urit Napangbi** followed by **Laidhi Lubak**. Other than a producer he has published books on indigenous treatment of snake-bite, dog-bite etc., deciphered and published ancient Meitei Scripture.

थौगंम्बा मणिपुरी कथाचित्र **उरित नपांगबी** के सह निर्माता होने के साथ ही उसके संगीत निर्देशक भी हैं। वे आकाशवाणी इम्फाल के परिचित गायक हैं तथा उनके गीतों की ऑडियो कैसेट भी बनी है। वे कई कथाचित्रों एवं विडियो फिल्मों के संगीत निर्देशक तथा पार्श्व गायक रह चुके हैं।

Thoungamba, the co-producer of the first Manipuri Video feature film **Urit Napangbi** was also the Music Director of the film. He is an approved artist of AIR Imphal and has produced an Audio Cassette. He has been the Music Director and also a playback singer in many Video and feature films.

ओकेन आमक्‌चेम गायन में संगीत विशारद है और कई नाटक एवं फिल्मों में निर्देशक, संगीत निर्देशक और मुख्य अभिनेता के रुप में काम कर चुके हैं। उनके द्वारा निर्देशित कथाचित्र **खोनथांग** 1993 के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में प्रदर्शित हुई तथा उसे इण्डियन पैनोरामा में भी शामिल किया गया। उन्होंने कई नाटक तथा विडियो रूप में 7 कथाचित्रों का निर्देशन किया है। उन्होंने 500 से अधिक मणिपुरी गानों का संगीत निर्देशन किया है।

Oken Amakcham, a Sangeet Visharad in vocal has worked in many theatre and film projects in the capacity of Director, Music Director, lead character etc. His directed feature film **Khonthang** was selected in the Indian Panorama and also participated in the International Film Festival of India in 1993. He has directed and produced many plays and also directed seven Manipuri feature films in video format. He has composed music for more than 500 Manipuri modern songs.

सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र पुरस्कार

नामावर

निर्माता : **बी. वेन्कटरामा रेड्डी** को रजत कमल तथा 20,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **के. एस. सेथुमाधवन** को रजत कमल तथा 10,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र का 1994 का पुरस्कार **नामावर** को कालेज प्राध्यापक की व्यावसायिक रुप से संजोई गई कहानी के लिए प्रदान किया गया है जो विद्यार्थियों के क्रोधावेश का सामना करता है । इस फिल्म की विशेषता है विभिन्न पात्रों का प्रभावशाली अभिनय ।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN TAMIL

NAMMAVAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer : **B. VENKATRAMA REDDY**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **K.S. SETHUMADHAVAN**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Tamil of 1994 is given to **NAMMAVAR** for a professionally assembled tale of a college professor who encounters student violence, marked by several impressive performances.

बी. वेंकटरामा रेड्डी कला के स्नातक है और पेशे से एक फिल्म निर्माता हैं। उनके द्वारा निर्मित फिल्मों में **बृंदावनम्, उज़ईपाल्रि, कारुपुवेल्लई** आदि सुपरिचित हैं।

B. Venkatrama Reddy an Arts Graduate, is by profession a Film Producer. He has produced a number of films like **Brindavanam, Uzhaippali, Karupuvellai** etc.

के. एस. सेथुमाधवन ने अब तक 60 फिल्मों का निर्देशन किया है जो विभिन्न भाषाओं में निर्मित हैं जैसे हिन्दी, मलयालम, तमिल, सिन्हाली, कन्नड़ तथा तेलेगु। उनकी फिल्म **मारूपक्कम** को 1991 में स्वर्ण कमल पुरस्कार प्राप्त हुआ था। इसके अलावा भी उन्हें कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। वे 1976 से 1980 तक राष्ट्रीय पुरस्कार के निर्णायक मण्डल के सदस्य थे तथा 1982 में केरेला राज्य फिल्म पुरस्कार समिति के अध्यक्ष थे।

K.S. Sethumadhavan has till date directed more than 60 pictures in various languages like Malayalam, Tamil, Sinhalese, Hindi, Kannada & Telugu. His film **Marupakkam** won the Swarna Kamal in 1991. Other than this, he is the recipient of a number of other awards. He was the member of the jury for National Awards in 1976 and 1980 and was also the Chairman of the Jury for Kerala State Film Awards Committee in 1982.

सर्वोत्तम अंग्रेजी कथाचित्र पुरस्कार

(संविधान की आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भाषाओं के अलावा प्रत्येक भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार)

इंगलिश अॅगस्ट

निर्माता : **अनुराधा पारिख** को रजत कमल तथा 20,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **देव बेनेगल** को रजत कमल तथा 10,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अंग्रेजी कथाचित्र का 1994 का पुरस्कार **इंगलिश अॅगस्ट** को सिनेमा कौशल और मूल कार्य का कुशलतापूर्वक मिलन करके जटिल और अत्याधिक प्रसिद्ध नॉवल का प्रयोग करने, भारतीय सिनेमा के समकालीन विशिष्ट अनुवाद के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN ENGLISH

(Best Feature Film in a language other than those specified in Schedule VIII of the Constitution)

ENGLISH AUGUST

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer : **ANURADHA PARIKH**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **DEV BENEGAL**

Citation

The Award for the Best Feature Film in English of 1994 is given to **ENGLISH AUGUST** for adapting a complex and highly applauded novel with a cinematic skill and mastery matching the original work, a translation unusual in contemporary Indian Cinema.

अनुराधा पारिख ने आर्किटेक्चर की शिक्षा रोड आइलैंड स्कूल ऑफ डिसाइन से प्राप्त की। उन्होंने कई प्रयोजनाओं में काम किया – वेद सेगान और एसोसिएट्स, चार्ल्स कोरया और एसोसिएट्स, विस्तारा तथा डिस्कवरी ऑफइण्डिया आदि। अनुराधा ने **अजूबा** फिल्म के शीर्षक का डिजाइन तथा **अनन्तपुरम्** के निर्माण का डिजाइन किया।

Anuradha Parikh, a practising architect, graduated from the Rhode Island School of Design. She has worked on projects with architects Ved Segan & Associates, Charles Correa & Associates, on Vistara — the Architecture of India and on the Discovery of India Project as Architectural Assistant. Her work for films include the main-title design for **Ajooba** and production design for a few films like **Anantapuram** etc.

देव बेनेगल ने कई साल श्याम बेनेगल के सहायक के रूप में काम मिया। इस दौरान उन्होंने कई कथाचित्र तथा सत्यजीत रे पर बनी 2 घंटे की एक गैर-कथाचित्र से अनुभव प्राप्त किया। उसके पश्चात् देव बेनेगल ने स्वतंत्र रूप से कई पुरस्कृत गैर-कथाचित्रों का निर्माण एवं निर्देशन किया है जिसमें **अनन्तपुरम्, कल्पवृक्ष, अभिवर्दन, फील्ड ऑफ शैडोज़** प्रमुख हैं।
इंगलिश अॅगस्ट देव बेनेगल की प्रथम कथाचित्र है।

Dev Benegal after working with the leading independent film-maker Shyam Benegal on his features and also a two hour long documentary on Satyajit Ray, has produced and directed a few award winning documentaries since 1985 like **Anantapuram, Kalpavriksha, Abhivardan, Field of Shadows** etc.
English August is Dev's first feature film.

विशेष उल्लेख

महेश (नामावर), बिष्णु खारगोरिया (हागोरोलोइ बोहु दूर) एवं एस. कुमार (परिनयम)

प्रशस्ति

विशेष उल्लेख का 1994 का पुरस्कार **महेश** (संगीत निर्देशक) को तमिल कथाचित्र **नामावर** को अपने मधुर संगीत से संजोकर, अभिन्न अंग के रुप में ध्वनि प्रभावों का प्रयोग करके असाधारण और नवीन संगीत के लिए दिया गया है; **बिष्णु खरगोरिया** (अभिनेता) को असमिया कथाचित्र **हागोरोलोइ बोहु दूर** में उस नाविक और उसके नाती के हृदय विदारक, यंत्रणापूर्ण संघर्ष का सजीव चित्रण करने मर्मस्पर्शी और स्मरणीय भूमिका के लिए दिया गया है जिसे न केवल उसके बेटे ने छोड़ दिया है बल्कि उसकी जीवन दायिनी नदी ने भी – जो कि उसकी आजीविका का केवल मात्र सहारा है और **एस कुमार** (कैमरा मैन) को मलयालम कथाचित्र **परिनयम** में परिवेश और पात्रों की रचना और सजीव प्रस्तुतीकरण के लिए दिया गया है जिससे दुरुह और जटिल दृश्यों के वास्तविक चित्रण में सहायता मिली है। संवेदनशीलता और कार्य कौशल का भरपूर परिचय मिलता है जिसमें कैमरे और लाइट का प्रयोग मौलिक कहानीकार के वस्तु-निर्देशों का चित्रण करने के लिए किया गया है।

SPECIAL MENTION

MAHESH (for NAMMAVAR), BISHNU KHARGHORIA (for HKHAGOROLOI BOHU DOOR) & S. KUMAR (for PARINAYAM)

Citation

The Feature Film Jury makes Special Mention for 1994 of **MAHESH** (Music Director) for the Tamil Film **NAMMAVAR** for his unusual and innovative score, using sound effects as an integral part of his musical arrangement, **BISHNU KHARGHORIA** (Actor) for the Assamese Film **HKHAGOROLOI BOHU DOOR** for his poignant and memorable role for bringing alive the heartrending agony of a boatman and his grandson, who is not only deserted by his son, but also his life sustaining river -his only source of livelihood and **S. KUMAR** (Cameraman) for the Malayalam Film **PARINAYAM** for recreating and bringing to life an ambience and characters that help lend credibility to a difficult and complex scenario. Sensitively handled and a sustained performance where the camera and lights have been used as an extension of the creative story teller.

महेश ने एक्स. एल. आर. आई. जमशेदपुर से एम.बी.ए. की डिग्री प्राप्त करने के बाद मैकडावेल ग्रुप ऑफ कम्पनीज़ से अपनी आजीविका आरंभ की। उसके पश्चात् वे इण्डिया पिस्टनस् के जनरल मैनेजर बने। संगीत का शौक महेश को बचपन से था। उन्होंने कई इंटर कॉलेज प्रतियोगिताओं में भाग लिया तथा एक संगीत गोष्ठी 'वरसेताइल्स' का भी गठन किया। 1990 से वे विज्ञापनों के लिए संगीत निर्देशन करने लगे। उन्हें 1994 का स्क्रीन पैनासोनिक का सर्वोत्तम प्रथम संगीतकार का पुरस्कार भी मिला है।

Mahesh, an MBA from XLRI, Jamshedpur, started his career with Mc Dowell Group of Companies. Later joined India Pistons to become a General Manager. Music always being a passion for Mahesh, he participated in various inter-collegiate functions and also had a music group **The Versatiles**. Since 1990, he started composing music for Ad-films. Recently, he has won the Screen Panasonic Award for the Best Musical Debut for the year 1994.

बिष्णु खारगोरिया

Bishnu Kharghoria

एस. कुमार ने 1982 से केरला राज्य फिल्म विकास निगम में जूनियर कैमरामैन के रूप में काम किया। बाद में वे 1984 तक ग़ैर-कथाचित्र कैमरामैन बने रहे। अब तक उन्होंने 57 कथाचित्र तथा 12 ग़ैर-कथाचित्रों में काम किया है। उन्होंने अपना स्वेच्छाकारी कार्य **थेनम् वायामपुम** से 1984 में किया। एस. कुमार को **पैथ्रुकम** के लिए फिल्म समीक्षक पुरस्कार तथा **मुस्कुराहथ** के लिए फिल्मफेयर पुरस्कार के अलावा कई और पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं।

S. Kumar joined Kerala State Film Development Corporation (KSFDC) in 1982 as Junior Cameraman to later become documentary film cameraman till 1984. Till date he has made about 57 films and 12 documentary films. His first independant film was **Thenum Vayampum** in 1984. He has received Film Critic's Award for **Paithrukam** and also the Filmfare Award for **Muskurath** among other awards.

ग़ैर-कथाचित्र पुरस्कार

Awards for Non-Feature Films

सर्वोत्तम ग़ैर-कथाचित्र पुरस्कार

रसयात्रा (अंग्रेज़ी-हिन्दी)

निर्माता : **इन्टरएक्शन वीडियो कम्यूनिकेशनस** को स्वर्ण कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **नंदन कुद्यादि** को स्वर्ण कमल तथा 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम ग़ैर-कथाचित्र का 1994 का पुरस्कार **रसयात्रा** को संगीत को भावपूर्ण एवं कल्पनाशील ढंग से गरिमायुक्त फिल्मी भाषा में प्रस्तुत करने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST NON-FEATURE FILM

RASAYATRA (ENGLISH - HINDI)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer : **INTERACTION VIDEO COMMUNICATIONS**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the Director : **NANDAN KUDHYADI**

Citation

The Award for the Best Non-Feature Film of 1994 is given to **RASAYATRA,** for its sensitive and imaginative transposition of music, into a dignified cinematic expression.

नन्दन कुद्यादि ने बरोदा से सूक्ष्म कला में स्नातक होने के बाद पुणे के फिल्म एवं टेलिविज़न संस्था से फिल्म निर्देशन में महारत हासिल किया।
सर सी. वी. रमन पर उनकी फिल्म **दी साइंटिस्ट एण्ड हिज़ लेगासी** के लिए उन्हें 1989 में राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उन्होंने कई संस्थाओं के लिए फिल्म बनाई जैसे फेस्टिवल ऑफ इन्डिया, लन्दन; सर दोराब टाटा ट्रस्ट; यूनिसेफ आदि। नन्दन कुद्यादि की फिल्मों को कार्लोव वैरी, लेनिनग्राद, सिनेमा दु रील, भारतीय पैनोरामा तथा बम्बई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में दिखाई जा चुकी है।

Nandan Kudhyadi graduated from faculty of Fine Arts, Baroda before specializing in film direction from Film and Television Institute of India, Pune.
His film on Sir C.V. Raman **The Scientist & His Legacy** won the National Film Award in 1989. He has produced films for such prestigious clients like Festival of India, London; Sir Dorab Tata Trust; UNICEF and others. His films have been screened at Karlov Vary, Leningrad, Cinema Du Reel, Indian Panorama and the Bombay International Festival for Documentery Films.

निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम ग़ैर-कथाचित्र पुरस्कार

ए लिटिल वार (हिन्दी)

निर्माता : **भारतीय फिल्म एवं दूरदर्शन संस्थान के निदेशक** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **अतनु बिस्वास** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम ग़ैर-कथाचित्र का 1994 का पुरस्कार **ए लिटिल वार** को संयत भूमिकाओं की कुशल छायांकन के लिए प्रदान किया जाता है।

AWARD FOR THE BEST FIRST NON-FEATURE FILM OF A DIRECTOR

A LITTLE WAR (HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer : **THE DIRECTOR, FILM & TELEVISION INSTITUTE OF INDIA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **ATANU BISWAS**

Citation

The Award for the Best First Non-Feature Film of a Director of 1994 is given to **A LITTLE WAR,** for the restrained performances that its camera elicits.

अतनु बिस्वास ने पुणे के नेस वाडिया कामर्स कालेज से एम. कॉम पूर्ति करने के पश्चात् पुणे के फिल्म एवं दूरदर्शन संस्था से 1992 में फिल्म निर्देशन में शिक्षा प्राप्त करने के लिए योगदान दिया। **ए लिटिल वार** उनकी फिल्म एवं टेलीविजन संस्था की डिप्लोमा फिल्म है।

Atanu Biswas joined Film and Television Institute, Pune in 1992 to learn film direction after completing his M.Com. from Ness Wadia College of Commerce, Pune.

A Little War is his Diploma film from FTII.

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म पुरस्कार

द ट्रैप्ड (अंग्रेज़ी)

निर्माता: **के. जयचन्द्रन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **ओ. के. जॉनी** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म का पुरस्कार द ट्रैप्ड को प्रदान किया गया है जिसमें एक विशिष्ट छोटे समुदाय एवं वर्तमान काल में भाव प्रवणता के बिना शोषण किए जाने पर प्रकाश डाला गया है।

AWARD FOR THE BEST ANTHROPOLOGICAL/ ETHNOGRAPHIC FILM

THE TRAPPED (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **K.JAYACHANDRAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **O.K.JOHNNY**

Citation

The Award for the Best Anthropological/Ethnographic Film is given to **THE TRAPPED** for choosing to focus on the exploitation, past and present, of a small tribe, without platitudinous sentimentality.

के. जयचंद्रन एक प्रसिद्ध पत्रकार हैं तथा उन्होंने अपनी वचनबद्ध समाचार प्रेषण के लिए कई पुरस्कार प्राप्त किए हैं। मलयालम दैनिक ''मातृभूमि'' के साथ एक लंबी अवधि तक कार्य करने के पश्चात्, वे अब ''सद्वार्ता'' में एक विशेष संवाददाता हैं। उन्होंने फिल्म द ट्रैप्ड के निर्माण के पूर्व नागरिक अधिकार समस्या पर कई वीडिया कार्यक्रम तैयार किए हैं।

K. Jayachandran is a well-known journalist and has won many awards for his committed reporting. After a long time with the Malayalam daily 'Mathrubhumi', he is now a special correspondent with 'Sadvartha'. He has produced some video films on Civil Rights issues before producing **The Trapped**.

ओ.के. जानी एक प्रतिष्ठित फिल्म एवं मीडिया समालोचक हैं। वे मलयालम में स्तंभ लेखक भी हैं। उन्होंने कई प्रमुख समाचार पत्रों एवं समाचार माध्यमों में पत्रकार के रूप में कार्य किया है। वे दो पुस्तकों के लेखक हैं तथा उन्होंने रित्विक घटक पर साहित्यिक रचनाओं का संग्रह भी संपादित किया है। द ट्रैप्ड निर्देशक के रूप में उनकी पहली चेष्टा है। उक्त फिल्म 1995 में भारतीय फिल्म फेडरेशन संस्था के भारतीय पैनोरामा में दर्शाया गया था।

O.K. Johnny is a reputed film and media critic. A columnist in Malayalam, he has worked as journalist with several leading newspapers and news-agencies. Author of two books, he has edited a collection of essays on Ritwick Ghatak. **The Trapped** is his first directorial venture. The film was screened earlier in the Indian Panorama of the IFFI 1995.

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म पुरस्कार

पेंटिंग इन टाईम (अंग्रेज़ी)

निर्माता : **टॅप शॅट्स** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **सर्बजीत सेन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म का 1994 का पुरस्कार **पेंटिंग इन टाईम** को प्रदान किया गया है जिसमें एक संस्कृति की सतह पर रोशनी को अप्रत्यक्ष रूप में संचालित कर उसकी जादुई अर्ध-मानसिकी को प्रकट करवाया गया है।

AWARD FOR THE BEST ARTS/CULTURAL FILM

PAINTING IN TIME (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer : **TOPSHOTS**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **SARBAJIT SEN**

Citation

The Award for the Best Arts/Cultural Film of 1994 is given to **PAINTING IN TIME** which uses play of light to enter the surface of a culture, unobtrusively, allowing it to reveal its magical metaphysics.

सरबजीत सेन एक व्यंग्य चित्रकार हैं। उन्होंने कई प्रकाशित ग्रन्थों में चित्रावली दिए हैं। उन्होंने संदीप रे को एक कथाचित्र और कुछ वृत्त चित्रों में सहयोग दिया है। हावड़ा के ज़री कारीगरों के बारे में तैयार की गई एक वीडियो वृत्तचित्र में वे सौमित्र घोष के साथ एक सह-निर्देशक भी रहे हैं तथा उनको कुछ पर्यावरण संबंधी परियोजना के वीडियो रूपक में भी सहयोग दिया है। **पेंटिंग इन टाईम** उनकी निर्देशित पहली फिल्म है।

Sarbajit Sen has been a cartoonist and illustrator for various publications but has also assisted Sandip Ray in a feature film and few documentaries. He has also been a co-director with Soumitra Ghosh in a video documentary on the Zari workers of Howrah and has assisted him in a few environmental projects in video format. **Painting in time** is his first film as a director.

सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म पुरस्कार (विज्ञान की पद्धति, प्रक्रिया एवं वैज्ञानिकों का योगदान सहित)

अनदर वे ऑफ लर्निंग (अंग्रेज़ी)

निर्माता : **कॉमेट मीडिया फाउंडेशन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **चन्दिता मुखर्जी** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म का 1994 का पुरस्कार **अनदर वे ऑफ लर्निंग** फिल्म को अपने शिक्षण प्रणाली को सुस्पष्ट एवं उद्यमी बनाने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST SCIENTIFIC FILM

(including method and process of science, contribution of scientists etc.)

ANOTHER WAY OF LEARNING (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer : **COMET MEDIA FOUNDATION**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **CHANDITA MUKHERJEE**

Citation

The Award for the Best Scientific Film of 1994 is given to **ANOTHER WAY OF LEARNING,** for being at once precise and warm in its approach to teaching processes.

चन्दिता मुखर्जी ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्था से निर्देशन में डिप्लोमा किया है। वे शैक्षणिक और वीडियो फिल्मों का निर्देशन कर रही हैं। वे विज्ञान की लोकप्रियता, विशेषत: स्वास्थ्य पर कार्य, पुनरुत्पादन, प्रौढ़ शिक्षा, हाउसिंग और अन्य विषयों पर भी कार्य कर रही हैं। 1989 में उन्होंने राष्ट्रीय डिज़ाईन संस्थान से एक फैलोशिप प्राप्त की, उसी दौरान **तोतानामा** उनके निर्देशन में निर्मित की गई। इस फिल्म के लिए उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला। उनकी शिक्षा श्रृंखला में **अनदर वे ऑफ लर्निंग** दूसरी फिल्म है। इससे पहले उन्होंने **देयरस् मोर टु स्कूल...** का निर्देशन किया था।

Chandita Mukherjee a graduate in direction from FTII, has been working on educational films and videofilms. She has also been involved with popularisation of science, specifically through works on health, reproduction, adult education, housing and other subjects. In 1989, she won a fellowship at the National Institute of Design. **Totanama** was a product of her work at the NID for which she received a National Award. **Another Way of Learning** is her second film in the shiksha series: the first being **There's More to School...**

सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परीरक्षण फिल्म पुरस्कार
(जानकारी सहित)

विशुद्ध वनंगल (मलयालम)

निर्माता : **केरल राज्य फिल्म विकास निगम के प्रबंध निर्देशक** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **के.आर. मोहनन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण फिल्म का 1994 का पुरस्कार फिल्म **विशुद्ध वनंगल** को उसमें दर्शायी गई विश्लेषण के स्पष्टता एवं विशिष्ट परिस्थिति, वैज्ञानिक समस्या पर कठोर अनुसंधान के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST ENVIRONMENT CONSERVATION/PRESERVATION FILM
(including awareness)

VISUDDHA VANANGAL (MALAYALAM)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer : **MANAGING DIRECTOR, KERALA STATE FILM DEVELOPMENT CORPORATION**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **K.R. MOHANAN**

Citation

The Award for the Best Environment/Conservation/Preservation Film of 1994 is given to **VISUDDHA VANANGAL**, for its analytical clarity and rigorous research in addressing a specific ecological issue.

के. आर. मोहनन एक स्क्रिप्ट लेखक एवं कथाचित्र तथा गैर - कथाचित्र निर्देशक भी है। वर्ष 1978 में उनकी कथाचित्र **अश्वथामा** को सर्वोत्तम मलयालम फिल्म के लिए केरल राज्य पुरस्कार दिया गया था। उक्त फिल्म को 1980 में भारतीय पैनोरामा में तथा 1981 में बर्लिन फिल्म महोत्सव में दर्शाया गया था। उनकी फिल्म **पुरुषार्थम** एवं **स्वरुपम्** को भी सर्वोत्तम मलयालम फिल्म का पुरस्कार प्राप्त हुआ तथा वे भारतीय फिल्म फेडरेशन संस्था के पैनोरामा में भी प्रदर्शित किए गए। उन्होंने वृत्तचित्र **रेसिंग स्नेक्स, हाऊस ऑफ गाड** तथा **कला मंडलम कृष्णनन कुट्टी पोडुवल** के स्क्रिप्ट लेखन एवं निर्देशन भी किये हैं।

K.R. Mohanan is a script writer as well as director of both feature and non-feature films. His feature film **Aswathama** won the Kerala State Award for the Best Malayalam Film in 1978 and was screened in the Indian Panorama of Filmotsava 1980 and Berlin Film Festival in 1981. His films **Purushartham** and **Swaroopam** also received the Best Malayalam film awards and were screened at the Indian Panorama of IFFI 1993. He has also scripted and directed documentaries **Racing Snakes, House of God** and **Kalamandalam Krishnankutty Poduval.**

सर्वोत्तम प्रोत्साहन देने वाली फिल्म पुरस्कार

ब्लू फ्लेम्स, ग्रीन विलेजेज़ (अंग्रेज़ी)

निर्माता : **राष्ट्रीय वनरोपण एवं पारिस्थितिक विकास परिषद, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **रमेश आशेल** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पुरस्कार देने वाली फिल्म का 1994 का पुरस्कार **ब्लू फ्लेम्स, ग्रीन विलेजेज़** को दिया गया है जिसमें एक ग्रामीण परियोजना की दी गई संक्षिप्त विवरणी को सक्षमता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

AWARD FOR THE BEST PROMOTIONAL FILM

BLUE FLAMES, GREEN VILLAGES (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer : **NATIONAL AFFORESTATION & ECO-DEVELOPMENT BOARD, MINISTRY OF ENVIRONMENT & FORESTS**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **RAMESH ASHER**

Citation

The Award for the Best Promotional Film of 1994 is given to **BLUE FLAMES, GREEN VILLAGES,** for its competent presentation of a rural project, within its given brief.

रमेश अशेर ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्था से उत्तीर्ण होकर भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के उपग्रह दूरदर्शन परियोजना में योगदान दिया। वे वृत्त चित्रों एवं लघुचित्रों के कई पहलुओं में स्क्रिप्ट लेखक, संपादक, निर्देशक एवं निर्माता के रूप में सम्मिलित थे। उन्होंने विख्यात गुजराती कथाचित्र **भवनि भवाई** में संपादक एवं सह-निर्माता के रूप में भी कार्य किया। वर्ष 1990 में वे प्रौढ़ शिक्षा पर बनी फिल्म **यू सिखलाएं आकर** के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार के प्राप्तकर्ता भी थे।

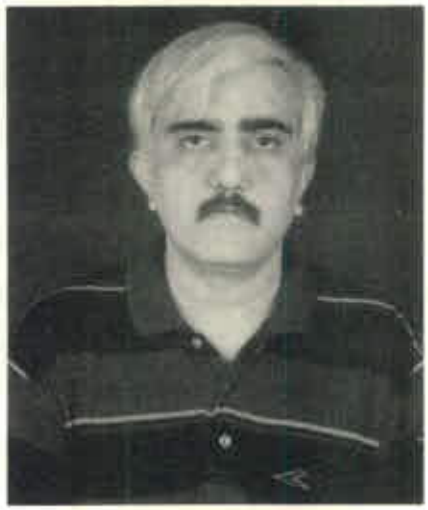

Ramesh Asher passed out of FTII, Pune and joined ISRO's Satellite Television project. He has been involved in the various aspects of documentaries and short films as a script-writer, editor, director and producer. He has also worked as editor and co-producer of the much acclaimed Gujarati feature film **Bhavni Bhavai.** He was the recipient of the National Award for a film on adult education **Yun Shikhlayen Aakar** in 1990.

सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फिल्म पुरस्कार

फाल्के चिल्ड्रेन (अंग्रेज़ी)

निर्माता: **आर. कृष्णमोहन एवं वाई. एन. इंजीनियर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **कमल स्वरूप** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फिल्म का 1994 का पुरस्कार फिल्म **फाल्के चिल्ड्रेन** को प्रदान किया गया है जिसमें विषय का जीवन एवं क्रिया का प्रलेखीकरण करने के साथ-साथ इतिहास की ओर प्रतीकवादी पहुंच पर आलोचना की गई है।

AWARD FOR THE BEST HISTORICAL RECONSTRUCTION/COMPILATION FILM

PHALKE CHILDREN (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **R. KRISHNA MOHAN and Y.N. ENGINEER**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **KAMAL SWAROOP**

Citation

The Award for the Best Historical Reconstruction/Compilation Film of 1994 is given to **PHALKE CHILDREN** which, while documenting the life and work of the subject, critiques the iconocising approach to history.

आर. कृष्ण मोहन फिल्म डिविज़न के न्यूज़ मैगज़ीन के सह मुख्य निर्माता हैं। उन्होंने अपना जीवन पटकथा लेखन से आरंभ किया और बाद में निर्देशक बने। उनकी कुछ मुख्य फिल्में हैं **क्राइसिस इन स्री लंका, अ रीपोर्ट ऑन कश्मीर, राम जन्मभूमी-बाबरी मस्जिद, त्यागब्रह्मम,** आदि। आर. कृष्ण मोहन बम्बई अंतर्राष्ट्री ग़ैर-कथाचित्र फिल्म समारोह 1994 के निदेशक भी थे।

R. Krishna Mohan is a Joint Chief Producer with Films Division producing News Magazines. He began his career in films as a script writer and went on to direct films. Some of his noteworthy films are **Crisis in Sri Lanka, A Report on Kashmir, Ram Janmabhoomi - Babri Masjid, Thyagabrahmam,** etc. He was also the Director of Bombay International Documentary Film Festival held in Feb, 1994.

वाई.एन. इनजीनियर ने 1968 में पुणे के फिल्म संस्था में सिनेमा पर डिप्लोमा प्राप्त किया। उन्होंने प्रसिद्ध सिनेमाटोग्राफर **जाल मिस्त्री** के सहायक के रूप में हिन्दी फिल्मों में काम किया। उसके पश्चात् वे दूरदर्शन में कैमरामैन और फिल्म एवं टेलिवीज़न संस्था पुणे के अध्यापक भी रहे। फिल्म डिविज़न के निर्देशक के रूप में उन्होंने 40 ग़ैर-कथाचित्रों का निर्माण किया। इन दिनों वे फिल्म डिविज़न में ही निर्माता के रूप में कार्यरत हैं।

Y.N. Engineer did his Diploma in Cinema (Motion Picture Photography) in 1968 from the Film Institute of India, Pune.
He has worked in the Hindi Film Industry as an assistant to Cinematographer Jal Mistry, as a Cameraman in Doordarshan and as a Lecturer in the Film and Television Institute of India.
A Director in Films Division, he has 40 documentaries to his credit. He is at present working as a Producer in Film Division.

कमल स्वरूप ने फिल्म एवं टेलिवीज़न संस्था पुणे से 1974 में निर्देशन में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा प्राप्त किया है। उन्होंने 1975-76 में **इस्रो** के लिए विडिओ पर वैज्ञानिक कार्यक्रम लिखे, निर्मित तथा निर्देशित किए। कमल स्वरूप ने कई ग़ैर-कथाचित्र तथा लघु चित्रों का निर्देशन किया है। उन्होंने 1987 में **एन. एफ. डी. सी.** के लिए **ओम दर-ब-दर** लिखा तथा उसका निर्माण और निर्देशन किया जिसके लिए उन्हें 1989 का फिल्मफेयर समीक्षक पुरस्कार प्राप्त हुआ। कमल स्वरूप ने कई निर्देशकों के सहायक के रूप में भी कार्य किया— सर रिचर्ड एटेनबोरो, सइयद मिर्ज़ा, मणि कौल, केतन मेहता आदि। वे अनुसंधान, निर्देशन, पटकथा लेखन तथा कला निर्देशन आदि क्षेत्रों में सहायक रह चुके हैं।

Kamal Swaroop did his Post Graduate Diploma in Cinema with Direction specialization from Film and Television Institute of India, Pune in 1974. In 1975-76 he has written, produced and directed science programmes for ISRO in video. He has also directed a few documentary and short films. Kamal wrote, produced and directed the feature film **Om Dar-B-Dar** for N.F.D.C. in 1987 which won him the Filmfare Critics Award in 1989. He has also assisted many leading directors like Sir Richard Attenboro, Saeed Mirza, Mani Kaul, Ketan Mehta in various aspects like Research & Direction Assistant, Script Consultant, Art Direction etc.

सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म पुरस्कार(जैसे मद्य-निषेध, महिला और बाल कल्याण, दहेज विरोधी, नशीले पदार्थों से हानियां, विकलांग कल्याण आदि)

फादर, सन एण्ड होली वार (भाग-I ट्रायल बाई फॉयर, भाग-II हीरो फार्मेसी) (हिन्दी-अंग्रेजी)

निर्माता : **आनंद पटवर्धन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **आनंद पटवर्धन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म का 1994 का पुरस्कार फिल्म **फादर, सन एण्ड होली वार** (भाग I एवं भाग- II) को उसकी अभिशंसा, साहस एवं निरंतर टिप्पणी जिसमें तीक्ष्ण, समझदारी के साथ विडंबना भी संयुक्त है, के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON SOCIAL ISSUES

(such as prohibition, women and child welfare, anti dowry, drug abuse, welfare of the handicapped etc.)

FATHER, SON AND HOLY WAR (PART I-'TRIAL BY FIRE', PART II-'HERO PHARMACY') (HINDI-ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **ANAND PATWARDHAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **ANAND PATWARDHAN**

Citation

The Award for the Best Film on Social Issues of 1994 is given to **FATHER, SON AND HOLY WAR (PART I & PART II)**, for its conviction, courage and relentless observation, tempered by a sharp sense of irony.

आनन्द पटवर्धन ने बंगला देश के शरणार्थियों के लिए धन इकट्ठा करने, बिहार में गांव-स्तर पर प्रजातंत्र, 1975-77 की आपात-कालीन स्थिति के राजनैतिक कैदियों, कनाडा में फार्म श्रमिक संघ, बम्बई की गंदी बस्तियों में रहने वाले लोगों, पंजाब में रुढ़िवादी आतंक और राज्य के दमन पर वृत्तचित्र बनाए हैं। **प्रिजनर्स आफ कांशिएंस** (1979) को टाइन पुरस्कार (यू.के.) मिला। **ए टाईम टू राइज़** (1981) को सिल्वर डोव (लाइप्सिग) और टाइन पुरस्कार मिले। **बोम्बे अवर सिटी** (1985) को पेरिस में सिनेमा टु रील समारोह में निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार, सर्वोत्तम ग़ैर कथाचित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार और फ़िल्म फेयर पुरस्कार मिला। **इन मेमोरी आफ फ्रेन्ड्स** (1990) को बम्बई में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय वृत्तचित्र समारोह में रजत शंख मिला तथा **इन द नेम ऑफ गौड** (1992) को सर्वोत्तम खोजी फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार तथा स्विट्ज़रलैन्ड, फ्रेइबुर्ग और जापान में 1993 में पुरस्कार प्राप्त हुए।

ANAND PATWARDHAN has made documentaries on fund raising for Bangladesh refugees, grassroots democracy in Bihar, political prisoners of the 1975-77 Emergency, a farm workers' union in Canada, slum-dwellers of Bombay, and fundamentalist terrorism and state repression in Punjab. **Prisoners of Conscience** (1979) won the Tyne Award (UK), **A Time to Rise** (1981) won the Silver Dove (Leipzig) and the Tyne Award, **Bombay Our City** (1985) won the Special Jury Prize at the Cinema du Reel in Paris (1986), the National Award for Best non-feature film, and the Filmfare Award, **In Memory of Friends** (1990) won the Silver Conch at the Bombay International Documentary Film Festival and **In the Name of God** (1992) won the National Award for the Best Investigative Documentary in 1992 along with other awards at Switzerland, Freiburg & Japan in 1993.

सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फिल्म पुरस्कार

न्यूज मैगज़ीन सं. 268 (ए.) प्लेग- क्यूरेबल एवं प्रिवेन्टेबल (हिन्दी)

निर्माता : **आर. कृष्णमोहन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **महेश प्रसाद सिन्हा** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फिल्म का 1994 का पुरस्कार फिल्म **न्यूज मैगज़ीन सं. 268(ए)प्लेग-क्यूरेबल एवं प्रिवेन्टेबल** को प्लेग के खतरे की समस्या को सरलता, प्रत्यक्षता एवं स्पष्टता के साथ प्रस्तुत करने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST EDUCATIONAL/MOTIVATIONAL/INSTRUCTIONAL FILM

NEWS MAGAZINE NO. 268 (A) PLAGUE-CURABLE & PREVENTABLE (HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer : **R. KRISHNAMOHAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **MAHESH P. SINHA**

Citation

The Award for the Best Educational/Motivational/Instructional Film of 1994 is given to **NEWS MAGAZINE NO. 268 (A) PLAGUE-CURABLE & PREVENTABLE,** for its simple, direct and clear communication about the threat of plague.

आर. कृष्ण मोहन फिल्म डिविज़न के न्यूज़ मैगज़ीन के सह मुख्य निर्माता हैं। उन्होंने अपना जीवन पटकथा लेखन से आरंभ किया और बाद में निदेशक बने। उनकी कुछ मुख्य फिल्में हैं **क्राइसिस इन स्री लंका, अ रीपोर्ट ऑन कश्मीर, राम जन्मभूमी-बाबरी मस्जिद, त्यागब्रह्मम,** आदि। आर. कृष्ण मोहन बम्बई अंतर्राष्ट्रीय ग़ैर-कथाचित्र फिल्म समारोह 1994 के निदेशक भी थे।

R. Krishna Mohan is a Joint Chief Producer with Films Division producing News Magazines. He began his career in films as a script writer and went on to direct films. Some of his noteworthy films are **Crisis in Sri Lanka, A Report on Kashmir, Ram Janmabhoomi-Babri Masjid, Thyagabrahmam,** etc. He was also the Director of Bombay International Documentary Film Festival held in Feb, 1994.

महेश प्रसाद सिन्हा

Mahesh P. Sinha

सर्वोत्तम खोजी फिल्म पुरस्कार

फादर, सन एण्ड होली वार (भाग- I ट्रायल बाई फायर, भाग- II हीरो फार्मेसी)
(हिन्दी-अंग्रेज़ी)

निर्माता: **आनंद पटवर्धन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **आनंद पटवर्धन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम खोजी फिल्म का 1994 का पुरस्कार फिल्म **फादर, सन एण्ड होली वार** (भाग-I एवं भाग-II) को दिया गया है जिसमें गहराई की खोज में विषयनिष्ठ के आगे भी एषण दिया गया जिस दौरान अप्रत्याशित तिर्कम सुझाव की भी छूट दी गई है।

AWARD FOR THE BEST INVESTIGATIVE FILM

FATHER, SON AND HOLY WAR (PART-I 'TRIAL BY FIRE', PART-II 'HERO PHARMACY')
(HINDI-ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer : **ANAND PATWARDHAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **ANAND PATWARDHAN**

Citation

The Award for the Best Investigative Film of 1994 is given to **FATHER, SON AND HOLY WAR (PART I & PART II),** for probing beyond the objective, in its pursuit of insights, allowing even the unexpected to suggest the oblique.

आनन्द पटवर्धन ने बंगला देश के शरणार्थियों के लिए धन इकट्ठा करने, बिहार में गांव-स्तर पर प्रजातंत्र, 1975-77 की आपात-कालीन स्थिति के राजनैतिक कैदियों, कनाडा में फार्म श्रमिक संघ, बम्बई की गंदी बस्तियों में रहने वाले लोगों, पंजाब में रुढ़िवादी आतंक और राज्य के दमन पर वृत्तचित्र बनाए हैं। **प्रिजनर्स आफ कांशिएंस** (1979) को टाइन पुरस्कार (यू.के.) मिला। **ए टाईम टू राइज़** (1981) को सिल्वर डोव (लाइप्सिग) और टाइन पुरस्कार मिले। **बोम्बे अवर सिटी** (1985) को पेरिस में सिनेमा दु रील समारोह में निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार, सर्वोत्तम ग़ैर कथाचित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार और फ़िल्म फेयर पुरस्कार मिला। **इन मेमोरी आफ फ्रेन्ड्स** (1990) को बम्बई में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय वृत्तचित्र समारोह में रजत शंख मिला तथा **इन द नेम ऑफ गौड** (1992) को सर्वोत्तम खोजी फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार तथा स्विट्ज़रलैन्ड, फ्रेइबुर्ग और जापान में 1993 में पुरस्कार प्राप्त हुए।

ANAND PATWARDHAN has made documentaries on fund raising for Bangladesh refugees, grassroots democracy in Bihar, political prisoners of the 1975-77 Emergency, a farm workers' union in Canada, slum-dwellers of Bombay, and fundamentalist terrorism and state repression in Punjab. **Prisoners of Conscience** (1979) won the Tyne Award (UK), **A Time to Rise** (1981) won the Silver Dove (Leipzig) and the Tyne Award, **Bombay Our City** (1985) won the Special Jury Prize at the Cinema du Reel in Paris (1986), the National Award for Best non-feature film, and the Film fare Award, **In Memory of Friends** (1990) won the Silver Conch at the Bombay International Documentary Film Festival and **In the Name of God** (1992) won the National Award for the Best Investigative Documentary in 1992 along with other awards at Switzerland, Freiburg & Japan in 1993.

सर्वोत्तम कार्टून फिल्म पुरस्कार

महागिरी (हिन्दी)

निर्माता : **भीमसेन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **किरीट** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

एनिमेटर : **एस.एम. हसन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कार्टून फिल्म का 1994 का पुरस्कार फिल्म **महागिरी** को उसकी प्रसन्न वाक-चातुर्यता जिन्दा दिली श्रृंखला एवं स्वदेशीय वाक-व्यवहार के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST ANIMATION FILM

MAHAGIRI (HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer : **BHIMSAIN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **KIREET**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Animator : **S.M. HASAN**

Citation

The Award for the Best Animation Film of 1994 is given to **MAHAGIRI,** for its playful wit, its liveliness of line and indigenous idiom.

भीमसैन फिल्म डिविज़न के बैकग्राउन्ड कलाकार के रूप में कार्य करते थे। उन्हें शिकागो फ़िल्म समारोह में **द क्लाइंब** (1970) के लिए रजत पदक मिला। 1975 में उनके **एक अनेक और एकता** को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उन्होंने कई कार्टून फ़िल्म एवं विज्ञापनों, टेलिवीज़न के लिए धारावाहिक और ग़ैर-कथाचित्रों का निर्माण तथा निर्देशन किया है। भीमसेन की पहली फ़िल्म **घरौंदा** (1976) को कई पुरस्कार मिले। बाद में उन्होंने **दूरियाँ** तथा **तुम लौट आओ** का निर्देशन किया। उन्होंने **लोक गाथा** (1991) में पहली बार कम्प्यूटर से कार्टून बनाया और 3 राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किए।

Bhimsain worked as a background artist with the Films Division. He was awarded the Silver Hugo Award at Chicago Film Festival for **The Climb** (1970). In 1975 **Ek Anek Aur Ekta** won him the President's National Award. Bhimsain made his first feature film **Gharonda** (1970) which fetched him numerous awards. He has directed and produced several animation films and commercials, TV serials and documentaries. He later successfully directed **Dooriyan** and **Tum Laut Aao.** In 1991 he made his first computer aided animation series **Lok Gatha** which fetched him 3 National Awards.

किरीट खुराना ने 1994 में कैनाडा के शेरिडन कॉलेज से 3 साल का कार्टूनकार का अध्ययन समाप्त किया। उन्होंने कई कार्टून फिल्मों का निर्देशन किया जैसे **अल्फाकैट, एनकोर, द लव नेक्टर,** आदि। किरीट इन्दो-कनाडाइ सहयोग से बनने वाली कार्टून फिल्म **लौक्ड** के कार्टून निर्देशक हैं। किरीट को कम्प्यूटर पर कार्टून बनाने का भी अनुभव है।

Kireet Khurana graduated in 1994 with high honours from the prestigious Sheridan College, Canada where he did a 3 year classical Cel-Animation Course. He has directed several animation short films independently like **Alphacat, Encore** and **The Love Nectar** etc. Kireet is the Director of Animation for **Locked,** an Indo-Canadian Collaboration animation film. Kireet also has extensive knowledge about Computer animation.

एस. एम. हसन का जन्म 1945 में तमिलनाडु में वेल्लोर में हुआ। उन्होंने कला में बिना किसी औपचारिक शिक्षा के निपुणता प्राप्त की। 1967 में कार्टूनकार का काम करने के लिए बंबई पहुँचकर उन्होंने राम मोहन से कार्टून की शिक्षा प्राप्त की। सहायक कार्टूनकार के रूप में भीमसेन के साथ काम करते हुए उन्हें **एक अनेक और एकता** और **बिजनेस इन पीपल** के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। **बल्लू शाह** में उन्होंने पहली बार मुख्य कार्टूनकार और डिजाइनर का काम किया तथा 1992 का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किया। उन्होंने पुरस्कार प्राप्त **लोक गाथा** और **वर्तमान** में भीमसेन की सहायता की।

S.M. Hasan was born in Vellore, Tamil Nadu, in 1945. He is a self-taught artist. He migrated to Bombay in 1967 to work as an animator. He learnt animation under Ram Mohan and joined Bhimsain as assistant animator. **Ek Anek Aur Ekta** and **Business in People** won him national awards. **Ballu Shah** is the first film on which Hasan worked as Chief Animator and designer and received the National Award in 1992. He assisted Bhimsain as an animator and designer in award winning **Lok Gatha** and **Vartmaan.**

विशेष निर्णायक मंडल पुरस्कार

सौमित्रा सरकार

सौमित्रा सरकार को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

विशेष निर्णायक मंडल पुरस्कार सौमित्रा सरकार को फिल्म **गेम्स वी प्लेड इन माई युथ** के लिए प्रदान किया गया है जो एक स्फूर्तिदायक मौजी कविता है तथा जिसकी आश्चर्यजनक अंतरण एवं विस्थापन प्रसन्न करती है।

SPECIAL JURY AWARD

SAUMITRA SARKAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to **SAUMITRA SARKAR**

Citation

The Special Jury Award is given to **SAUMITRA SARKAR** for **GAMES WE PLAYED IN MY YOUTH,** a refreshingly whimsical poem, which delights in the surprise of shifts and displacement.

सौमित्रा सरकार एक स्वतंत्र फिल्म निर्माता है और अपने कॉलेज के दिनों से ही फिल्म सचेतक भी हैं। वे युवा पीढ़ी के सबसे नये फिल्म निर्माता हैं। उन्होंने 1990 में **कलकत्ता रीविसिटेड** का निर्देशन किया था। **गेम्स वी प्लेड इन माइ यूथ** उनकी अगली पेशकश है।

Saumitra Sarkar an independent film maker, a film club activist since his college days belongs to the youngest film lover-maker generation in Calcutta. He has directed **Calcutta revisited** in 1990 and **Games we played in my youth** in 1994.

लघु कल्पित सर्वोत्तम फिल्म पुरस्कार (फिल्म की अवधि 70 मिनट से अधिक न हो)

स्टिल लाईफ (हिन्दी - अंग्रेजी)

निर्माता : **भारतीय फिल्म एवं दूरदर्शन संस्थान के निर्देशक** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **सुभद्रो चौधरी** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म 1994 का पुरस्कार **स्टिल लाईफ** को कष्टप्रद अनुभूति की दृश्यव्यवस्था के विभाजन में शैलीगत मिश्रण के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST SHORT FICTION FILM

(Films not exceeding 70 minutes duration)

STILL LIFE (HINDI-ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **DIRECTOR, FILM & TELEVISION INSTITUTE OF INDIA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **SUBHADRO CHOWDHARY**

Citation

The Award for the Best Short Fiction Film of 1994 is given to **STILL LIFE,** for its stylistic sophistication in dealing with the chaos of painful experience.

सुभद्रो चौधरी ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में स्नातक बनने के बाद 1992 में फिल्म एवं टेलिवीज़न संस्था से प्रशिक्षण प्राप्त किया। **स्टिल लाइफ** उनकी शिक्षण के दौरान बनी डिप्लोमा फिल्म है।

Subhadro Chowdhary after completing his graduation in English Literature from Calcutta University joined FTII, Pune in 1992.
Still Life is his Diploma Film made during training.

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म पुरस्कार

क्लिंट (मलयालम एवं अंग्रेज़ी)

निर्माता : **शिवकुमार** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **शिवकुमार** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

परिवार कल्याण संबंधी सर्वोत्तम फिल्म का 1994 का पुरस्कार **क्लिंट** को प्रदान किया गया है जिसमें एक शिशु के जीवन के विभिन्न पहलुओं के सच्चे प्रलेखीकरण द्वारा परिवार कल्याण के सारांश में एक नया नमूना प्रस्तुत किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON FAMILY WELFARE

CLINT (MALAYALAM & ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer : **SHIV KUMAR**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **SHIV KUMAR**

Citation

The Award for the Best Film on Family Welfare of 1994 is given to **CLINT,** which sets up a new model of the essence of family welfare, through its honest documentation of factors impinging on a child's life

शिव कुमार ने फिल्म एवं टेलिवीज़न संस्था, पुणे से प्रशिक्षण प्राप्त किया।
क्लिंत उनकी पहली ग़ैर-कथाचित्र है।

Shiv Kumar studied at FTII, Pune.
Clint is his first major documentary venture.

सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार

अनूप जोतवानी

छायाकार : **अनूप जोतवानी** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

फिल्म की प्रोसेसिंग करने वाली प्रयोगशाला : **विजय कलर लैब, मद्रास** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

गैर-कथाचित्र के सर्वोत्तम छायाकार का 1994 का पुरस्कार **अनूप जोतवानी** को उनके प्रकाश व्यवस्था द्वारा ऊंची रुचि के भाव प्रदर्शन एवं फिल्म **रसयात्रा** में उनकी सरलता से की गई छायांकन के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHY

ANOOP JOTWANI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Cameraman : **ANOOP JOTWANI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Laboratory processing the film : **VIJAY COLOUR LAB, MADRAS**

Citation

The Award for the Best Cinematography for a non-feature film of 1994 is given to **ANOOP JOTWANI,** for his fastidious interpretation through lighting, and the fluidity of his camera operation in **RASAYATRA.**

अनूप जोतवानी 1983 में फिल्म एवं टेलिवीज़न संस्था, पुणे के स्नातक बने। 1986 तक वे लघु चित्रों में सहायक कैमरामैन के रूप में कार्यरत रहे। उसके पश्चात् वे सिनेमाटोग्राफी का काम करने लगे। उनके सिनेमाटोग्राफ किए फिल्म हैं— **हालोधिया चोराए बाओधन खाइं** (1986), **बी.सी. सान्याल** (1987), **बनानी** (1989), **माया मेमसाब** (1992), **फील्ड ऑफ शेडोज़** (1992) आदि।

Anoop Jotwani graduated from Film and Television Institute of India in 1983. Till 1986 he worked as Assistant Cameraman on various short films. From 1986 freelancing as Cinematographer he has to his credit various films like **Halodiya Choraye Baodhan Khai** (1986), **B.C. Sanyal** (1987), **Banani** (1989), **Maya Memsaab** (1992), **Field of Shadows** (1992) and many others.

Still from **Rasayatra**

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार

इन्द्रजीत नियोगी एवं ए. एम. पद्मनाभन

ध्वनि आलेखक : **इन्द्रजीत नियोगी** एवं **ए. एम. पद्मनाभन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

गैर-कथाचित्र के लिए सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का 1994 का पुरस्कार **इन्द्रजीत नियोगी** एवं **ए. एम. पद्मनाभन** को संयुक्त रूप में एक ऐसे क्षमता वाली ध्वनि उत्पन्न करने, जो ध्वनिय मौजूदगी को इस प्रकार वृद्धि कर देता है जिसमें दर्शक भी फिल्म- **अनदर वे ऑफ लर्निंग** में भागीदार बन जाता है, के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHY

INDRAJIT NEOGI & A.M. PADMANABHAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Audiographer : **INDRAJIT NEOGI & A.M.PADMANABHAN**

Citation

The Award for the Best Audiography in a non-feature film of 1994 is given to **INDRAJIT NEOGI & A.M. PADMANABHAN,** for together bringing about a quality of sound, which so enhances the acoustic presence, that the viewer becomes a participant in the film **ANOTHER WAY OF LEARNING.**

इन्द्रजीत नियोगी आई. आई. टी खड़गपुर के स्नातक हैं तथा उन्होंने फिल्म एवं टेलीवीज़न संस्था, पुणे से साउन्ड रेकार्डिंग तथा साउन्ड इन्जीनियरिंग में पोस्ट ग्रेजुएशन किया है। उन्होंने **36 चौरंगी लेन, अर्थ, तरंग**, आदि फिल्मों में सहायक साउन्ड रेकार्डिस्ट के रूप में काम किया। उसके पश्चात् उन्होंने **खामोश, आघात, हुन हुनशी हुनशीलाल, माया मेमसाब**, आदि में मुख्य साउन्ड रेकार्डिस्ट के रूप में काम किया। फिल्मों के अलावा उन्होंने ग़ैर-कथाचित्र, लघु चित्र तथा टेलिवीज़न धारावाहिक में भी काम किया।

Indrajit Neogi a graduate from IIT, Kharagpur did his post graduate studies in Sound Recording and Sound Engineering from Film and Television Institute of India, Pune in 1980. In feature films he initially worked as an assistant Sound Recordist in films like **36 Chowringhee Lane, Arth, Tarang** etc. Later as Chief Sound Recordist, he worked in films like **Khamosh, Aaghat, Hun Hunshi Hunshilal, Maya Memsaab** etc. He also has many documentary and short films to his credit as Chief Sound Recordist in addition to a few TV serials.

ए. एम. पद्मनाभन ने 1975 में फिल्म एवं टेलिवीज़न संस्था से डिप्लोमा पूरा किया है। वे 1978 तक स्वच्छाकारी रेकार्डिंग का काम करते रहे। वे फिल्म एवं टेलिवीज़न संस्था के अध्यापक रह चुके हैं तथा 1986 में अराधना साउन्ड सर्विस में मुख्य रेकार्डिस्ट के रूप में युक्त हो गए। उन्होंने कई पुरस्कार प्राप्त ग़ैर-कथाचित्र तथा कथाचित्रों में काम किया है। उन्हें 1992 में **रुकमावती की हवेली** के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

A.M. Padmanabhan having completed his diploma from FTII, Pune in 1975 worked as a freelance recordist till 1978. He has taught at the FTII and since 1986 is associated at Aradhana Sound Service as Chief Recordist. He has worked as recordist and re-recordist on a number of documentary and feature films which won several awards. He won the National Award in the feature film category in 1992 for **Rukmavati Ki Haveli.**

सर्वोत्तम संपादक का पुरस्कार

परेश कामदार

संपादक : **परेश कामदार** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

गैर-कथाचित्र के सर्वोत्तम संपादन का 1994 का पुरस्कार **परेश कामदार** को फिल्म **रसयात्रा** के सहज सुरीलेपन को आकाशीय सह-संबंधी का आविष्कार ललित रफ्तार से करने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST EDITING

PARESH KAMDAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Editor : **PARESH KAMDAR**

Citation

The Award for the Best Editing of a non-feature film of 1994 is given to **PARESH KAMDAR,** for the elegant pace with which he discovers spatial correlatives for the inherent musicality of **RASAYATRA.**

Still from **Rasayatra**

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन पुरस्कार

के. पी. उदयाभानु

संगीत निर्देशक : **के.पी. उदयाभानु** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

गैर-कथाचित्र के लिए सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का 1994 का पुरस्कार **के. पी. उदयाभानु** को फिल्म **द मीथ ऑफ द ट्री, द सरपेन्ट एण्ड द मदर** में विभिन्न संगीत लय एवं ध्वनि के सानिधि को दिलचस्प रूप में प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST MUSIC DIRECTOR

K.P. UDAYABHANU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Music Director : **K. P. UDAYABHANU**

Citation

The Award for the Best Music Direction of a non-feature film of 1994, is given to **K. P. UDAYABHANU**, for his interesting juxtapositions of different strains of music and sound in **THE MYTH OF THE TREE, THE SERPENT AND THE MOTHER**

के. पी. उदयाभानु केरल के सांस्कृतिक क्षेत्र में पिछले 35 वर्षों में विद्यमान हैं । वे एक जाने माने पार्श्व गायक तथा संगीत निर्देशक हैं । उन्होंने कई कथाचित्र और ग़ैर-कथाचित्रों में संगीत निर्देशन किया है । वे पिछले 32 वर्षों से आकाशवाणी से युक्त हैं । उन्हें विभिन्न जगहों एवं संस्थाओं से कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं ।

K.P. Udayabhanu hasbeen in the cultural field of Kerala for the past 35 years. He is a noted playback singer and also a Music Director of repute. He has composed music for a number of feature and documentary films. He is associated with the AIR for the last 32 years. Other than composing and conducting many concerts he has also received many awards at different levels.

विशेष उल्लेख

1. **ऑफ टैगोर एण्ड सिनेमा** फिल्म के निर्देशक **अरुण कुमार राय** को उसकी पुरालेखीय मूल के लिए उल्लेख किया गया है।

2. **द स्टोरी ऑफ इंटीग्रेशन** फिल्म के निर्देशक **गौतम हालदार** को बड़े परिश्रम के साथ उनके विषय को संजीवित बनाने पर उनके प्रयत्न के लिए उल्लेख किया गया है।

3. **ओरमाइन्डे तीरंगलील** फिल्म के निर्देशक **शिवप्रसाद** को उनके समय के गुजरने संबंधी गीतात्मक आह्वान के लिए उल्लेख किया गया है।

SPECIAL MENTION

1) **ARUN KUMARROY,** director of the film **OF TAGORE AND CINEMA,** in acknowledgement of its archival value.

2) **GAUTAM HALDAR,** director of the film **THE STORY OF INTEGRATION,** in acknowlegement of his painstaking attempt to bring its subject to life.

3) **SIVAPRASAD,** director of the film **ORMAYNDE THEERANGALIL,** in acknowledgement of his lyrical evocation of the passage of time.

अरुण कुमार राय एक लेखक और फिल्म समीक्षक के रूप में शुरुवात कर, हरिसाधन दासगुप्ता के फिल्म **आचार्य नन्दलाल** (1984) के निर्देशन सहायक बने। उन्होंने लगभग एक साथ 3 ग़ैर-कथाचित्र पूरे किए- **ऑफ टेगोर एण्ड सिनेमा, रेनोयर इन कलकत्ता** एवं **अ किंग इन एक्साईल**। इसमें प्रथम ग़ैर-कथाचित्र को 26वें अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह, बम्बई में दर्शाया गया। उन्हें 1986 का सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक का पुरस्कार **रविन्द्रनाथ-ओ-चलचित्र** (बंगाली) के लिए मिला।

Arun Kumar Roy started as a film critic and writer, later working as assistant director to Harisadhan Dasgupta on the film **Acharya Nandalal** (1984). He almost simultaneously completed three documentary films, viz., **Of Tagore and Cinema, Renoir in Calcutta,** and **A King in Exile.** His **Of Tagore and Cinema** featured in the 26th IFFI, Bombay. His versatility has also earned him the National Award for the Best Book on Cinema in 1986 for **Rabindranath-O-Chalchitra** in Bengali.

गौतम हलदर एक बहु मुखी प्रतिभावान व्यक्ति हैं। उनकी दक्षता फोटोग्राफी, गायन, लेखन तथा टेलिवीज़न-सभी पर है। उन्होंने कई विख्यात लोगों के अपने खींचे चित्रों की प्रदर्शनी भी की है— शम्भू मित्रा, हबीब तनवीर आदि। वे पीटर ब्रूकस् के महाभारत के आफिशियल फोटोग्राफर भी रह चुके हैं। वे एक मंच अभिनेता, कला एवं नाटक समीक्षक तथा बारोमास पत्रिका के प्रकाशक भी हैं। उन्होंने बच्चों के नाटक पर कलकत्ता दूरदर्शन के लिए विडियो कार्यक्रम भी तैयार किए हैं।

Gautam Haldar is a multi-faceted personality. His expertise ranges from photography to singing, writing and television. He has put up exhibitions of his photographs of works of great people viz., Sambhu Mitra, Habib Tanveer. He has also been the official photographer of Peter Brookes Mahabharata in Calcutta. He has also been a stage performer. He is a regular art & theatre critic for major Bengali dailies and also publishes a Bengali magazine Baromas. Gautam Haldar has made video modules for Calcutta Doordarshan on Children's theatre.

शिवप्रसाद फिल्म एवं टेलिवीज़न संस्था, पुणे के स्नातक हैं। उनकी डिप्लोमा फिल्म **यज्ञ** सराही गई थी। उसके पश्चात् उन्होंने **पुरुरावास, साइरांध्री, वेम्बानाडू** तथा **गौरी** फिल्में बनाई।

Shivprasad graduated from the Film and Television Institute of India, Pune. His Diploma film **Yagna** was well received. Later he made feature films like **Purooravas, Sairandhri, Vembanadu** and **Gowri.**

पुरस्कार जो नहीं दिए गए

ग़ैर-कथाचित्र निर्णायक मंडल ने

(1) सर्वोत्तम जीवनी फिल्म पुरस्कार

(2) सर्वोत्तम कृषि फिल्म पुरस्कार तथा

(3) सर्वोत्तम गवेषण/साहसी फिल्म पुरस्कार नहीं दिए।

AWARDS NOT GIVEN

The Non-Feature Film Jury did not give awards for the

1) Best Biographical Film

2) Best Agricultural Film and

3) Best Exploration/Adventure Film.

सिनेमा लेखन पुरस्कार

Awards for Writing on Cinema

सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक पुरस्कार

अभिनयम् अनुभवम् (मलयालम)

लेखक : **भरत गोपी** को स्वर्ण कमल तथा 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रकाशक : **पी. भुवनेशन** को स्वर्ण कमल तथा 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक का 1994 का पुरस्कार **भरत गोपी** की **अभिनयम् अनुभवम्** को उसके आत्मदर्शी और स्व-विश्लेषी विवरण के लिए दिया गया है। अभिनयम् अनुभवम् में लेखक ने गंभीर और कभी उदास अभिनय दर्शाया है क्योंकि अभिनेता सिनेमा के साथ अपनी क्रियाओं के और अपने साथियों के माध्यम से रुचिकर चित्र का ताना-बाना बुनता है। पुस्तक के प्रदर्शन पर यह पुस्तक असाधारण एवं उद्घाटक लगती है।

AWARD FOR THE BEST BOOK ON CINEMA

ABHINAYAM ANUBHAVAM (MALAYALAM)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the Author : **BHARAT GOPY**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the Publisher : **P. BHUVANESAN, P. K. Brothers, SM. Street, Calicut-1, Kerala.**

Citation

The Award for the Best Book on Cinema of 1994 is given to **ABHINAYAM ANUBHAVAM** by **BHARAT GOPY** for his introspective and self-analytical first person account. Abhinayam Anubhavam is serious and wistful at times, as the actor weaves an intresting picture of his interaction with cinema and his colleagues in the medium. The book is as unusual as it is revealing.

भरत गोपी ने 1972 में फिल्मों में अभिनय प्रारंभ किया। इससे पहले 1960 से वे रंगमंच से जुड़े हुए थे। उन्हें **कोडियेट्टम** कथाचित्र के लिए 1977 में सर्वोत्तम अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला तथा उन्हें केरल राज्य के सर्वोत्तम अभिनेता का भी चार बार पुरस्कार मिला। भरत गोपी को 1985 के टोकियो फिल्म समारोह में **कट्टाथे किलिक्कोडु** कथाचित्र के लिए निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

भरत गोपी ने कोई 50 नाटक एवं 70 फिल्मों में अभिनय करने के साथ ही 5 नाटक लिखे हैं तथा 3 फिल्मों का निर्देशन भी किया है। उनकी फिल्म **यामनम्** को 1991 का सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार भी मिला।

रंगमंच एवं सिनेमा में उनके योगदान को देखते हुए उन्हें भारत सरकार ने 1991 में पद्मश्री की उपाधी से सम्बोधित किया। उन्हें 1993 में संस्कृति मंत्रालय तथा 1994 में केरला संगीत नाटक अकाडेमी से शिक्षावृत्ति प्राप्त हुई।

Bharat Gopy started acting in films in 1972 after having actively participated in Theatre Movement from 1960. He was awarded the National Best Actor in the film **Kodiyattam** in 1977. He was also awarded the State Best Actor of Kerala four times and the Special Jury Award at Tokyo in 1985 for the film **Kattathe Kilikkoodu**.

Other than having acted in over 50 plays and more than 70 films, he has also written 5 plays and has directed 3 films of which **Yamanam** in 1991 bagged the National Award for Best Film on Social Issues.

He was awarded the Padmashri in 1991 considering the services rendered in Theatre and Cinema. He has also been awarded the Senior Fellowship of the Cultural Ministry in 1993 and the Fellowship of the Kerala Sangeetha Nataka Academy in 1994.

सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक पुरस्कार

रश्मि दोराइस्वामी

समीक्षक : **रश्मि डोराइस्वामी** को स्वर्ण कमल तथा 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक का 1994 का पुरस्कार **रश्मि दोराइस्वामी** को उनके अनुभूतिक्षम और भारतीय एवं विदेशी चलचित्र के प्रशस्त विषयों पर गहरे विश्लेषण के लिए दिया गया है। उनके लेख न केवल खोजी और सूचनात्मक होते हैं तथापि एक विश्वास योग्य दृष्टि भी रखते हैं।

AWARD FOR THE BEST FILM CRITIC

RASHMI DORAISWAMY

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the Critic : **RASHMI DORAISWAMY**

Citation

The Award for the Best Film Critic of 1994 is given to **RASHMI DORAISWAMY** for her perceptive and indepth analysis of wide-ranging issues relating to cinema both in India and abroad. Her writing is not only well-researched and informative but also presents a convincing point of view.

रश्मि दोराइस्वामी ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में रूसी भाषा एवं साहित्य का अध्ययन किया। उन्होंने अपना डाक्टरीय शोध प्रबन्ध रूसी दार्शनिक मिखाइल बख्टिन पर लिखा। वे जामिया मिलिया इस्लामिया विश्व विद्यालय में रुसी पढ़ाती हैं और सिनेमाया पत्रिका की उप-संपादक भी हैं। उन्होंने सिनेमा एवं साहित्य पर असंख्य लेख लिखे हैं जो भारतीय एवं विदेशी सिनेमा के विभिन्न पहलुओं पर आधारित हैं। उनके ये लेख देश-विदेश के कई अखबारों एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित किए जा चुके हैं। सी. आई. एस. के एशियाई गणतंत्र राज्यों के सिनेमा पर रश्मि के लेख अंतर्राष्ट्रीय फिल्म गाइड (इंगलैंड) में और भारतीय सिनेमा पर सिनेमैक्शन (फ्रांस) और हवाई फिल्म स्टडी सर्कल में प्रकाशित हुए हैं।

Rashmi Doraiswamy has studied Russian language and literature at Jawaharlal Nehru University. Her doctoral dissertation was on Mikhail Bakhtin, the Russian philosopher. She teaches Russian at Jamia Millia Islamia. She is also Deputy Editor of Cinemaya, the Asian film quarterly. She has written extensively on literature and cinema. Her articles on cinema deal with a variety of themes, genres and styles that include Indian commercial and parallel cinema, Asian and Western cinema. These have been published in reputed newspapers and journals in India and abroad. Her writings on the cinema of the Asian republics of the CIS have appeared in the International Film Guide (England) and those on Indian cinema have been published in Cinemaction (France) and in the Hawaii Film Study Guide.

कथासार : कथाचित्र

Synopses : Feature Films

अभय

हिन्दी/रंगीन/132 मिनट

निर्माता: नैशनल सेन्टर ऑफ फिल्मस् फॉर चिल्ड्रन एंड यंग पीपल (एन'सीपी) **निर्देशक:** अन्नु कपूर **मुख्य अभिनेता:** नाना पाटेकर **मुख्य अभिनेत्री:** मुन मुन सेन **सह-अभिनेता:** बेन्जामिन गिलानी **बाल कलाकार:** एका लखानी **कैमरामैन:** सुदर्शन नाग **ध्वनि आलेखक:** विजय भोप **संपादक:** भास्कर सुन्दर **संगीत निर्देशक:** विशाल भारद्वाज

राणा का पुराना बंगला नायक साहब खरीद लेते हैं और अपने परिवार के साथ वहां रहने आ जाते हैं। उनके परिवार में उनकी पत्नी, दो शैतान बेटे तथा एक बेटी हैं।

उन्हें ये बताया जा चुका है कि राणा का भूत अब भी उस बंगले में घूमता है। ये परिवार डरता नहीं है बल्कि ये बच्चे भूत के बारे में जानने की कोशिश करते हैं।

राणा का भूत और उसके साथी, नायक साहब के परिवार को डराने की कोशिश करते हैं पर बच्चे उन्हें तंग कर देते हैं। नायक साहब को बीच में पड़कर उसे बचाना पड़ता है।

उनकी बेटी से राणा की दोस्ती हो जाती है। उसे पता चलता है कि राणा की भी एक बेटी थी जिसे राणा ने बहुत कम उम्र में खो दिया था। वो अपनी समझदारी से राणा की व्यथा को समझती है और राणा के भूत को आखिरकार शांति मिल जाती है।

ABHAY

Hindi/colour/132 min.

Producer: National Centre of Films for Children and Young People (N'CYP) **Director:** Annu Kapoor **Leading Actor:** Nana Patekar **Leading Actress:** Moon Moon Sen **Supporting Actor:** Benjamin Gillani **Child Artist:** Eka Lakhani **Cameraman:** Sudershan Nag **Audiographer:** Vijay Bhope **Editor:** Bhaskar Sunder **Music Director:** Vishal Bharadwaj

The old bungalow of the erstwhile Rana has just been purchased by Mr. Nayak. His family comprising of his wife, two naughty sons and a young daughter, who is a born painter, shift into the house.

The new inmates have been duly warned that the place is haunted and that the old Rana's spirit moves around mysteriously. But that does not frighten the family. In fact the youngsters take it upon themselves to find out more about the ghost.

The ghost and his companion ghosts work out the details of terrifying the family and scaring them away. But the children, on the contrary, teach the Rana's ghost a lesson, and Mr. Nayak has to intervene to save the ghost.

The young girl, with her sensitivity and understanding, finally provides the healing touch to the misunderstood ghost who, having lost his young daughter, yearns for love and sympathy. He confides his sorrow to her, and through them finally finds his peace.

आमोदिनी

बंगला/रंगीन/105 मिनट

निर्माता: एन.एफ.डी.सी. **निर्देशक/पटकथा लेखक/संगीत निर्देशक/गीतकार:** चिदानन्द दासगुप्ता **मुख्य अभिनेता:** पिजुश गांगूली **मुख्य अभिनेत्री:** रचना बैनर्जी **सह-अभिनेता:** अशोक मुखर्जी **सह-अभिनेत्री:** अनुश्री दास **बाल कलाकार:** तथागत सान्याल **ध्वनि आलेखक:** ज्योति प्रसाद चैटर्जी **संपादक:** उज्जल नन्दी **कला निर्देशक:** रूपचंद कुंडु **वेशभूषाकार:** सुप्रिया दासगुप्ता **पार्श्व गायिका:** शर्मिला राय-पोम्मोट

एक अमीर ज़मीन्दार की बेटी आमोदिनी का विवाह एक विरोधी ज़मीन्दार के बेटे से तय किया जाता है। लेकिन, अपने घराने का बदला लेने के लिए विवाह के दिन वह नहीं पहुंचता। आमोदिनी को लग्नभ्रष्टा होने से बचाने के लिए घर के 15 वर्षीय नौकर पुन्डु के साथ उसका विवाह कर दिया जाता है। पुन्डु को आमोदिनी अपने जीवन या कमरे में न आने देने का ठान लेती है। विवाह की रात ही पुन्डु को आमोदिनी एक भारी चांदी के सिन्दूर-दान से मारती है। परिवार के बदमाश लड़के पुन्डु को पीटकर घर से बाहर निकाल देते हैं। पुन्डु बदले की ठानकर चला जाता है। वह कलकत्ता से अमीर आदमी बनकर गाँव लौटता है, अपने लिए एक शानदार भवन बनवाता है और लोगों को पैसे उधार देकर मदद करता है। वह आमोदिनी को अपनी पत्नी मानने से इन्कार देता है पर उसे भुला नहीं पाता।

आमोदिनी पुन्डु के घर आकर, उसकी दूसरी पत्नी राशमोनी को बहुत मारती है। पुन्डु घर आकर उन दोनों को गले मिलता देख बहुत खुश होता है और अपनी सारी परेशानी भूल जाता है।

AMODINI

Bengali/colour/105 min.

Producer: NFDC **Director/Screenplay Writer/Music Director/Lyricist:** Chidananda Dasgupta **Leading Actor:** Pijush Ganguly **Leading Actress:** Rachana Banerjee **Supporting Actor:** Ashoke Mukherjee **Supporting Actress:** Anusree Das **Child Artist:** Tathagata Sanyal **Audiographer:** Jyoti Prasad Chatterjee **Editor:** Ujjal Nandy **Art Director:** Rupchand Kundu **Costume Designer:** Supriya Dasgupta **Female Playback Singer:** Sharmila Roy-Pommot

Amodini, the only child of a rich zamindar, is to be married to the son of a rival zamindar. But to avenge family rivalry, he does not turn up at the auspicious hour. To save Amodini from becoming *lagnabhrastha* she is married to Pundu, a young servant of the house. Amodini swears not to let him enter her room or life. On their first night, Amodini hits Pundu with a heavy silver sindoor-pot. He is later beaten up by a few pranksters of the family and thrown out of the house. Thus, insulted Pundu swears revenge before walking away.

Pundu makes a fortune in Calcutta and returns flaunting his money. He builds himself a mansion and helps the villagers by lending money to them. He refuses to accept Amodini as his wife but is unable to forget his yearning for her.

Amodini bursts into his home and beats up Rashmoni, his second wife. But Pundu returns home to find Rashmoni and Amodini hugging each other. His tension dissipates and he delighted.

द्रोहकाल

हिन्दी/रंगीन/105 मिनट

निर्माता/निर्देशक/पटकथालेखन/ कैमरामैन: गोविन्द निहालिनी **मुख्य अभिनेता:** ओमपुरी **मुख्य अभिनेत्री:** मीता वशिष्ट **सह-अभिनेता:** आशीष विद्यार्थी **सह-अभिनेत्री:** किटु गिदवानी **ध्वनि आलेखक:** हेमन्त साल्वी/हितेन्द्र घोष **संपादक:** दिलीप पंडा **कला निर्देशक:** नितिन देसाई **वेशभूषाकार:** पिया बेनेगल **संगीत निर्देशन:** वनराज भाटिया

अभय सिंह और अब्बास लोधी को चुनकर एक आतंकवाद विरोधी दल का गठन किया जाता है। एक गुप्त कार्रवाई धनुष के दौरान भद्रा द्वारा चलाए जाने वाले आतंकवादी दल को पकड़ने का जिम्मा अब्बास को दिया जाता है।

शिव और आनन्द बड़ी चालाकी से भद्रा के दल में शामिल हो जाते हैं। शिव भद्रा के मुख्य सचिवों में शामिल हो जाता है पर आनन्द पकड़ा जाता है और आत्महत्या कर लेता है।

भद्रा भी एक मुठभेड़ में पकड़ा जाता है पर पुलिस उसको पहचान नहीं पाती। अभय सिंह पूछताछ करके भी कुछ नहीं जान पाता। आतंकवादी बेगुनाह लोगों पर गोली चलाना शुरू करते हैं और रक्षा मंत्री को शहर में आते ही मार दिया जाता है। हत्यारा पकड़ा जाता है और वह भद्रा को पहचान लेता है पर उसकी हत्या हो जाती है।

भद्रा हिरासत से भाग जाता है और अभय को मजबूरन भद्रा के साथ मिल जाना पड़ता है। उसे उत्पीड़ित करके धनुष कार्रवाई के बारे में पता चलाया जाता है। अब्बास को पकड़कर जब वह कुछ नहीं बताता तो उसकी हत्या कर दी जाती है। अभय का हौंसला टूट जाता है पर वह भद्रा को मारकर अपना काम पूरा करता है।

DROHKAAL

Hindi/colour/105 min.

Producer/Director/Screenplay Writer/ Cameraman: Govind Nihalani **Leading Actor:** Om Puri **Leading Actress:** Mita Vashist **Supporting Actor:** Ashish Vidyarthi **Supporting Actress:** Kitu Gidwani **Audiographer:** Hemant Salvi/ Hitindra Ghosh **Editor:** Dilip Panda **Art Director:** Nitin Desai **Costume Designer:** Pia Benegal **Music Director:** Vanraj Bhatia

Abhay Singh and Abbas Lodhi have been picked to form the Anti-Terrorist Squad (ATS). A covert operation Dhanush is planned against the most active terrorist gang of Bhadra. Abbas is incharge of planning and training.

Shiv and Anand are chosen and planted in Bhadra's gang. Within two years Shiv rises in hierarchy but Anand is caught and commits suicide.

Bhadra is arrested by the ATS but he is unknown to the police. Abhay Singh commences interrogation. The terrorists strike back by firing indiscriminately and killing innocent people. The Defence Minister visits the city to solve the terrorist problems but he is assasinated. The culprit is arrested who identifies Bhadra but is murdered in the cell. Bhadra escapes and Abhay is made to join Bhadra under compulsion of the surrounding situation and is tortured to reveal out the details of operation Dhanush. Abbas is abducted by Bhadra who dies before saying a word. Abhay is broken but finally he vanquishes Bhadra and redeems himself in a most unexpected manner.

इंगलिश, अॅगस्ट

अंग्रेजी/रंगीन/116 मिनट

निर्माता: अनुराधा पारिख **निर्देशक/संपादक:** देव बेनेगल **पटकथा लेखक:** उपमन्यु चैटर्जी/देव बेनेगल **मुख्य अभिनेता:** राहुल बोस **सह-अभिनेता:** सलीम शाह **सह-अभिनेत्री:** तन्वी आज़मी **ध्वनि आलेखक:** विक्रम जोग्लेकर **कला निर्देशक:** समीर चंदा **वेशभूषाकार :** पिया बेनेगल **संगीत निर्देशक :** डी.वुड/विक्रम जोग्लेकर **प्रभाव सृजक :** राम मोहन

इंगलिश, अॅगस्ट एक युवा अनिच्छुक सरकारी सेवक की एक हास्यपूर्ण तथा अप्रासंगिक साल की कहानी है जब उसे एक साल की जिला प्रशासन के प्रशिक्षण के लिए देश के एक छोटे और सबसे गर्म शहर मदना में भेजा जाता है। जिस प्रकार सब उच्च स्तरीय परिवारों में, स्वाधीनता के बाद जन्मे भारतीय शहरी के साथ होता है- अगस्त्य (अॅगस्ट) सेन बोलता और सोचता अंग्रेजी में है। उसे बॅब डाइलान के गाने रॉक और जॉज़ संगीत अच्छे लगते हैं। वह अपने विलास के लिए कविता और मार्कस औरेलियस पढ़ता है। अगस्त्य एक प्रशासनिक सेवा का अफसर भी है जो देश के सरकारी सेवकों का सबसे प्रभावशाली और शक्तिशाली धारा है। उसके श्रेणी और परिवार के पृष्ठभूमि में तथा उसके शिक्षा और पालन-पोषण से लगता है कि वह भारत के सरकारी शासन के विशिष्ट जनगण का एक सदस्य है।

ENGLISH, AUGUST

English/colour/116 min.

Producer: Anuradha Parikh **Director/ Editor:** Dev Benegal **Screenplay Writer:** Upamanyu Chatterjee/Dev Benegal **Leading Actor:** Rahul Bose **Supporting Actress:** Salim Shah **Supporting Actress:** Tanvi Azmi **Audiographer:** Vikram Joglekar **Art Director:** Samir Chanda **Costume Designer:** Pia Benegal **Music Director:** D. Wood/Vikram Joglekar **Special Effects Creator:** Ram Mohan

English, August is the humorous and irreverent story of a watershed year in the life of a young and reluctant civil servant dispatched to Madna- the hottest small town in the country, where he will be undergoing an year's training in district administration. Like most well-to-do, urban Indians-particularly these born after independence-Agastya (August) Sen speaks and thinks in English. He listens to Bob Dylan, Rock and Jazz; likes poetry, and reads Marcus Aurelius for pleasure. He is also an Administrative Service Officer, a member of the most influential and powerful cadre of civil servants in the country. From his class and family background; his education and upbringing- he seems destined to be one of modern India's governing elite.

हागोरोलोइ बोहू दूर

असमिया/रंगीन/106 मिनट

निर्माता: शैलाधर बरुआ/जाह्नु बरुआ **निर्देशक/पटकथा लेखन:** जाह्नु बरुआ **मुख्य कलाकार :** बिष्णु खारगोरिया **सह-अभिनेता :** अरुन नाथ **सह अभिनेत्री:** कश्मीरी साइकिआ बरुआ **बाल कलाकार:** सुशांत बरुआ **कैमरामैन:** पी. राजन **ध्वनि आलेखक:** जतिन शर्मा **संपादक:** हुए-एन-बरुआ **कला निर्देशक:** फटिक बरुआ **वेशभूषाकार :** गायत्री बरुआ **संगीत निर्देशक:** सत्य बरुआ

पुवल असम के नेमुगिरी गाँव से बहने वाली दिहिंग नदी का एक माझी है। उसका एक अनाथ पोता है और पुवल उसे पढ़ा-लिखा कर कुछ बनाना चाहता है ताकि उसे माझी न बनना पड़े।

पुवल का बड़ा बेटा हेमन्त गुवाहाटी में नौकरी करता है। वह पुवल को अपने पास रहने बुलाता है। पुवल की परेशानी भी दूर हो जाती है क्योंकि उसे पता चलता है कि उसके गाँव से दिहिंग नदी पर पुल बन रहा है। शहर जाने पर उसे पता चलता है कि हेमन्त उससे सिर्फ एक बिक्री के सिलसिले में कागज पर हस्ताक्षर करवाना चाहता है क्योंकि कर मुक्त होने के लिए हेमन्त ने खरीद के समय पुवल के नाम से खरीदा था। दुखी पुवल अपने पोते के साथ नेमुगुरि वापस आकर जब दिहिंग पर पुल बनता देखता है तो उसकी बसी हुई दुनिया ही बिखर जाती है।

HKHAGOROLOI BOHU DOOR

Assamese/colour/106 min

Producer: Sailadhar Barooah/Jahnu Barua **Director/Screenplay Writer:** Jahnu Barua **Leading Actor:** Bishnu Kharghoria **Supporting Actor:** Arun Nath **Supporting Actress:** Kashmiri Saikia Baruah **Child Artist:** Sushanta Barooah **Cameraman:** P. Rajan **Audiographer:** Jatin Sarma **Editor:** Hue-En-Barua **Art Director:** Phatik Baruah **Costume Designer:** Gayatri Barua **Music Director:** Satya Baruah

Puwal, a boatman of Nemuguri village on the banks of river Dihing in Assam does not want his orphaned grandson Hkhuman to follow his footsteps. He wants for Hkuman the best of education to survive in this fast changing world.

Puwal's eldest son Hemanta works and lives in Guwahati. He is overjoyed when Hemanta invites him to the city to stay with his family because in Nemuguri there is talk of a bridge being built across the river. That would mean end of Puwal's livelihood.

His joy is shortlived as he comes to know that Hemanta is only interested in getting him sign a sale deed of a property which years ago Hemanta had purchased in Puwal's name to avoid litigation.

Dismayed, he comes back to Nemuguri to find the bridge over Dihing commissioned. His world crumbles around him.

हम आपके हैं कौन

हिन्दी/रंगीन/193 मिनट

निर्माता: राजश्री प्रोडक्शनस् **निर्देशक/पटकथा लेखक:** सूरज आर. बर्जातिया **मुख्य अभिनेता:** सलमान खान **मुख्य अभिनेत्री:** माधुरी दीक्षित **सह-अभिनेता:** अनुपम खेर **सह-अभिनेत्री:** रेनुका शाहाने **कैमरामैन:** राजन किनागी **ध्वनि आलेखक:** सी. एस. नारायण राव **संपादक:** मुख्तार अहमद **कला निर्देशक:** बीजोन दासगुप्ता **संगीत निर्देशक:** राम लक्ष्मण **गीतकार:** रविन्द्र रावल/देव कोहली **पार्श्व गायक:** एस.पी. बालसुब्रह्मनियम **पार्श्व गायिका:** लता मंगेशकर **नृत्य संयोजक:** जय बोराडे

राजेश और प्रेम को उनके चाचा कैलाशनाथ ने पाला है। राजेश का विवाह प्रोफेसर चौधरी और कमलादेवी की बड़ी बेटी पूजा से हो जाती है। उनकी छोटी पुत्री है निशा जो बहुत ही शैतान और चंचल है।

पूजा के आने से घर में रौनक हो जाती है। पूजा के गर्भवती होने पर निशा गोद भराई की रस्म के लिए आती है और बच्चे के जन्म तक रुक जाती है। इसी दौरान प्रेम और निशा का प्यार बढ़ता है। निशा अपने घर चली जाती है और प्रेम पूजा को उसके पिता के घर छोड़ने जाता है। रास्ते में वह अपनी पसंद पूजा को बताता है। पर सीढ़ियों से गिरकर पूजा की मृत्यु हो जाती है।

निशा के पिता उसकी शादी राजेश से करने का प्रस्ताव रखते हैं ताकि वह पूजा के बच्चे को सम्भाल सके। प्यार की परीक्षा में प्रेम और निशा अपने प्यार की बली चढ़ा देते हैं मगर शादी के वक्त पर राजेश को सच्चाई का पता चल जाता है और वह अपने बच्चे को निशा की गोद में डालकर प्रेम और निशा की शादी करवा देता है।

HUM AAPKE HAIN KOUN

Hindi/colour/193 min.

Producer: Rajshri Productions **Director/Screenplay Writer:** Sooraj R. Barjatya **Leading Actor:** Salman Khan **Leading Actress:** Madhuri Dixit **Supporting Actor:** Anupam Kher **Supporting Actress:** Renuka Shahane **Cameraman:** Rajan Kinagi **Audiographer:** C.S. Narayan Rao **Editor:** Mukhtar Ahmed **Art Director:** Bijon Das Gupta **Music Director:** Raam Laxman **Lyricist:** Ravinder Rawal/Dev Kohli **Male Playback Singer:** S.P. Balasubrahmanyam **Female Playback Singer:** Lata Mangeshkar **Choreographer:** Jay Borade

Rajesh and Prem are brought up by uncle Kailashnath. Rajesh is married to Pooja daughter of Prof. Chaudhary and Kamaladevi. Naughty and carefree, Nisha is Pooja's younger sister.

With Pooja's coming joy knows no bounds for the household. She conceives and Nisha attends the traditional function and stays on till the child's birth. The love between Prem and Nisha blossoms. Nisha goes back home and Prem takes Pooja to her parents place for a visit. On the way, he bares his heart to a delighted Pooja. But Pooja falls down the stairs and dies.

For the future of the motherless child Nisha's father suggests that she take Pooja's place. Love it at test and the lovers decide to sacrifice their love. Rajesh comes to know the truth at the nick of the moment. He puts his child into Nisha's arms and unites the two lovers.

KAADHALAN

Tamil/colour/160 min.

Producer: K.T. Kunjumon **Director/ Screenplay Writer:** Shankar **Leading Actor:** Prabhu Deva **Leading Actress:** Nagma **Supporting Actor:** Vadivelu **Cameraman:** Jeeva **Audiographer:** Lakshmi Narayanan **Editor:** Lenin V.T. Vijayan **Art Director:** Thotta Tharani **Costume Designer:** Kasi **Music Director:** A.R. Rahman **Lyricist:** Vairamuthu **Animator:** S.T. Venki **Choreographer:** Sundaram-Raju **Special Effects Creator:** Murugesh

This is a story of love between Prabhu, a college Students' Union Chairman and Sruthi, a Bharatnatyam dancer and daughter of a millionaire Kakarla Sathya Narayana. They meet when Prabhu goes to Kakarla's bungalow to invite him for a college function.

As their love blossoms, Kakarla objects and he separates them by making trouble. But Kakarla is murdered by his own henchman Mallikarjun due to some misunderstanding. With Kakarla's death, his daughter Sruthi and Prabhu are together again and get married to live happily ever after. This marks the end of the love story between a rich and a poor.

कादलन

तमिल/रंगीन/160 मिनट

निर्माता: के.टी. कुंजोमोन **निर्देशक/पटकथा लेखक:** शंकर **मुख्य अभिनेता:** प्रभु देवा **मुख्य अभिनेत्री:** नगमा **सह-अभिनेता:** वादिवेलु **कैमरामैन:** जीवा **ध्वनिआलेखक:** लक्ष्मी नारायणन **संपादक:** लेनिन वी.टी. विजयन **कला निर्देशक:** थोट्टा थरानी **वेशभूषाकार :** कासी **संगीत निर्देशक:** ए.आर. रहमान **गीतकार:** वैरामुथु **एनिमेटर:** एस.टी. वेन्की **नृत्य संयोजक:** सुंदरम-राजू **प्रभाव सृजक:** मुरुगेश

ये एक कॉलेज के छात्र संगठन के अध्यक्ष प्रभु और श्रुति, एक भरत-नट्यम नृत्यांगना और एक करोड़पति, काकर्ला सत्य नारायण, की बेटी की प्रेम कहानी है। उनकी मुलाकात काकर्ला के घर में होती है जब कॉलेज के समारोह के लिए प्रभु काकर्ला को आमन्त्रण देने जाता है।

उनका प्यार बढ़ता है और काकर्ला के आंखों का कांटा बन जाता है। वह अपनी चालाकी से उन दोनों को अलग करने में सफल हो जाता है। पर एक गलतफहमी के कारण काकर्ला का सेवक मल्लीकर्जन अपने मालिक की हत्या कर देता है। काकर्ला की मृत्यु के बाद श्रुति और प्रभु फिर से मिल जाते हैं और शादी के बाद आनन्दपूर्वक रहने लगते हैं। इस तरह एक अमीर और गरीब की प्रेम कहानी का अन्त होता है।

कारुथमम्मा

तमिल/रंगीन/120 मिनट

निर्माता: वेट्रीवेल आर्ट क्रीयेशनस **निर्देशक/पटकथा लेखक:** भारतीराजा **मुख्य अभिनेता:** राजा **मुख्य अभिनेत्री:** राजश्री **सह-अभिनेता:** पेरीयार्धसन **सह-अभिनेत्री:** महेश्वरी **बाल कलाकार:** राजीना **कैमरामैन:** बी. कन्नन **ध्वनि आलेखक:** मूर्ती **संपादक:** के. पालनिवेलु **वेशभूषाकार:** के. शंकर **संगीत निर्देशक:** ए.आर. रहमान **गीतकार:** वैरामुथु **पार्श्व गायक:** मालासिंह वासुदेवन/उन्नीकृष्णन/उन्नीमेनन/भारतीराजा **पार्श्व गायिका:** सोर्नोलता/सुजाता/टी.के. काला **नृत्य संयोजक:** बासुवराजु **प्रभाव सृजक:** मनोहरण

मूकाइयां की दो बेटियाँ हैं- पेरियाकन्नी और कारुथम्मा। उसके घर एक तीसरी बेटी होती ही वह उसकी हत्या करने दे देता है। सूसाई, एक स्कूल अध्यापक बच्चे को गोद ले लेता है।

गाँव में स्टीफेन नाम का एक पशुरोग चिकित्सक आता है जिसे कारुथम्मा से प्यार हो जाता है। पेरीयाकन्नी का विवाह मौसेरे भाई थावसी से होती है। मौसी कल्ली उसकी बेटी को मार डालती है तो कारुथम्मा और स्टीफेन उन्हें गिरफ्तार करवा देते है। महिला चिकित्सक रोज़ी का स्टीफेन से मेल-जोल देखकर कारुथम्मा टूट जाती है।

थावसी राजनीतिज्ञ चेल्लामुथु की सहायता से पुलिस हिरासत से छूट कर कारुथम्मा से विवाह कर लेता है जिससे वह गवाही न दे सके। वह अपने पिता की भी हत्या कर देता है ताकि वो गवाही न दे सके।

रोज़ी को उसके पिता सूसाई उसके असली परिवार के बारे में बताते हैं। रोज़ी अपनी बहन के लिए अपना प्यार कुर्बान कर देती है। चेल्लामुथु और थावसी की हत्या कर कारुथम्मा जेल जाती है और स्टीफेन उसका इंतज़ार करता है।

KARUTHAMMA

Tamil/colour/120 min.

Producer: Vetrivel Art Creations **Director/Screenplay Writer:** Bharathirajaa **Leading Actor:** Raja **Leading Actress:** Rajasri **Supporting Actor:** Periyardhasan **Supporting Actress:** Maheswari **Child Artist:** Rajina **Cameraman:** B. Kannan **Audiographer:** Moorthy **Editor:** K. Palanivelu **Costume Designer:** K. Sankar **Music Director:** A.R. Rahuman **Lyricist:** Vairamuthu **Male Playback Singer:** Malasih Vasudevan/Unni Krishnan/Unni Menon/Bharathirajaa **Female Playback Singer:** Sornalatha/Sujatha/T.K. Kala **Choreographer:** Basuvaraju **Special Effects Creator:** Manoharan

Mookaiyan has two daughters Periyakanni and Karuthamma. Soosai adopts the third girl of Mookaiyan given for killing. Stephan, a veterinary doctor, meets Karuthamma and falls in love.

Periyakanni is married to Thavasi, son of her aunt Kalli. They torture her and kill her baby and are arrested with Karuthamma and Stephen's help.

Rosy, a lady doctor in love with Stephen, comes to the village and Karuthamma's life falls apart.

Thavasi, with the help of Chellamuthu, comes out on bail and forcibly marries Karuthamma. He kills his father to stop him from appearing in court.

Rosy is informed by Soosai that she is actually Mookaiyan's daughter. She sacrifices her love for Stephen. Karuthamma kills Chellamuthu and Thavasi and goes to jail while Stephen awaits her return.

कोचानियान

मलयालम/रंगीन/105 मिनट

निर्माता: बुशुरा शाहुदीन **निर्देशक:** सतीश वेंगनूर **पटकथा लेखक:** ए. शाहुदीन/सतीश वेंगनूर **सह-अभिनेता:** नरेन्द्र प्रसाद **मुख्य अभिनेत्री:** माया **सह-अभिनेता:** ए. शाहुदीन **सह-अभिनेत्री:** बेबी सुन्द्रन **बाल कलाकार:** मास्टर विनीत **कैमरामैन:** वी. अराविन्दक्षन **ध्वनि आलेखक:** कृष्ण उन्नी **संपादक:** के.पी.एस. उन्नीथन **कला निर्देशक:** रमेश **वेशभूषाकार:** तुल्सी **संगीत निर्देशक:** मोहन सितारा **प्रभाव सृजक:** राजू मर्तन्द्रम

ये एक लड़के की कहानी है जिसे अपने माता-पिता के प्यार और स्नेह का मान नहीं मालूम। कोचानी को लगता है कि क्योंकि सुमोम उससे बड़ी है और ऊंची कक्षा में पढ़ती है उसके माता-पिता उससे ज्यादा प्यार करते हैं। कोचानी जब शैतानी करता है तो उसके पिता उसे सज़ा देते हैं। कोचानी अपनी दादी को बहुत प्यार करता है।

वह सहपाठी नाज़र और उसकी बहन नाज़ीमा से दोस्ती कर लेता है जिनसे उसे प्यार मिलता है।

अपनी दादी की मृत्यु और उसके परम मित्र अपने परिवार के साथ किसी दूसरे स्थान पर चले जाने से उसे बहुत दुख होता है।

वह बीमार हो जाता है और अपने माता-पिता की अपनी ओर ध्यान देखकर खुश हो जाता है। इतना कि वह दवाई भी नहीं लेता और उसे अस्पताल ले जाना पड़ता है। रास्ते में उसे अपने पिता के प्यार और स्नेह का एहसास होता है और उसे पछतावा होता है।

KOCHANIYAN

Malayalam/colour/105 min.

Producer: Bushura Shahudeen **Director:** Satheesh Venganoor **Screenplay Writer:** A. Shahudeen/Satheesh Venganoor **Leading Actor:** Narendra Prasad **Leading Actress** Maya **Supporting Actor:** A. Shahudeen **Supporting Actress:** Baby Surendran **Child Artist:** Master Vineeth **Cameraman:** V. Aravindakshan **Audiographer:** Krishnan Unni **Editor:** K.P.S. Unnithan **Art Director:** Ramesh **Costume Designer:** Thulasi **Music Director:** Mohan Sitara **Special Effects Creator:** Raju Marthndram

Kochani is a boy who could not feel the actual depth of love and affection of his parents. He is sensitive and vulnerable and reacts to even minor disparities.

Kochani becomes jealous as his father pays more attention to his daughter studying in a higher standard. Kochani is punished by his father for his naughty behaviour. He loves his grandmother to a great extent.

He makes friends with his classmate Nazer and his sister Nazima from whom he gets the fragrance of love.

Kochani is shocked at the death of his grandmother and before he can recover his friends family also shift their house to a distant place.

Kochani falls ill and to his surprise finds his parents paying great attention to him. Happy as he was, he did not have his medicine and so had to be admitted to the hospital. Seeing his parents worry for him, he repents.

कोट्टरेशी कनासु

कन्नड़/रंगीन/ 133 मिनट

निर्माता: जी. नन्दकुमार **निर्देशक/पटकथा लेखक:** नागाथीहल्ली चन्द्रशेखर **मुख्य अभिनेता/ बाल कलाकार:** मास्टर विजय राघवेन्द्र **मुख्य अभिनेत्री:** उमाश्री **सह-अभिनेता:** करी बसावलह **सह-अभिनेत्री:** बी. जयश्री **कैमरामैन:** सन्नी जोसेफ **ध्वनि आलेखक:** अरवामुदन **संपादक:** सुरेश उर्स **कला निर्देशक:** अप्पाइयाह **वेशभूषाकर:** सी. एस. रमेश **संगीत निर्देशक/ पार्श्व गायक :** सी. अस्वथ **गीतकार:** डॉ. एच.एस. वेंकटेश मूर्ती **पार्श्व गायिका:** मंजुला गुरुराज **नृत्य संयोजक:** मदन **प्रभाव सृजक:** शंकर

कोटरा एक निम्न जाति का स्पंदमान लड़का है जिसकी चतुराई हेतु सारा गाँव उससे प्यार करता है। कोटरा सातवीं कक्षा उत्तीर्ण होने पर उसके जाति के लोग खुशियां मनाते हैं जो उच्च जाति को अच्छा नहीं लगता। कोटराऔर उसके पिता को नौकरी से निकाल दिया जाता है। कोटरा के दोस्त भी उससे दूर हो जाते हैं। ये सब देखकर कोटरा उच्च विद्यालय न जाने का फैसला करता है जिससे उसके माता-पिता का सपना टूट जाता है।

एक दिन कोटरा के मन में पढ़ने की इच्छा फिर से जागती है। उसके जाति के लोग खुश हो जाते हैं पर उच्च जाति के लोग उसके स्कूल में भर्ती में बाधा डालते हैं। कोटरा के पिता इसके विरोध में आमरण उपवास करते हैं। गाँव के नेता कोटरा को शहर ले जाते हैं सरकार से न्याय दिलाने के लिए।

कोटरा मंत्री का ध्यान आकर्षित कर उच्च विद्यालय में दाखिला लेकर वापस आता है।

KOTTRESHI KANASU

Kannada/colour/133 min

Producer: G. Nandakumar **Director/ Screenplay Writer:** Nagathihalli Chandrashekhar **Leading Actor/Child Artist:** Master Vijaya Raghavendra **Leading Actress:** Umashree **Supporting Actor:** Kari Basavaiah **Supporting Actress:** B. Jayashree **Cameraman:** Sunny Joseph **Audiographer:** Aravamudan **Editor:** Suresh Urs **Art Director:** Appaiah **Costume Designer:** C.S. Shobha **Music Director/Male Playback Singer:** C. Aswath **Lyricist:** Dr. H.S. Venkatesha Murthy **Female Playback Singer:** Manjula Gururaj **Choreographer:** Madan **Special Effects Creator:** Shankar

Kotra is a vibrant young boy belonging to the lower caste, loved and admired by the entire village-even the upper caste for his intelligence. Kotra's passing the 7th standard is celebrated with gusto among lower caste which hurts the pride of the upper caste. Kotra and his father lose their jobs. Even his friends move away making him lonely and desolate. Kotra decides not to join High School thinking that normalcy would be restored, but his parents dreams are shattered.

Kotra's desires to pursue his studies rekindles. Their community greets his decision but the upper caste try to put obstacles to his admission. To fight for justice Kotra's father goes on a fast unto death. The local leaders take Kotra to city to seek justice through Govt. officials.

Kotra attracts the attention of the Minister and gets admission in the High School.

क्रान्तिवीर

हिन्दी/रंगीन/160 मिनट

निर्माता/निर्देशक : मेहुल कुमार **मुख्य अभिनेता :** नाना पाटेकर **सह-अभिनेता :** परेश रावल **सह-अभिनेत्री:** डिम्पल कपाडिया **संपादक :** युसुफ शइख

क्रान्तिवीर प्रताप नाम के एक नौजवान की कहानी है। स्वतंत्रता सेनानी भीष्मनारायण तिलक को अपने पोते प्रताप से बड़ी उम्मीदें थीं, बड़ी आशाएं थीं पर वही प्रताप निकम्मा निकलता है और उसको हरकतों का पता जब दादा को लगता है तो वे सदमें से मारे जाते हैं। प्रताप को उसकी माँ घर से निकाल देती है।

शहर में प्रताप छोटे अतुल को बचाकर उसके पिता लक्ष्मीदास की आँखों में बस जाता है और अपने लिए एक ठिकाना बना लेता है। बड़ा होकर अतुल शहर के नामी बिल्डर योगराज की बेटी ममता से शादी के सपने देखता है और योगराज लक्ष्मीदास की ज़मीन के लालच में राज़ी हो जाता है। योगराज भ्रष्ट नेता, पुलिस और गुण्डों के मदद से बस्ती में आग लगवा देता है। हज़ारों लोग घर से बेघर हो जाते हैं।

मेघा दीक्षित, एक निडर पत्रकार, प्रताप की सोई आत्मा को जगाती है और प्रताप क्रान्ति लाने के रास्ते पर क्रान्तिवीर बन जाता है।

KRANTIVEER

Hindi/colour/160 min.

Producer/Director: Mehul Kumar **Leading Actor:** Nana Patekar **Supporting Actor:** Paresh Rawal **Supporting Actress:** Dimple Kapadia **Editor:** Yusuf Shaikh

Krantiveer is the story of Pratap, a man without any motivation, aim or direction in life. He is the grandson of freedom fighter Bhishma Narayan Tilak who died of heart break because Pratap does all the wrong things. Pratap's mother throws him out of the house. He is aware of the plight of society around him,but like millions of others he takes things as they are and is too lazy to fight for a cause.

Megha Dixit, a journalist, is absolutely opposite in nature to Pratap. She is always ready to fight for the cause of common man. She tries to instil a sense of duty in Pratap but does not succeed. They both live in a Basti owned by Laxmidas. Pratap and Atul, son of Laxmidas are fast friends. Atul is in love with Mamta, daughter of notorious builder Yograj.

Yograj traps Laxmidas in his plan and with the help of politicians, police and underworld Don Chatur singh engineers a communal riot in Laxminagar. They want to displace thousands of poor from their lands and build huge complexes there. The heat of Megha's words turn the spark in Pratap into a volcano. He has stood up to fight for a cause.

मम्मो

हिन्दी/रंगीन/130 मिनट

निर्माता: एन. एफ. डी. सी./दूरदर्शन **निर्देशक:** श्याम बेनेगल **पटकथा लेखक:** खालिद मोहम्मद **मुख्य अभिनेता:** रजत कपूर **मुख्य अभिनेत्री :** फरीदा जलाल **सह-अभिनेत्री :** सुरेखा सीकरी रेगे **बाल कलाकार :** अमित फाल्के **कैमरामैन:** प्रसन्न जैन **ध्वनिआलेखक :** अश्विन बलसावर **संपादक:** समीम सिन्हा **कला निर्देशक:** समीर चन्दा **वेशभूषाकार :** पिया बेनेगल **संगीत निर्देशक:** वनराज भाटिया **गीतकार:** गुल्ज़ार **पार्श्व गायक:** जगजीत सिंह

मम्मो महमूद बेगम की बहनों का उन्हें दिया हुआ नाम है। मम्मो लाहोर में ब्याही जाती है और देश बंटवारे के समय उसे अपने पति के साथ पाकिस्तान जाना पड़ता है। बच्चे न होने के बावजूद मम्मो अपने पति के साथ बहुत खुश थी, पर उनके अचानक मृत्यु के बाद उनके घरवाले मम्मो को जब सम्पत्ति के लिए घर से निकाल देते हैं तब वो अपनी बहन फइयाज़ी के पास बम्बई आ जाती है। फइयाज़ी के 13 वर्षीय अनाथ पोते के साथ उसे लगाव हो जाता है और वह उनके साथ ही रहना चाहती है। कुछ दिन के लिए वीसा बढ़वाकर और फिर वह दलाल को पैसे देकर रहने की व्यवस्था करती है।

वह दलाल पकड़ा जाता है और मम्मो जैसे विदेशियों को 24 घंटों के अंदर पाकिस्तान भेज दिया जाता है जहाँ मम्मो का न कोई घर न सगा-संबंधी है।

MAMMO

Hindi/colour/130 min.

Producer: NFDC/Doordarshan **Director:** Shyam Benegal **Screenplay Writer:** Khalid Mohamed **Leading Actor:** Rajat Kapoor **Leading Actress:** Farida Jalal **Supporting Actor:** Surekha Sikri Rege **Child Artist:** Amit Phalke **Cameraman:** Prasann Jain **Audiographer:** Ashwyn Balsaver **Editor:** Aseem Sinha **Art Director:** Samir Chanda **Costume Designer:** Pia Benegal **Music Director:** Vanraj Bhatia **Lyricist:** Gulzar **Male Playback Singer:** Jagjit Singh

Mammo is a nickname given to Mehmood Begum by her two sisters. Married to a Lahorian, she becomes a Pakistani citizen after partition. With no children, Mammo has a happy married life but after her husband's sudden demise, she is left to the mercy of his relatives. She is thrown out of the house, property being the reason. With no other relatives in Pakistan, she procures a visitor's visa and comes to her sister, Fayyazi in Bombay. Mammo loves Fayyazi's thirteen year old orphaned grandson and wants to spend her rest of the life with them. She manages to extend her Visa for some time and then pays a tout to ensure her stay.

The tout is arrested and the illegal foreigners are rounded up. Within twentyfour hours, Mammo is deported by train to Pakistan where she has no friends or relatives and not even a place to live.

मायोफी गी माचा

मणिपुरी/रंगीन/91 मिनट

निर्माता: थौयांगबा/थौंगम्बा **निर्देशक:** ओकेन अमाकचम **पटकथा लेखक:** एम.के. बिनोदिनी **मुख्य अभिनेता:** माखोन मनि **मुख्य अभिनेत्री:** आर.एस. जोएसी **सह-अभिनेता:** नरेन्द्र निनगोम्बा **सह-अभिनेत्री:** पिशक/बिमोला **बाल कलाकार:** ए. शांतिमो शर्मा **संपादक:** उज्ज्वल नन्दी **कला निर्देशक:** एन. अहनजाओ **वेशभूषाकार:** सेराम रंजना **संगीत निर्देशक:** एन. टिकेन **गीतकार:** थ. कोरा **पार्श्व गायक:** थौंगम्बा मेइतेई

कुंजबिहारी (कुंजो) को एक दिन सनजाओबा नाम के धनुर्धारी का पुत्र मिलता है। उसे एशियाई खेलों के लिए चुना गया है। उसकी माँ ने उसे कुंजो का आशीर्वाद लेने को कहा है। पत्र में वह मायोफी के उखराल की जिला अस्पताल में नौकरी और अपनी नानी सन्योला के देहान्त का समाचार देता है।

उस समय कुंजो डी.सी. के दफ्तर में मामूली क्लर्क था। साहिब पहाड़ों के ऊपर एक किताब लिख रहे थे। उन्हीं दिनों कुंजो का विधवा अंगमला, उसकी सास सन्योला और मायोफी के परिवार से मेल-जोल बढ़ता है। कुंजो की बदली पर उसे अपने साहिब और उस परिवार से बिछड़ने का दुख होता है। बाद में वह मायोफी के अनुरोध पर उनसे मिलने गया था पर उसके बाद कोई सम्पर्क न रहा।

पत्र प्राप्त होकर कुंजो को बड़ी खुशी होती है और वह मायोफी और उसके परिवार के आने वाले दिनों के सपनों में डूब जाता है।

MAYOPHY GEE MACHA

Manipuri/colour/91 min

Producer: Thouyangba/Thoungamba **Director:** Oken Amakcham **Screenplay Writer:** M.K. Binodini **Leading Actor:** Makhon Mani **Leading Actress:** R.S. Joycee **Supporting Actor:** Narendra Ningomba **Supporting Actress:** Pishak/Bimola **Child Artist:** Master Nongyai **Audiographer/Special Effects Creator:** A. Shantimo Sharma **Editor:** Ujjal Nandi **Art Director:** N. Ahanjao **Costume Designer:** Seram Ranjana **Music Director:** N. Tiken **Lyricist:** Th. Kora **Male Playback Singer:** Thoungamba Meitei

A retired superintendent Kunjabihari (Kunjo) one day receives a letter from Sanajaoba stating that he had been selected as an archer to represent India in the forthcoming Asian Games. He also informed that his mother Mayophy had asked him to take Kunjo's blessings before leaving. He wrote that his grandmother Sanyaola had died and his mother was working as an attendent in Ukhral District Hospital.

Kunjo was, at that time, a petty clerk in the DC office who was working on a book on the hills. He had further ideas of writing on the Tangkhul women.

Kunjo had entwined himself with the young Tangkhul widow Angamla, her mother-in-law Sanyaola and daughter Mayophy. Then Kunjo had to leave Ukhral for higher grade. He felt sad to leave his Sahib and this family. Later, on Mayophy's request he had visited Ukhral again.

With this letter Kunjo felt very excited and happy. He visualises and imagines the forthcoming days of Mayophy and her family.

मोघा मल

तमिल/रंगीन/137 मिनट

निर्माता: जे. धर्माम्बल **निर्देशक/पटकथा लेखक:** ज्ञान राजाशेखरन **मुख्य अभिनेता:** अभिशेक **मुख्य अभिनेत्री:** अर्चना जोग्लेकर **सह-अभिनेता:** नेदुमुडी वेनु **सह-अभिनेत्री:** संगीता/वानी **कैमरामैन:** सन्नी जोसेफ/थांगर बचन **संपादक:** बी. लेनिन/ वी.टी. विजयन **कला निर्देशक:** पी. कृष्ण मूर्ती **संगीत निर्देशक:** इलिया राजा

मोघा मल यमुना और बाबू के प्यार और आवेश की एक अनोखी कहानी है। यमुना की शादी के लिए उसकी माँ अत्यंत चिंतित है पर यमुना की मानसिकता को केवल बाबू ही समझता है। उसे यमुना के विवाह न होने पर दुख है। बाबू रंगअन्ना के पास गायन की शिक्षा प्राप्त कर रहा है।

थंगकन्ना विवाहित होने के बावजूद बाबू को चाहती है और यह बात जब बाबू यमुना को बताता है तो वह उसे अपने संगीत पर ध्यान देने की सलाह देती है। थंगकन्ना आत्महत्या कर लेती है।

रंगअन्ना अपने संगीत का भंडार बाबू को देता है इसी शर्त पर कि वह उसे पैसे के लिए कभी नहीं बेचेगा। पर रंगअन्ना की चिकित्सा के कारण बाबू अपना वचन नहीं निभा पाता। परंतु जब रंगअन्ना की मृत्यु हो जाती है तो वह मद्रास जाकर जगह-जगह घूमता रहता है। जब यमुना को पता चलता है तब उसे बहुत अनुताप होता है। वह मद्रास जाकर बाबू को सम्भालती है और उसे एक महान कलाकार बनाती है।

MOGHA MUL

Tamil/colour/137 min.

Producer: J. Dharmambal **Director/ Screenplay Writer:** Gnana Rajasekaran **Leading Actor:** Abhishek **Leading Actress:** Archana Joglekar **Supporting Actor:** Nedumudi Venu **Supporting Actress:** Sangeetha/Vani **Cinematographer:** Sunny Joseph/Thangar Bachan **Editor:** B. Lenin/V.T. Vijayan **Art Director:** P. Krishna Murthy **Music Director:** Ilaya Raja

Mogha Mul is a tale of love and the dilemma of passion, revolving around Yamuna and Babu.

Yamuna watches all the frantic attempts of her mother to marry her off. Babu, a disciple of music maestro Ranganna is the only person who understands her. He is distressed on seeing Yamuna's marriage proposals getting fizzled off. Young Thankamma, married to an old widower tries to seduce Babu to commit adultery. But when he bares his heart to Yamuna she asks him to concentrate on his music career. Thankamma persists but when Babu declines, she commits suicide.

Ranganna passes over his vast knowledge to Babu on the condition that he would not sell it for money but Babu is unable to keep his word during Ranganna's illness. Ranganna dies and a totally dejected Babu leaves for Madras where he roams desolately.

Yamuna on learning Babu's condition, filled with remorse finds Babu and resurrects the musical genius in him.

मुक्ता

मराठी/रंगीन/154 मिनट

निर्माता: अशोक बी. महात्रे निर्देशक/पटकथा लेखक: जब्बर पटेल मुख्य अभिनेता: अविनाश नारकर मुख्य अभिनेत्री: सोनाली कुलकर्णी सह-अभिनेता: श्रीरामलागू/कालेब ओबुरा ओव्वातिन्या सह-अभिनेत्री: रीमा कैमरामैन: शंकर बर्धन ध्वनि आलेखक: प्रमोद पुरानदरे संपादक: विजय खोचिकर कला निर्देशक/वेशभूषाकार: संजय पवार संगीत निर्देशक: आनन्द मोदक गीतकार: एन.डी. माहानोर/जोनाकी पटेल पार्श्व गायक: रवीन्द्र साठे/क्लींटन सेरेजो पार्श्व गायिका: जयश्री शिवराम

मुक्ता एक उच्च स्तरीय उच्च जाति की लड़की और एक नीची जाति के लड़के के संघर्ष की कहानी है जो यहाँ भारत में और अमेरिका के खुले वातावरण में एक जैसी है। मुक्ता में युवा और बुजुर्ग पीढ़ी के बदलते समझ की तीव्र समीक्षा की गई है। हमारे रीति-नीति के साथ सामाजिक परिवर्तन जो आज कानून बन चुके हैं- इन दोनों के व्यतिक्रम को दिखाया गया है। परम्परा और आधुनिक काल की लड़ाई की जड़ों को भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के समय तक खोजा गया है। आज भी लोगों का मन सामाजिक जाति के बंधनों में जकड़ा हुआ है।
ये लड़की दूर अमरीका के खुले समाज में पली है जो केवल गोरे और काले का भेद समझते हैं।

MUKTA

Marathi/colour/154 min

Producer: Ashok B. Mhatre **Director/ Screenplay Writer:** Jabbar Patel **Leading Actor:** Avinash Narkar **Leading Actress:** Sonali Kulkarani **Supporting Actor:** Shreeram Lagu/Caleb Obura Obwatinya **Supporting Actress**: Reema **Cameraman:** Shankar Bardhan **Audiographer:** Pramod Purandare **Editor:** Vijay Khochikar **Art Director/Costume Designer:** Sanjay Pawar **Music Direction:** Anand Modak **Lyricist:** N.D. Mahanor/Jonaci Patel **Male Playback Singer:** Ravindra Sathe/Klinton Serejo **Female Playback Singer:** Jayashree Shivram

Mukta is the story of an upper class upper caste Indian girl and a lower caste boy who struggle against the contradictions of their age both in India as well as among a community of Indians who have settled abroad in a supposedly liberated environment.
Mukta takes a critical look at the varying perceptions of the younger and the older generations, in India and abroad, at the duality of thought inherited by the contemporary Indian, as illustrated by the variance between the accepted customs of the community and, the accepted social reforms. The conflict between tradition and modernity is traced back to the impulses for social reform that flowered during India's Freedom Movement, and the problems in real life, where many people are still governed by the customs of complex caste structure
The girl is brought up in an American environment, with its sense of freedom, and which only knows the distinction between 'black and 'white'

नामावर

तमिल/रंगीन/178 मिनट

निर्माता: बी. वेन्कटराम रेड्डी **निर्देशक:** के. एस. सेथुमाधवन **मुख्य अभिनेता:** कमल हसन मुख्य **अभिनेत्री:** गौतमी **सह-अभिनेता:** करन/नागेश **सह-अभिनेत्री:** वृन्दा **कैमरामैन:** मधु उमबाट **ध्वनि आलेखक:** कल्ली रामाकृष्णा **संपादक:** एन.पी. सतीश **कला निर्देशक:** बी. चलम **वेशभूषाकार:** टी. कोन्डाला राव **संगीत निर्देशक:** महेश **गीतकार:** वैरामुथु **पार्श्व गायक:** एस.पी. बालसुब्राह्मनयम् **पार्श्व गायिका:** चित्रा **नृत्य संयोजक:** रघुराम/गिरिजा रघुराम

संतीवेल कॉलेज चुनाव के लिए रमेश और निर्मला उम्मीदवार हैं। निर्मला, रमेश, कॉलेज के संस्थापक के एकमात्र पुत्र को पराजित कर देती है। वह रोष में आकर कॉलेज में आग लगा देता है। कॉलेज में नए इतिहास प्राध्यापक तथा उप-प्रधानाचार्य सेलवम का आगमन होता है। वे कॉलेज की भलाई के प्रबंध करते हैं। रमेश को देर से आने पर कॉलेज से निकाल दिया जाता है। कॉलेज में स्वतंत्र रूप से न घूम पाने के कारण रमेश क्रोधित होकर गुन्डों से सेलवम को पिटवाने की कोशिश करता है। वे सेलवम को दोबारा पीटने की कोशिश भी करते है। रमेश सेलवम की मोटर साईकल को आग लगा देता है और अपने आपको चोट पहुँचाकर इल्ज़ाम सेलवम पर लगाता है।

सेलवम अपने छात्रों को इन्टर कॉलेज प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए तैयार करता है। इस दौरान मुरुगेश को रमेश ज़ख्मी कर देता है। उसे ए.बी. नेगेटिव का खून चाहिए जो कि सेलवम के खून से मिलता है पर सेलवम खून देने से इनकार कर देता है। वसंती और अन्य लोग इस पर सेलवम को बुरा-भला कहते हैं पर जब उन्हें पता चलता है कि उसे खून का कैन्सर है तब उन्हें पश्चाताप होता है। वसंती सेलवम से विवाह का प्रस्ताव रखती है।

रमेश नशीले दवाइयों के लिए पुलिस द्वारा गिरफ्तार हो जाता है और कॉलेज कमेटी उसे निकाल देती है। रमेश निर्मला का अपहरण कर लेता है जिसके बाद निर्मला आत्महत्या कर लेती है। उतावले विजय और सेलवम को रमेश चाकू मार देता है। लोग रमेश को पत्थर मारने लगते हैं तब सेलवम उसे बचा लेता है।

सेलवम अपनी बहन और वसन्ती को लेकर चिकित्सा के लिए अमरीका चला जाता है।

NAMMAVAR

Tamil/colour/178 min.

Producer: B. Venkatram Reddy **Director:** K.S. Sethumadhavan **Leading Actor:** Kamal Hasan **Leading Actress:** Gauthami **Supporting Actress:** Karan/Nagesh **Supporting Actress:** Brinda **Cameraman:** Madhu Umbat **Audiographer:** Kalli Ramakrishna **Editor:** N.P. Satish **Art Director:** B. Chalam **Costume Designer:** T. Kondala Rao **Music Director:** Mahesh **Lyricist:** Vairamuthu **Male Playback Singer:** S.P. Balasubrahmanyam **Female Playback Singer:** Chitra **Choreographer:** Raghuram/Girija Raghuram

Ramesh and Nirmala are the candidates for college elections but Nirmala defeats Ramesh, the only son of the founder of the college. Ramesh sets fire to the college.

Selvam joins college as history lecturer and vice-principal and gears up for the betterment of the college. Ramesh is sent back for having come late. Angry at not being able to move about freely he gets some bad characters to beat Selvam. They again try to beat him and Ramesh sets Selvam's motorcycle on fire and injures himself to make it look as if Selvam beat him up.

Selvam encourages students to take part in inter college competitions but Ramesh destroys all the instruments and injures Murugesh. Murugesh requires AB-ve blood which is the same as Selvam's but he denies to donate blood. Vasanthi and others abuse Selvam but later feel sorry when they come to know that Selvam is suffering from blood cancer. Vasanthi proposes to marry him.

Ramesh is arrested by police for dealing in drugs and is suspended by the college committee. He kidnaps Nirmala who commits suicide. Her lover Vijay and Selvam are also stabbed. People start throwing stones at Ramesh but Selvam rescues him showing his greatness.

In the end Selvam goes to America with Vasanthi and his sister for treatment.

निर्बाचन

उड़िया/रंगीन/100 मिनट

निर्माता: एन.एफ.डी.सी. **निर्देशक/पटकथा लेखक/संपादक:** बिप्लब राय चौधरी **मुख्य अभिनेता:** भीम सिंह **मुख्य अभिनेत्री:** बिद्युत प्रभा पटनायक **सह-अभिनेता:** दुर्लभ चंद्र सिंह **सह-अभिनेत्री:** संगीता दत्ता **बाल कलाकार:** सुश्मिता जगदेब **कैमरामैन:** राजु मिश्रा **ध्वनि आलेखक:** नागेन बारिक **कला निर्देशक:** निखिल बरन सेनगुप्ता **संगीत निर्देशक:** शांतनु महापात्रा

मनकोनाल के ग्रामवासियों का गुज़ारा खेती-बाड़ी से ही होता है। ये गरीब लोग ज़मीन्दार के खेतों में काम करना ज़्यादा पसन्द करते हैं न कि पत्थर की खानों में।

ग्राम प्रधान, भसारा अपनी पत्नी लक्ष्मी, पुत्र शिबू और पुत्रियां रंगी और बेंगी के साथ सरल जीवन व्यतीत करता है। वह अपने पुत्र शिबू के साथ गीता के विवाह के लिए चिंतित है।

इस दौरान ज़मीन्दार जो आने वाले चुनाव का उम्मीदवार है घोषणा करता है कि हर वोट के लिए वह एक सौ रुपये देगा। भसारा को और पैसे चाहिए। इसलिए वह क्षयरोगी अनाथ को घर लाकर उसकी सेवा करता है ताकि वह चुनाव तक जिन्दा रहे। पर चुनाव से दो दिन पहले अनाथ खून की उल्टी करता है। शिबु और भसारा उसे अस्पताल ले जाते समय डिनामाइट के विस्फोट के बीच फँस जाते हैं। डर कर वे अनाथ को वहीं छोड़कर भाग जाते हैं। अनाथ मारा जाता है और उनकी सारी आशा-आकांक्षा धूल और रेत के तूफान में उड़ जाते हैं।

NIRBACHANA

Oriya/colour/100 min

Producer: N.F.D.C. **Director/Screenplay Writer/Editor:** Biplab Ray Choudhuri **Leading Actor:** Bhim Singh **Leading Actress:** Bidyut Prava Patnaik **Supporting Actor:** Durlabh Chandra Singh **Supporting Actress:** Sangita Dutta **Child Artist:** Sasmita Jagdeb **Cameraman:** Raju Misra **Audiographer:** Nagen Barik **Art Director:** Nikhil Baran Sengupta **Music Director:** Santanu Mohapatra

The poor villagers of Mankonal are dependant on agriculture. They prefer cultivating land for the Zaminder rather than work in the stone quarry.

Bhasara, the village chief, leads a simple life with wife Laxmi, son Shibu and daughters Rangi and Bengi. He wants to get Shibu married to Gita.

Meanwhile the zaminder, a candidate for the ensuing election, holds a meeting and promises to pay Rs. 100/- per vote. Bhasara wants to make money so he takes Anath, a poor beggar suffering from Tuberculosis, home and cares for him to keep him alive till the elections. Two days prior to the election Anath vomits blood. Shibu and Bhasara while taking him to the hospital get stuck amidst blasting dynamites. Frightened they leave Anath there and run for their lives. Anath dies and their expectations and hopes all vanish with the whirling wind and sand storm.

परम वीर चक्र

हिन्दी/रंगीन/180 मिनट

निर्माता/निर्देशक/पटकथा लेखक: मेजर अशोक कौल **मुख्य अभिनेता:** राजेश श्रींगारपुरे/अभीजीत सेनगुप्ता/सलीम शेख **मुख्य अभिनेत्री:** राजेश्वरी **सह-अभिनेता:** कुलभूषण खरबन्दा/तारीक शाह/ रघुवीर यादव **सह-अभिनेत्री:** हेमा मालिनी/रीमा लागू **कैमरामैन:** राधू कर्मकार **ध्वनि आलेखक:** पांडूरंग बालूर **संपादक:** शिवानन्द राई/नवनीत पटेस्कर **कला निर्देशक:** सुरेश सावंत **संगीत निर्देशक/गीतकार:** रवीन्द्र जैन **पार्श्व गायक:** कुमार शानू **पार्श्व गायिका:** अल्का यागनिक **नृत्य संयोजक:** भूषण लखान्द्री **प्रभाव सृजक:** संजय नायक

ये तीन नवजवान सिपाहियों की कहानी है जो नेशनल डिफेन्स अकादमी, खड़कवासला में ट्रेनिंग प्राप्त कर रहे हैं। उनमें एक बरती, दूसरा बहरी और तीसरा हवाई फौज के ऑफिसर बनेंगे जिनमें वतन के लिए कुछ करने की हिम्मत, जँवामर्दी और प्यार है।

वे तीनों जिस्म तीन पर एक जान हैं। ये दोस्त एक जैसा करते तथा सोचते हैं। यहां तक के वे एक ही लड़की को पसन्द भी करते हैं। वह लड़की बड़ी मुश्किल से एक को पसन्द करती है पर बताने से पहले जंग छिड़ जाती है। वह अपना फैसला जंग खत्म होने तक रोक लेती है ताकि तीनों फौजिओं के हौसले बुलंद रहें। जंग में तीनों वतन के लिए जान की बाज़ी लगा देते हैं। एक मिशन को सफल बनाते हैं।

जंग में देश की जीत होती है। पर उन तीनों में से दो को मरणोपरांत 'परमवीर चक्र' से नवाज़ा जाता है।

PARAM VIR CHAKRA

Hindi/colour/180 min

Producer/Director/Screenplay Writer: Major Ashok Kaul **Leading Actor:** Rajesh Shringarpure/Abhijeet Sengupta/Salim Sheikh **Leading Actress:** Rajeshwari **Supporting Actor:** Kulbhushan Kharbanda/Tariq Shah/Raghuveer Yadav **Supporting Actress:** Hema Malini/ Reema Lagoo **Cameraman:** Radhu Karmakar **Audiographer:** Pandurang Baloor **Editor:** Shivanand Rai /Navneet Pateskar **Art Director:** Suresh Sawant **Music Director/Lyricist:** Ravinder Jain **Male Playback Singer:** Kumar Shanu **Female Playback Singer:** Alka Yagnik **Choreographer:** Bhushan Lakhandari **Special Effects Creator:** Sanjay Nayak

The story revolves around three young cadets of Army, Navy and Air-Force training at the National Defence Academy, Kharakwasla. These young officers of the Indian Armed Forces are full of spirit, courage and love for their nation. The three are like one soul in three bodies. They think and work alike so much so that they like the same girl. Hence, the girl finds it difficult to choose. Finally when she is able to decide, war breaks out and she keeps quiet to keep their morals.

The three put in their best in the war and go on a mission together, success of which eventually helps in the victory of the war and nation in turn.

Of the three of them, two are awarded 'Param Vir Chakra' the highest gallantry award posthumously after the war.

परिनयम

मलयालम/रंगीन/130 मिनट

निर्माता: जी.पी. विजयकुमार **निर्देशक:** हरिहरन **पटकथा लेखक:** एम.टी. वासुदेवन नायर **मुख्य अभिनेता:** मनोज के. जयन **मुख्य अभिनेत्री:** मोहिनी **सह-अभिनेत्री:** थिलकन/विनीत **सह-अभिनेत्री:** शांति कृष्ण **कैमरामैन:** कुमार **ध्वनि आलेखक:** लक्ष्मीनारायणन/मूर्ति **संपादक:** एम.एस. मोनी **कला निर्देशक:** कृष्णा मूर्ती **वेशभूषाकार:** नटराजन **संगीत निर्देशक:** रवि (बम्बई) **गीतकार:** युसुफ अलि कचेरी **पार्श्व गायक:** के.जे. येसुदास **पार्श्व गायिका:** के.एस.चित्रा **नृत्य संयोजक:** श्रीधरन मास्टर

17 वर्षीय उन्नीमाया की शादी एक 65 वर्षीय बूढ़े के साथ कर दी जाती है। उन्नीमाया अपने पति की चौथी बीबी है। कोई वैवाहिक सुख पाने से पहले ही शादी के तीन महीने वह विधवा हो जाती है। एक निर्बल क्षण में वह एक कथकली नर्तक माधवन के साथ संबंध कर बैठती है। माधवन एक निम्न वर्ग का लड़का है। उन्नीमायी गर्भवती होने के बावजूद उसे अपनाने से मना कर देता है क्योंकि उससे उसके नृत्य में बाधा पड़ेगी।

रीति के अनुसार एक गर्भवती महिला को समाज से निकाल दिया जाता है पर उन्नीमाया को उसके पति का जवान बेटा कुंजुन्नी सहारा देता है।

माधवन अपने को दोषी मानकर शराब पीने लगता है और अपने नृत्य को भूल जाता है। साहस कर उन्नीमाया के पास पहुंचने पर वह उसका तिरस्कार कर देती है ये कहकर कि उसके गर्भ में एक पौराणिक चरित्र का बच्चा पल रहा है।

उन्नीमाया चरखे की सूत से अपने जीवन के धागों को दोबारा हाथ में लेती है।

PARINAYAM

Malayalam/colour/130 min

Producer: G.P. Vijaykumar **Director:** Hariharan **Screenplay Writer:** M.T. Vasudevan Nair **Leading Actor:** Manoj K. Jayan **Leading Actress:** Mohini **Supporting Actor:** Thilakan/Vineeth **Supporting Actress** Shanthi Krishna **Cameraman:** Kumar **Audiographer:** Laxminarayanan/ Moorthy **Editor:** M.S. Money **Art Director:** Krishna Moorthy **Costume Designer:** Natarajan **Music Director:** Ravi (Bombay) **Lyricist:** Yusaf Ali Kecheri **Male Playback Singer:** K.J. Yesudas **Female Playback Singer:** K.S. Chitra **Choreographer:** Sreedharan Master

Unnimaya, a 17 year old Brahmin girl becomes the fourth wife of a 65 year old man. She is widowed within three months, without attaining conjugal happiness. In a moment of weakness, she succumbs to the advances of Madhavan, a young Kathakali dancer hailing from a lower caste. Unnimaya becomes pregnant but Madhavan refuses to own her up as it would hamper his ambitions.

According to custom, a pregnant widow is excommunicated but Unnimaya is rescued and given shelter by Kunjunni, the young son of her deceased husband.

Guilty, Madhavan takes to the bottle and peers away from his vocation. When he finally summons courage to go to Unnimaya, she snubs him by saying that the father of her unborn child is a mythological character.

Unnimaya picks up the threads of her life from the traditional spinning wheel.

पवित्र

तमिल/रंगीन/ 135 मिनट

निर्माता/निर्देशक/पटकथा लेखक: के. सुबाष **मुख्य अभिनेता:** नासर **मुख्य अभिनेत्री:** राधिका **ध्वनि आलेखक:** यू.के. आई. इयाप्पन **संपादक:** पी. मदन मोहन **कला निर्देशक:** मोहन राजेन्द्रन **वेशभूषाकार:** वलायापती **संगीत निर्देशक:** ए.आर. रहमान **गीतकार:** वैरामुथु **पार्श्व गायक:** उन्नीकृष्णन **पार्श्व गायिका:** चित्रा **नृत्य संयोजक:** एस.पी. सीनू **प्रभाव सृजक:** बालू

पवित्र को एक मृत बच्चे को जन्म देने के बाद पता चलता है कि वह अब कभी माँ नहीं बन सकती। इसलिए वह एक अस्पताल की नर्स बन जाती है।

वहाँ एक 18 वर्षीय दुर्घटना ग्रस्त अशोक को लाया जाता है जिसकी जाँच से पता चलता है कि उसे कैन्सर है। पवित्र को अशोक की देखभाल की जिम्मेदारी सौंपी जाती है। उसे पता चलता है कि अशोक का जन्म उसी दिन हुआ था जिस दिन उसके अपने मृत बच्चे का जन्म हुआ था। वह अशोक का खास ख्याल रखती है।

दिवाकर पवित्र के साथ दुर्व्यवहार करता है तो अशोक पवित्र को बचाता है और उसे नौकरी से निकाल दिया जाता है। दिवाकर बदला लेने के लिए अशोक और पवित्र के बारे में अफवाहें फैलाने लगता है।

रघु पवित्र, के पति को बुरा लगता है और वह पवित्र को काम पर जाने से रोक देता है। रघु, अशोक, के नाम से एक प्रेम पत्र लिखता है। पवित्र जब अशोक को पूछने जाती है तब उसे किसी के लिए प्रेम पत्र लिखवाता देख विश्वास कर लेती है और उसे अशोक से घृणा हो जाती है। अशोक की हालत बिगड़ने पर रघु अपनी गलती का इजहार करता है। पवित्र तुरंत अशोक के पास पहुँचती है। अशोक आखिरी समय पवित्र को माँ कहकर पुकारकर सदा के लिए सो जाता है।

रघु अपनी गलती पर पछताता है और एक बच्चे को गोद लेकर पवित्र को सौंप देता है।

PAVITHRA

Tamil/colour/135 min

Producer/Director/Screenplay Writer: K. Subaash **Leading Actor:** Nassar **Leading Actress:** Radhika **Audiographer:** U.K.I. Iyyapan **Editor:** P. Madan Mohan **Art Director:** Mohan Rajendran **Costume Designer:** Valayapathi **Music Director:** A.R. Rahman **Lyricist:** Vairamuthu **Male Playback Singer:** Unnikrishnan **Female Playback Singer:** Chitra **Choreographer:** S.P. Seenu **Special Effects Creator:** Balu

Pavithra, after having given birth to a still born child is informed that she is no longer capable of conceiving. Hence, she decides to serve the downtroden and starts working as a Nurse in a private hospital.

Ashok, eighteen years old, an accident victim is admitted and during further investigations it is detected that he is suffering from bone marrow Cancer. Pavithra is given the responsibility of taking care of Ashok. She finds out that Ashok was born on the same date, month and year as that of her still-born child. Hence, she takes special care of him.

Diwakar, tries to molest Pavithra but for the timely intervention of Ashok he is caught and his service is terminated. To take revenge he spreads rumours regarding Pavithra and Ashok's relationship.

Pavithra's husband Raghu is hurt by these false allegations and decides to stop her from going to work. Raghu writes a love letter in Ashok's name. Pavithra also misunderstands Ashok when she overhears him dictating a love letter for his friend. She hates him and then Ashok's condition worsens. Raghu admits his fault and Pavithra rushes to the hospital. Ashok before breathing his last utters the word Mother and dies.

Raghu feels guilty, adopts a child and hands it over to Pavithra.

सुकृतम्

मलयालम/रंगीन/140 मिनट

निर्माता: एम.एम. रामचन्द्रन **निर्देशक:** हरिकुमार **पटकथा लेखक:** एम.टी.वासुदेवन नायर **मुख्य अभिनेता:** माम्मूटी **मुख्य अभिनेत्री:** गौतमी **सह-अभिनेता:** मनोज के. जयन **सह-अभिनेत्री:** शांतिकृष्णा **संपादक:** जी. मुरली **कला निर्देशक:** निमोम पुष्पराज **वेशभूषाकार:** जयन **संगीत निर्देशक:** रवि (बम्बई) **गीतकार:** डी.एन.थी. कुरुप **पार्श्व गायक:** येसुदास

रविशंकर एक विघातक रोग से ध्वस्त अस्पताल में अपने दिन गिन रहा है। वह अस्पताल से छुट्टी लेकर अपने पुश्तैनी मकान में अपने अंत का इंतज़ार करता है। मालिनी अपनी नौकरी के लिए शहर वापस आ जाती है।

रविशंकर की देखभाल उसके मौसा-मौसा और दुर्गा करते हैं। रविशंकर को गहरा सदमा पहुँचता है जब उसे मालिनी और राजेन्द्रन, एक पारिवारिक दोस्त, के प्यार का पता चलता है। वह दोनों को विवाह करने का अनुरोध करता है।

एक दिन रविशंकर का एक शुभचिंतक विश्व-विख्यात डा. उन्नी को लेकर आते हैं। वे उसे ऊटी ले जाते हैं जहाँ उनके चिकित्सा से रविशंकर स्वस्थ हो जाता है। गाँव वापस आने पर उसे बहुत कड़वाहट महसूस होती है जैसे स्वस्थ होकर सबको कष्ट दिया। उसे अपने सह-कर्मी द्वारा लिखे मृत व्यक्ति विषयक लेख भी मिलता है।

दुखी रविशंकर अपने बारे में एक नया लेख लिखकर अंजाने रास्ते पर निकल जाता है।

SUKRUTHAM

Malayalam/colour/140 min

Producer: M.M. Ramachandran **Director:** Harikumar **Screenplay Writer:** M.T. Vasudevan Nair **Leading Actor:** Mammooty **Leading Actress:** Gowthamy **Supporting Actor:** Manoj K. Jayan **Supporting Actress:** Santhikrishna **Editor:** G. Murali **Art Director:** Nemom Pushparaj **Costume Designer:** Jayan **Music Director:** Ravi (Bombay) **Lyricist:** D.N.V. Kurup **Male Playback Singer**. Yesudas

Ravishankar is admitted in hospital with a fatal disease where doctors have numbered his days. He takes discharge from the hospital to return to his ancestral home to wait for the inevitable. His wife Malini accompanies him but has to return to rejoin duty.

He is taken care of by his uncle and aunt and Durga. Ravishankar is shocked when he realises that Malini and Rajendran, a family friend, are in love with each other.But asks them to get united.

One day an admirer of Ravishankar brings Dr. Unni to examine him. He takes him to Ooty where the tranquil atmosphare and the unique therapy miraculously cures Ravishankar within a few months. On returning to the village he has bitter experiences. Everybody reacts strangely as they feel that their shares and dreams have been shattered. He also comes across an obituary article written by a colleague of his.

He then prepares a new orbituary for himself and plunges into the unknown.

स्वाहम्

मलयालम/रंगीन, श्वेत-श्याम/ 114 मिनट

निर्माता/पटकथा लेखक: एस. जयचन्द्रन नायर **निर्देशक:** शाजी. एन. करुन **मुख्य अभिनेता:** वेन्मानी विष्णु **मुख्य अभिनेत्री:** अस्वानी **सह-अभिनेता:** साराथ **सह-अभिनेत्री:** श्रीदेवी **बाल कलाकार:** प्रसीथा **कैमरामैन:** हरि नायर **ध्वनि आलेखक:** कृष्णन उन्नी **संपादक:** रामन नायर **कला निर्देशक:** पद्माकुमार एस. **वेशभूषाकार:** राजू बलरामपुरम् **संगीत निर्देशक:** राघवन के./ इसाक कोट्टूकपल्ली **पार्श्व गायक:** के. कृष्णकुमार

रमइयार का सुखी परिवार एक दूर के गांव में रहता है जिसका बाहरी दुनिया से सम्पर्क सिर्फ एक मीटर गेज रेल की पटरी है। उनका गुजारा एक कॉफी की दुकान से होता है। रमइयार को गाने का शौक है तथा वह एक अच्छा पति तथा पिता है। पर वह एक दुर्घटना में मारा जाता है और उसकी पत्नी अन्नपूर्णा को अकेले अपने परिवार की देख भाल करनी पड़ती है। दुकान की आमदनी कम हो जाती है। उनके मकान-मालिक को उनका घर अपनी बेटी के दहेज के लिए बेच देना पड़ता है और अन्नपूर्णा को अपने देवर के घर जाकर रहना पड़ता है जहाँ उसे कई प्रकार के अवहेलनाओं को सहना पड़ता है।

उनका एकमात्र सहारा है बुज़ुर्ग स्टेशन मास्टर जो अन्नपूर्णा को अपने बेटे को फौज में भर्ती करने की सलाह देता है। वे सब कुछ बेचकर पैसा इकट्ठा करते हैं। यहां तक की उनका मकान-मालिक भी पैसा देता है। माँ-बेटा भर्ती केन्द्र पहुँचते हैं पर वहाँ दुर्घटना में उसके बेटे की मृत्यु हो जाती है।

SWAHAM

Malayalam/colour, B & W/141 min.

Producer/Screenplay Writer: S. Jayachandran Nair **Director:** Shaji N. Karun **Leading Actor:** Venmani Vishnu **Leading Actress:** Aswani **Supporting Actor:** Sarath **Supporting Actress:** Sreedevi **Child Artist**: Praseetha **Cameraman:** Hari Nair **Audiographer:** Krishnan Unni **Editor:** Raman Nair **Art Director:** Padmakumar S. **Costume Designer:** Raju Balaramapuram **Music Director:** Raghavan K./Issack Kottukapalli **Male Playback Singer:** K. Krishnakumar.

Ramayyar's happy family live in a remote village linked to the outside by a metre gauge railway line. Their livelihood comes from a coffee shop. Ramayyar, a music lover is a loving husband and an affectionate father. But he is killed in an accident and his wife Annapoorna is left to fend for herself and her family. Income from coffee shop dwindles. They have to vacate the house as the landlord has to sell it to raise dowry for her daughter. Annapoorna and her family seek refuge in her brother in-law's house where indignities are heaped on them.

The elderly station master is the only solace to the family who advices her to get her son enlisted in the army. The family sell everything to raise money for the job, even the landlord chips in a few hundred.

Appropiate hands are greased and mother and son reach the recruiting centre. But tragedy strikes again and the boy dies in a stampede.

थेनमाविन कोम्बाथ

मलयालम/रंगीन/160 मिनट

निर्माता/संपादक: एन. गोपालकृष्णन **निर्देशक/पटकथा लेखक:** एस. प्रियादर्शन **मुख्य अभिनेता:** वी. मोहनलाल **मुख्य अभिनेत्री:** शोभना **सह-अभिनेता:** नेदुमुडी वेनु **सह-अभिनेत्री:** कवियूर पोन्नाम्मा **कैमरामैन:** के.वी. आनन्द **ध्वनि आलेखक:** दीपेन चैटर्जी **कला निर्देशक:** साबु सिरिल **वेशभूषाकार:** साई**संगीत निर्देशक:** बेनी/इग्निशियस **गीतकार:** गिरीश पुथेनचेरी **पार्श्व गायक:** एम. जी. श्रीकुमार **पार्श्व गायिका:** के.एस. चित्रा **नृत्य संयोजक:** सेल्वी/राजू **प्रभाव सृजक:** सेथु

श्रीकृष्णा अपनी विधवा बहन यशोदा के साथ श्रीहल्ली गाँव में मादम्बीपुरा हवेली में रहता था। मानीकन घर का एक जवान विश्वासयोग्य नौकर था। दूसरा नौकर अप्पाकोला श्रीकृष्णा और मानीकन के बारे में यशोदा को शिकायत लगाता क्योंकि वह कुइली से विवाह करना चाहता था जो मानीकन को चाहती थी।

नाटक अभिनेत्री कारथुम्बी से श्रीकृष्णा को लगाव हो जाता है। पर मानीकन और कारथुम्बी में प्यार हो जाता है। श्रीकृष्णा कारथुम्बी से विवाह की इच्छा प्रकट करता है और कारथुम्बी मानीकन से प्यार करता है। कुइली के मानीकन द्वारा गर्भवती होने की अप्पाकला अफवाह फैलाता है जिसे कुइली नकार देती है। वह कारथुम्बी को सच्चाई बता देती है। मानीकन पर श्रीकृष्णा की हत्या का इल्जाम लगाया जाता है। कारथुम्बी और मानीकन भाग जाते हैं और उनकी श्रीकृष्णा और उसकी नवविवाहित पत्नी कार्थुअम्मा से मुलाकात होती है।

THENMAVIN KOMBATH

Malayalam/colour/160 min.

Producer/Editor: N. Gopalakrishnan **Director/Screenplay Writer :** S. Priyadarshan **Leading Actor:** V. Mohan lal **Leading Actress:** Sobhana **Supporting Actor:** Nedumudi Venu **Supporting Actress:** Kaviyoor Ponnamma **Cameraman:** K.V. Anand **Audiographer:** Deepan Chatterjee **Art Director:** Sabu Ciril **Costume Designer:** Sai **Music Director:** Berny/Ignitius **Lyricist:** Girish Puthencherry **Male Playback Singer:** M.G. Sreekumar **Female Playback Singer:** K.S. Chitra **Choreographer:** Selvi/Raju **Special Effects Creator:** Sethu

Sreekrishna lived with her widowed sister Yeshoda in Madambipura house of village Srihalli. They had a very faithful servant Manickan. Another servant Appakala regularly complained to Yeshoda about Sreekrishna and Manickan as he wanted to marry Kuyili who wanted to marry Manickan.

Sreekrishna feels attracted to a drama artist Karuthambi, while Manickan and Karuthambi fell in love with each other. When Sreekrishna safe at home He wishes to marry Karuthambi she professes to love Manickan.

Appakala spreads the rumour that Kuyili was pregnant due to Manickan. Kuyili denies the charge and tells Karuthambi the truth. He than accuses Manickan of murdering Sreekrishna who is missing. Karuthambi and Manickan run away and come upon Sreekrishna and his newly wed wife Karthuamma, his old girl friend.

उनिशे एप्रिल

बंगला/रंगीन/130 मिनट

निर्माता: रेनु राय **निर्देशक/पटकथा लेखक:** रितुपौरनो घोष **मुख्य अभिनेत्री:** देवोश्री राय **सह अभिनेता:** दीपंकर दे **सह-अभिनेत्री:** अपर्ना सेन **कैमरामैन:** सुनिर्मल मजुम्दार **संपादक:** उज्वल नन्दी **कला निर्देशक:** बीबी रे **संगीत निर्देशक:** ज्योतिष्का दासगुप्ता **नृत्य संयोजक:** अजंना बैनर्जी

19 अप्रैल अदिती के लिए एक महत्वपूर्ण दिन है। इस दिन 18 वर्ष पहले उसके पिता की मृत्यु हुई थी। उस दिन 8 वर्ष की अदिती का जीवन ही बदल गया था। उसकी मां सरोजिनी अपने नृत्य कार्यक्रम के कारण घर पर नहीं थी। अदिती को बोर्डिंग स्कूल भेज दिया और उसने धीरे-धीरे अपने आप को अपनी माँ से दूर कर लिया। अब 26 वर्षीय अदिती दिल्ली में डाक्टरी पढ़ती है और सिर्फ अपने पिता की बरसी पर कलकत्ता अपनी माँ के घर आती है। इस समय वह अपने दोस्त संदीप के फोन का इंतजार कर रही है। आज भी उसके माँ के घर में सब काम बिना रोक टोक हो रहा है।

इतने में खबर आती है कि सरोजिनी गुप्ता को संगीत नाटक अकादमी का पुरस्कार दिया गया है। इससे उसकी जिन्दगी का रुख ही बदल जाता है। संदीप के अनुसार उसके परिवार वाले कभी अदिती को अपनी बहू स्वीकार नहीं करेंगे क्योंकि वह एक मामूली नर्तकी की बेटी है। अदिती का जीवन थम जाता है और वह आत्महत्या करने की योजना बनाती है।

UNISHE APRIL

Bengali/ colour/130 min.

Producer: Renu Roy **Director/Screenplay Writer:** Rituparno Ghosh **Leading Actress:** Debasree Roy **Supporting Actor:** Deepankar Dey **Supporting Actress:** Aparna Sen **Cameraman:** Sunirmal Majumdar **Editor:** Ujjal Nandy **Art Director:** Bibi Ray **Music Director:** Jyotishka Dasgupta **Choreographer:** Anjana Banerjee

The date 19th April holds a special meaning to Aditi. It is her father's death anniversary who had died on this day eighteen years ago.

An eight year old Aditi had been shattered by the catastrophe. Her mother Sarojini away on a performance at the time, had sent Aditi to a boarding school. Aditi had gradually distanced herself from her mother. Now at twenty-six, Aditi studied medicine in Delhi and visited her mother's home in Calcutta only once a year on this day. She and her mother were virtually strangers.

As she awaits a telephone call from Sudeep, her boy friend, she notices that everything goes on unhindered in house even today.

Routine phone calls keep coming. One of them announces that Sarojini Gupta has been awarded the Sangeet Natak Academy award. This changes Aditi's life. Sudeep becomes aware of her mother's identity and is adamant that his family would never allow him to marry Aditi, a common dancer's daughter. Aditi's life comes to a standstill and she plans a foolproof suicide.

व्हील चेयर

बंगला/रंगीन/118 मिनट

निर्माता: रवि मलिक/डा. देबाशीष मजुमदार, एन.एफ.डी.सी. **निर्देशक/पटकथा लेखक/संगीत निर्देशक:** तपन सिन्हा **मुख्य अभिनेता:** सौमित्रा चैटर्जी **मुख्य अभिनेत्री:** लाबोनी सर्कार **सह-अभिनेता:** अर्जुन चक्रबर्ती **कैमरामैन:** सौमेन्दु राय **संपादक:** सुबोध राय **कला निर्देशक:** प्रसाद मित्रा **वेशभूषाकार:** मुकुल मुखर्जी

सुश्मिता एक दफ्तर की बहुत ही काबिल स्टेनोग्राफर है। उसे दफ्तर का एक ज़रुरी काम करने में देर हो जाती है और निकलते समय वो लिफ्ट को न काम करता देख सीड़ियों से उतरने लगती है। वहां उसका तीन बदमाशों से पाला पड़ता है। वो भागने की कोशिश करने में सीड़ियों से गिर जाती है। उसके तीसरे और चौथे रीढ़ की हड्डी में चोट लगने के कारण उसके सारे शरीर को लकवा मार जाता है। प्रसिद्ध तंत्रिका विज्ञानी डॉ. मित्रा सुश्मिता के चिकित्सा का भार लेते हैं। तंत्र रोग से मारे लोगों के लिए उनका एक आश्रम है जहाँ से वे काम करते हैं। डॉ. मित्रा सुश्मिता के लिए एक मिसाल है क्योंकि वे स्वयं तंत्र रोग के मरीज़ हैं और एक व्हील चेयर में बैठकर अपना सारा काम करते हैं। सुश्मिता के मन में एक नई आशा का प्रकाश होता है और उसके इलाज़ का फायदा होने लगता है।

सुश्मिता धीरे-धीरे ठीक हो जाती है और बाहरी जीवन में लौट जाती है। आश्रम में उसकी जगह एक छोटी सी लड़की आती है और डॉ. मित्रा अपने व्हील चेयर से अपना काम करते हैं।

WHEEL CHAIR

Bengali/colour/118 min.

Producer: Ravi Malik/Dr. Debashish Majumdar, NFDC **Director/Screenplay Writer/Music Director:** Tapan Sinha **Leading Actor:** Soumitra Chatterjee **Leading Actress:** Laboni Sarkar **Supporting Actor:** Arjun Chakrabartty **Cameraman:** Soumendu Roy **Editor:** Subodh Roy **Art Director:** Prasad Mitra **Costume Designer:** Mukul Mukherjee.

Susmita, an effecient steno-typist is entrusted with an important assignment. She completes her work late after office hour and finds the elevator not working. On her way down the stairs she is accosted by three hoodlums. In her bid to escape, she falls and damages her third and fourth vertebrae. At the hospital, doctors find her paralysed from head to toe.

Susmita's treatment is taken up by the famous neurologist Dr. Mitra as a challenge who runs a home for neurological patients as well.

Dr. Mitra is an inspiration to Susmita as he, a paralytic himself, moves around in a wheel chair. Susmita's hopes are rekindled and she starts responding to treatment.

Susmita recovers slowly and returns to the outside world while her place at the home is taken up by a small paralytic girl. Dr. Mitra's work continues from his wheel chair.

कथासार : ग़ैर-कथाचित्र

Synopses : Non Feature Films

ए लिटिल वार

हिंदी/श्याम-श्वेत/32 मिनट

निर्माता: भारतीय फिल्म एवं दूरदर्शन संस्थान के निदेशक **निर्देशक/पटकथा लेखक:** अतनु बिस्वास **कैमरामैन:** नन्द कुमार **ध्वनि आलेखक:** अनुराग गुप्ता **संपादक:** अनिमित्रा चक्रवर्ती

एक दिन, क्रोध में आकर, शीला बासु अपना घर छोड़ कर अपने पेशे की तलाश में बंबई जाती है। इस कारण शीला एवं उसके पति आलोक के बीच अस्थाई संबंध विच्छेद हो जाता है। परन्तु कुछ महीने अलग रहने के पश्चात् शीला एवं आलोक दोनों एक दूसरे के महत्व को महसूस करते हैं। वे परिपक्व बन जाते हैं तथा आपसी समझौता कर लेते हैं जिससे उनका पारिवारिक जीवन टूटने से बच जाता है।

A LITTLE WAR

Hindi/B & W/32 min

Producer : Director, FTII **Director/ Screenplay Writer:** Atanu Biswas **Cameraman:** Nand Kumar **Audiographer:** Anurag Gupta **Editor :** Animitra Chakroborty

One day, in anger, Shiela Basu leaves her home and goes to Bombay in pursuit of her career. This leads to a temporary separation between Shiela and her husband Alok. But after a few months' separation, both Shiela and Alok realise each others importance. They become more mature and reach an understanding, thus saving their family from breaking up

---

अनदर वे ऑफ लर्निंग

अंग्रेजी, हिंदी/रंगीन/24 मिनट

निर्माता: कामेट मीडिया फाउंडेशन **निर्देशक:** चन्दिता मुखर्जी **कैमरामैन:** अनूप जोतवानी **ध्वनि आलेखक:** इन्द्रजीत नियोगी/ए. एम. पद्मनाभन **संपादक:** वसुन्धरा फाडके **संगीत निर्देशक:** केदारनाथ अवति

यह फिल्म मध्य प्रदेश की शिक्षा संस्था प्रणाली में एलव्या समूह के शैक्षणिक क्रियाकलाप के परिसर से परिचित कराता है। इसमें होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम एवं पाठशाला शिक्षा विषय पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। विचारधारा एवं उद्देश्य से परिचित कराते हुए ये फिल्म दर्शकों को उक्त समूह के क्रियाकलाप से परिचित कराती है।

ANOTHER WAY OF LEARNING

English, Hindi/colour/24 min

Producer: Comet Media Foundation **Director:** Chandita Mukherjee **Cameraman:** Anoop Jotwani **Audiographer:** Indrajit Neogi/A.M. Padmanabhan **Editor:** Vasundhara Phadke **Music Director:** Kedarnath Awati

This film gives an introduction to the Elavya group's range of educational activities, both in and out of the school system in Madhya Pradesh. The focus is on the subject of school education and the Hoshangabad Science Teaching Programme of the group. The film introduces the spirit and objective behind the programme and takes the viewers to schools to get acquainted with the activities of the group.

ब्लू फ्लेमस्, ग्रीन विलेजेस्

अंग्रेजी/रंगीन/16 मिनट

निर्माता: राष्ट्रीय वनरोपण एवं पारिस्थितिक विकास परिषद **निर्देशक:** रमेश अशेर/गोकुल

ये गोबर गैस के बनाने और उससे होने वाली सुविधाओं के ऊपर बनी ग़ैर-कथाचित्र है। मोर्दारी गाँव में बने विभिन्न संयंत्रों के दाम, उनके फायदों, आदि का इसमें विस्तार पूर्वक वर्णन है।

इस ग़ैर-कथाचित्र में पुणे स्थित एक स्वैच्छिक संस्था वनराई के भूमिका का विशेष उल्लेख है जिन्होंने सिंहाबाद-पनशेट ग्रीन वैली प्रोजेक्ट का काम किया है। उन्होंने खाली पड़े बंजर ज़मीन के विकास और लकड़ी के बदले गोबर-गैस के प्रयोग करने का काम किया है।

BLUE FLAMES, GREEN VILLAGES

English/colour/16 min

Producer: National Afforestation & Eco-development Board **Director:** Ramesh Asher/Gokul

This is a documentary film on the making and advantages of biogas with reference to village Mordari. It gives a detailed report of the cost of setting up different plants, their utilities in different stages like alternative to wood, bio-gas slurry which is ready-to-use manure etc.

The film has a special mention to the catalytic role played by Vanarai, a Pune based voluntary organisation which took up Sinhabad-Panshet Green Valley Project for integrated development of wastelands and bio-gas as on alternative to wood.

क्लिंट

मलयालम, अंग्रेजी/रंगीन/122 मिनट

निर्माता/निर्देशक/पटकथा लेखक/संपादक: शिव कुमार **कैमरामैन:** मधु अम्बाट/बिपिन सामन्त **ध्वनि आलेखक:** के. एस. रवि **संगीत निर्देशक:** पंडित रघुनाथ सेठ

क्लिंट एक महा प्रतिभावान बच्चे की कहानी है जो मात्र 6 वर्ष 11 माह की आयु में गुर्दे की बीमारी से मारा गया। फिर भी वह अपने पीछे कुछ 25,000 रेखाकृति एवं चित्रकला की बपौती छोड़ गया है। उसने अनंत विषयों को दक्षता के साथ चित्रित किया एवं अपनी शैली में ऊंची प्रतिभा दर्शाई। क्लिंट की कुछ चित्रकलाएं त्रिविमीय प्रभाव दर्शाती हैं और कुछ अन्य, गाढ़े जलरंग से नवीनता के साथ बनाई गई हैं। क्लिंट ने अपने से तिगुने आयु के बच्चों के साथ अनेक प्रतियोगिताओं में भाग लिया एवं पुरस्कार भी जीता है।

CLINT

Malayalam, English/colour/122 min

Producer/Director/Screenplay Writer/Editor: Shiv Kumar **Cameraman:** Madhu Ambatt/Bipin Samant **Audiographer:** K.S. Ravi **Music Director:** Pandit Raghunath Seth

Clint is the story of a super genius child whose life abruptly ended of kidney ailment when he was just 6 years and 11 months and yet left behind a legacy of some 25,000 sketches and paintings. He has deftly handled a myriad of subjects and shows a great versatility in style. Some of his paintings show the 3 dimensional effects while some make use of concentrated water colours very innovatively.

Clint entered many a competition and won prizes against children thrice his age.

फादर, सन एण्ड होली वार

हिंदी, अंग्रेजी/रंगीन/60 मिनट

निर्माता/निर्देशक/पटकथा लेखक/कैमरामैन/संपादक: आनंद पटवर्धन ध्वनि आलेखक: परवेज़ मेरवानजी

दो भाग में बनी यह फिल्म भारत के धर्म, सांप्रदायिक उग्रता एवं पुरुष के पहचान आदि समस्याओं पर है। सात वर्ष में बनी इस फिल्म में धार्मिक मूल तत्ववाद के पुनरुद्धारण एवं अल्प संख्यकों को हर संकट के लिए दोषी ठहराने के बारे में प्रकाश डाला गया है।
ट्रायल बाई फायर (भाग-I) का राम द्वारा लिए गए सीता की अग्निपरीक्षा को संकेत करता है। आज भी ऐसा होने की खबर मिलती है। हीरो फार्मेसी (भाग-II) धार्मिक संघर्ष के संदर्भ में बने वास्तविक पुरुष को दर्शाता है जो बदले की खोज में दंगा करवा देता है।

FATHER, SON & HOLY WAR

Hindi, English/colour/60 min

Producer/Director/Screenplay Writer/Cameraman/Editor: Anand Patwardhan
Audiographer: Pervez Mervanjee

The film revolves around religion, communal violence and the male identity. It focusses on the revival of religious fundamentalism and minority communities being made the scapegoat.
'Trial by fire' (Part-I) refers to the fire ordeal subjected to Sita by Rami in order to test her fidelity. Such references are found in the recent past also. 'Hero Pharmacy' (Part-II), describes the construction of manhood in the context of religious strife.

गेम्स् वी प्लेड इन माई यूथ

अंग्रेजी, बंगला/रंगीन/13 मिनट

निर्माता/निर्देशक/पटकथा लेखक: सौमित्रा सरकार कैमरामैन: अशोक दास गुप्ता ध्वनि आलेखक: अभीजीत बैनर्जी संपादक: अर्जुन गौरीसरिया

ये ग़ैर-कथाचित्र सारे ताले-चाबियों के बंधन तोड़कर आज़ादी की ओर भाग जाने को प्रेरित करता है। ये फिल्म हमारी मातृभूमि के स्वतंत्रता संग्राम से विजयी होकर, खुले और स्वतंत्र हवा में निकलने की बात भी करता है।
इस फिल्म में आनंददायी और तरंगमय कविता का भी प्रयोग किया गया है।

GAMES WE PLAYED IN MY YOUTH

English, Bengali/colour/13 min

Producer/Director/Screenplay Writer: Saumitra Sarkar **Cameraman:** Asok Dasgupta **Audiographer:** Abhijit Banerjee **Editor:** Arjun Gourisaria

The film speaks about an urge to break free from all locks and keys and flee to freedom for ever. It also speaks of our motherland's freedom struggle and finally emerging free under the crimson sun.
The film uses delightful yet whimsical poetry to express the feelings.

महागिरी

हिन्दी/रंगीन/7.38 मिनट

निर्माता/संगीत निर्देशक: भीमसैन **निर्देशक:** किरीट **संपादक:** वसंत नार्वेकर **कार्टूनकार:** एस.एम. हसन

ये एक हाथी महागिरी के बारे में कार्टून फिल्म है। वो सबके लिए काम करता और सब उसे बहुत प्यार करते थे।
एक बार मेले के दौरान गाँव के मन्दिर में ध्वज लगाना था। महागिरी जंगल से ध्वज के लिए एक सुंदर बाँस ले आता है ये सोचकर की वो भगवान की सेवा कर रहा है। उसे सब बहुत मान देते हैं।

MAHAGIRI

Hindi/colour/7.38 min

Producer/Music Director: Bhimsain **Director:** Kireet **Editor:** Vasant Narvekar **Animator:** S. M. Hasan

This is an animation film on everyone's darling elephant of the village Mahagiri. He was ever willing to oblige the villagers with any sort of work and everybody adored him too.
Once during a fair in the village temple a flag was to be hoisted. Mahagiri brought a beautiful pole from the jungle with great enthusiasm thinking it to be the golden opportunity for him to serve God. Every body gave Mahagiri a lot of honour.

न्यूज मैगजीन सं : 268 (ए) प्लेग- क्योरेबल एण्ड प्रीवेनटेबल

हिन्दी/रंगीन/10 मिनट

निर्माता: आर. कृष्णमोहन **निर्देशक:** महेश प्रसाद सिन्हा **पटकथा लेखक:** आर. कुमार अल्लावादी **ध्वनि आलेखक:** सुभाशीष चौधरी/वी.एस. भट्ट **संपादक:** सिरीश अम्बेरकर **संगीत निर्देशक:** रामानुज

इस न्यूज मैगज़ीन में गुजरात के सूरत जिले में एकाएक निमोनियाई प्लेग संक्रामक फूट पड़ने के बारे में वर्णन किया गया है। इसमें अनेक निरोधक उपाय एवं रोग के फैलने से प्रतिरोध करने हेतु लिए जाने वाले पूर्वोपाय भी दर्शाए गए हैं।

NEWS MAGAZINE NO. 268 (A) PLAGUE – CURABLE AND PREVENTABLE

Hindi/colour/10 min

Producer: R. Krishnamohna **Director:** Mahesh P. Sinha **Screenplay Writer:** R. Kumar Allawadi **Cameraman:** Mahesh Sinha/Anant Nakhwa **Audiographer:** Subhashish Chowdhury/ V. S. Bhatt **Editor:** Shirish Amberkar **Music Director:** Ramanuj

The News Magazine traces the sudden outbreak of pneumonic plague epidemic in Surat district, Gujarat. It also shows various preventive measures and precautions to be taken to arrest the outbreak of the epidemic.

ऑफ टैगोर एण्ड सिनेमा

अंग्रेजी/रंगीन/32 मिनट

निर्माता: संजय हालदार **निर्देशक/पटकथा लेखक:** अरुण कुमार राय **कैमरामैन :** कनाई दे **संपादक:** सौरव सारंगी **प्रभाव सृजक:** सतीश सी. अजगांवकर

यह फिल्म पथ लेखक, रचनाकार, चित्रकार एवं शिक्षा शास्त्री रवीन्द्रनाथ टैगोर, जिन्होंने बीसवीं सदी में भारतीय संस्कृति के सभी पहलुओं पर अपना प्रभाव डाला, के सिनेमा के साथ संपर्क एवं विचार का समावेश करने का प्रयत्न करता है। स्क्रिप्ट लेखन, अभिनय, संगीत निर्धारण एवं निर्देशन आदि कलाओं के बीच टैगोर के परस्पर क्रिया का अध्ययन हेतु उक्त फिल्म में महान कवि द्वारा निर्देशित नटीर पूजा का पुन: प्रतिष्ठित रूपांतरण का व्यवहार किया गया है। वह भारतीय सिनेमा के महान दिग्गों पर टैगोर का प्रभाव एवं प्रवर निर्माता सत्यजित राय के आगमन को भी प्रदर्शित करता है।

OF TAGORE AND CINEMA

English/colour/32 min

Producer : Sanjoy Halder **Director/ Screenplay Writer :** Arun Kumar Roy **Cameraman:** Kanai Dey **Editor:** Saurav Sarangi **Music Director :** Arun Kumar Basu **Special Effects Creator:** Satish C. Ajgaonkar

The film attempts to probe on the views and links of cinema and Rabindranath Tagore - the poet-writer, composer, painter and educationist -who has influenced all aspects of Indian culture in 20th century. The film in its study uses a restored version of 'Natir Puja' as directed by the poet to focus on Tagore's interaction with the craft of scriptwriting, acting, music-setting and direction. It also reveals Tagore's influence on the stalwarts of Indian Cinema and the advent of Satyajit Ray, a doyen film maker of the Indian Cinema.

ओर्माइन्डे थीरंगलील

मलयालम/रंगीन/25 मिनट

निर्माता: सुनील स्कारिआ मैथिउ **निर्देशक/पटकथा लेखक/संपादक:** शिवप्रसाद **कैमरामैन:** के. एन. नाम्बियार **ध्वनि आलेखक:** कृष्णउन्नी **संगीत निर्देशक:** के राघवन

ये 83 वर्षीय मलयालम लेखक थकाज़ी शिवशंकरा पिल्लई के जीवन और कर्मों पर आधारित ग़ैर-कथाचित्र है। उनके साहित्यिक जीवन का आरम्भ 1934 में हुआ।

उन्हें 1985 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उसी साल उन्हें पद्मभूषण की उपाधि भी प्राप्त हुई। उन्हें कई और पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। उनकी किताबों का रुपांतर कई भाषाओं में किया गया है तथा उन पर फिल्में भी बनाई गई हैं।

ORMAYNDE THEERANGALIL

Malayalam/colour/25 min

Producer: Sunil Scaria Mathew **Director/ Screenplay Writer/Editor:** Sivaprasad **Cameraman:** K.N. Nambiar **Audiographer:** Krishanunni **Music Director:** K. Raghavan

The film is based on the life and works of the 83 year old prolific Malayalam writer Thakazhi Sivasankara Pillai. Thakazi's literary career began in 1934.

In 1985 he received the Gyanpeeth award and in the same year was honoured with the Padmabhusan award. Other than Honorary D-lit he has been honoured with many awards. Many of his books have been translated into different languages and seven of his major works have been made into films.

पेंटिंग इन टाईम

अंग्रेजी/रंगीन/40 मिनट

निर्माता: टॉप शार्ट्स **निर्देशक:** सर्बजीत सेन **कैमरामेन:** अशोक दास गुप्ता **संपादक:** सौरव सारंगी **संगीत निर्देशक:** अमिया मंडल।

पेंटिंग इन टाईम एक कलाकार की थंगका चर्म चित्रावली के तकनीक की खोज में सिक्किम की यात्रा से संबंधित है। इस दौरान इतिहास के पृष्ठों में एक वृद्ध चित्रकार से मुलाकात होती है जो विभिन्न चित्रपट्टी में बौद्ध धर्म से संबंधित रंगीन बिंग उत्पन्न करता है। आगे भ्रमण करते हुए वह वर्तमान पीढ़ी के थंगका चित्रकारों से मिलता है जो ग्रामीण स्टूडियो में उसी पुरानी परम्परानुसार कार्य कर रहे हैं। इस प्रकार संतुष्ट होकर उक्त कलाकार अपनी यात्रा में आगे बढ़ता है।

PAINTING IN TIME

English/colour/40 min

Producer: Topshots **Director:** Sarbajit Sen **Cameraman:** Ashoke Dasgupta **Editor:** Saurav Sarangi **Music Director:** Amiya Mondal

This is a artist's journey through Sikkim seeking the technique of the tradition of Thangka Scroll painting. In his journey he travels into history and stumbles on to an old painter creating ripples of colour on canvas after canvas and producing the images of Buddhism. He proceeds further and comes across the present generation Thangka painters who work in the village studios in the same age old tradition. Thus satisfied, the artist moves on in his search.

फाल्के चिल्ड्रन

अंग्रेजी/रंगीन/17 मिनट

निर्माता: कृष्ण मोहन/वाई. एन. इंजीनियर **निर्देशक/पटकथा लेखक:** कमल स्वरूप **कैमरामैन:** ए. आंजेनेयुलु **ध्वनि आलेखक:** सुभाशीष चौधरी/वी.एस. भट्ट/कमलेश द्विवेदी **संपादक:** बी.ए. भोंसले

भारतीय सिनेमा के पिता, दादा साहेब फाल्के (1870-1944), के अपने आठ बच्चे थे। इस फिल्म में उनका प्रारंभ से अंत तक के जीवन के इतिहास को उनके जीवित बच्चों की संस्मरण, उनके परिवार के छाया-चित्र एवं उनके फिल्मों द्वारा प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है।

PHALKE CHILDREN

English/colour/17 min

Producer : Krishna Mohan/Y.N. Engineer **Director/Screenplay Writer:** Kamal Swaroop **Cameraman** : A. Anjaneyulu **Audiographer** : Subhasis Chowdhury/V S. Bhatt/Kamlesh Dwedi **Editor** : B.A. Bhosle

Dadasaheb Phalke (1870-1944), the father of Indian Cinema had eight children. The film is an effort to trace back the history of his life from the beginning to the end through the reminiscence of his surviving children, his family photographs and his films.

रसयात्रा

अंग्रेजी, हिंदी/रंगीन/47 मिनट

निर्माता: इन्टर एक्शन विडिओ कम्यूनिकेशनस्

निर्देशक: नंदन कुधादि **पटकथा लेखक:** मदन गोपाल सिंह **कैमरामैन:** अनूप जोतवानी **ध्वनि आलेखक:** विक्रम जोग्लेकर **संपादक:** परेश कामदार

रसयात्रा पं. मल्लीकर्जन मनसूर, जयपुर-अत्रौली घराने के शास्त्रीय संगीतज्ञ के जीवन का वृतांत है। इसमें उनके अपने गायन तथा भाषा का भी उपयोग है। उनके जन्म से लेकर उनके एक महान गायक बनने तक और उनकी मृत्यु सभी का उल्लेख इसमें है। अंत में उनके सभी छात्रों ने इस गैर-कथाचित्र में उनको श्रद्धांजलि अर्पित की है।

RASAYATRA

English, Hindi/colour/47 min

Producer: Interaction Video Communications **Director:** Nandan Kudhyadi **Screenplay Writer:** Madan Gopal Singh **Cameraman:** Anoop Jotwani **Audiographer:** Vikram Joglekar **Editor:** Paresh Kamdar

Rasayatra is the documentation of the real life instances and experiences of Pandit Mallikarjun Mansur, the doyen of the Jaipur-Atrauli school of Indian Classical Music

The incidents are accompanied by the maestro's own voice-over and his various compositions.

It encapsulates the life from his birth to his training and rise as a musician and finally ends with his death with his disciples paying their heart felt homage.

स्टिल लाईफ

हिंदी, अंग्रेजी/श्वेत-श्याम/32 मिनट

निर्माता: भारतीय फिल्म एवं दूरदर्शन संस्थान के निदेशक **निर्देशक:** सुभद्रो चौधरी **पटकथा लेखक:** सुभद्रो चौधरी/तनमय अग्रवाल **कैमरामेन:** तनमय अग्रवाल **ध्वनि आलेखक:** प्रमोद थामस **संपादक:** विनीत कुमार पी.

महिला छविकार, माया, विश्व को गतिहीन और निश्चल पाती हैं। उसका कारण जानने हेतु माया, अपनी बीती जीवन का स्मरण करती है, जो जीवन एवं नातेदारी के रुख का सर्वेक्षण है। वह अपनी जीवन को अपने माता-पिता की मृत्यु के बीच के बंधनों में फंसा हुआ पाती हैं। परन्तु जीवन पर उसकी रुख बदल जाती है एवं वह अब एक परिवर्तित नारी है।

STILL LIFE

Hindi, English/B & W/32 min.

Producer : Director, FTII **Director:** Subhadro Chowdhary **Screenplay Writer:** Subhadro Chowdhary/Tanmoy Agarwal **Cameraman:** Tanmoy Agarwal **Audiographer:** Pramodh Thomas **Editor:** Vineet Kumar P.

Maya, a female photographer finds the world very static and stagnant. Maya traces back into her memories to find a reason - a survey of an attitude towards life and relationship. She finds her life trapped within a bracket between her father's and mother's death. But her attitude to life shifts, she is a transformed person now.

द मीथ ऑफ द ट्री, द सरपेन्ट एण्ड द मदर

मलयालम/रंगीन/13 मिनट

निर्माता: संजीव सिवन **निर्देशक/पटकथा लेखक/कैमरामैन:** संतोष सिवन **ध्वनि आलेखक:** सिवन **संपादक:** श्रीकर प्रसाद **संगीत निर्देशक:** के. पी. उदयभानु

यह फिल्म केरल के मन्नारसाला के "सर्प मंदिर" की पूजारिन सावित्री अन्तर्जानम की कहानी है। वे आजीवन मानव समुदाय एवं प्रकृति की उर्वरता हेतु प्रार्थना एवं सर्प पूजा में लगी रहीं। वे पवित्रता की प्रतीक बन गई तथा उन्होंने अपने भक्तों में प्रकृति के प्रति गहरी श्रद्धा उत्पन्न कराई।

THE MYTH OF THE TREE, THE SERPENT AND THE MOTHER

Malayalam/colour/13 min

Producer : Sanjeev Sivan **Director/ Screenplay Writer/Cameraman :** Santosh Sivan **Audiographer :** Sivan **Editor:** Sreekar Prasad **Music Director:** K.P. Udayabhanu

The film is the story of Savitri Antarjanam, the priestess of the famous Serpent temple at Mannarassala in Kerala. She served her entire lifetime in the serpent worship performing prayers for the fertility of man and nature. She became the symbol of purity and instilled a deep respect for nature in her devotees.

ऍ स्टोरी ऑफ इन्टिग्रेशन

अंग्रेजी/रंगीन/57 मिनट

निर्माता: पटकथा **निर्देशक:** गौतम हालदार **कैमरामैन:** शशी आनन्द/सुनिर्मल मजुमदार **ध्वनि आलेखक:** रोबिन अधिकारी **संपादक:** रथिन बोस **कला निर्देशक:** पबन मित्रा **संगीत निर्देशक:** जयंत बोस

ये कहानी भारतीय शास्त्रीय संगीत के महान तबला वादक हितेन्द्र कुमार गांगूली के जीवन पर आधारित है। ये उनके जन्म सन् 1910 में और 1993 में मृत्यु तक का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है। इसमें पं. रवि शंकर, उस्ताद अमजद अली खान तथा विजय किचलू ने उनके बारे में अपने विचार प्रकट किए हैं। हिरु बाबू ने स्वयं भी अपने बारे में बताया है।

A STORY OF INTEGRATION

English/colour/57 min

Producer: Patakatha **Director:** Gautam Halder **Cameraman :** Shashi Anand/ Sunirmal Mazumdar **Audiographer :** Rabin Adhikary **Editor:** Rathin Bose **Art Director:** Paban Mitra **Music Director:** Jayanta Bose

The story of the film revolves around a doyen of Indian classical music-Hirendra Kumar Ganguly, the renowned tabla player. It is a documentation of his life from his birth in 1910 to death in 1993. The film invites people like Pt. Ravi Shankar, Ustad Amjad Ali Khan and Vijoy Kichlu to speak about him along with Hiru Babu's interview.

द ट्रैप्ड

अंग्रेजी/रंगीन/22 मिनट

निर्माता: के. जयचन्द्रन **निर्देशक/पटकथा लेखक:** ओ.के. जॉनी **कैमरामैन:** सन्नी जोसफ **ध्वनि आलेखक:** कृष्णन उन्नी/कृष्ण कुमार **संपादक:** पी. रामन नायर

इस फिल्म में विकासशील, वयनाड की ओर ढकेले गए पनिया जनजाति के वर्तमान जीवन एवं वास्तविक स्थिति को प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है। वयनाड पहाड़ी क्षेत्र के दूरवर्ती गांवों में बंधक मजदूर का प्रयोग अब भी उपलब्ध है तथा कथित मुख्यधारा एवं विकास प्रवृत्ति के अतिक्रमण के कारण पनिया जनजाति अव्यवस्थित हो गए। अब वे एक विश्वासघात का शिकार, भूमिहीन, अस्वस्थ, अपभ्रष्ट लोग हैं जिनके भाग्य में शायद धीरे-धीरे भूखों मरना लिखा है।

THE TRAPPED

English/colour/22 min

Producer: K. Jayachandran **Director/ Screenplay Writer:** O.K. Johnny **Cameraman:** Sunny Joseph **Audiographer:** Krishnan Unny/Krishna Kumar **Editor:** P. Raman Nair

The film attempts to portray the present-day life and the realities of the Paniya people, pushed off to the margins of a developing 'Wayanand'. In the remote hamlets of the Wayanand hills, the practice of bonded labour is still prevalent. The intrusion of the so-called mainstream and developmental ethos has thrown the Paniyas into disarray. They are now betrayed, landless, sick and degenerate people - destined perhaps to starve and condemned to a slow death.

विशुद्ध वनंगल

मलयालम/रंगीन/25 मिनट

निर्माता: प्रबंध निदेशक, केरल राज्य फिल्म विकास निगम **निर्देशक/पटकथा लेखक:** के. आर. मोहनन **कैमरामैन:** के.जे. जयन **ध्वनि आलेखक:** एन. हरिकुमार **संपादक:** जी. भास्करन **संगीत निर्देशक:** कोवलम नारायण पणिक्कर/मोहन सितारा

केरल के लोपी वाटिकाओं पर बनाई गई इस फिल्म में केरल के सर्प पूजा का इतिहास तथा परंपरागत केरल समाज में इसकी भूमिका पर जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न किया गया है।

आज के आधुनिकीकरण एवं विकास हेतु वांछित भूमि के अभाव में वाटिकाओं को नष्ट करने का मार्ग अपनाया गया है। नाग देवता की आत्मा को नई कंक्रीट प्रतिमाओं में स्थानांतरित कर उसे सुविधाजनक स्थानों पर वाटिकाओं के अंतर-जीविता की परवाह किए बिना, प्रतिष्ठित किया जाता है।

VISUDDHA VANANGAL

Malayalam/colour/25 min

Producer: Managing Director, K.S.F.D.C. **Director/Screenplay Writer :** K.R. Mohanan **Cameraman :** K.J. Jayan **Audiographer:** N. Harikumar **Editor:** G. Bhaskaran **Music Director :** Kovalam Narayana Panicker/Mohan Sithara.

This film on the vanishing sacred groves of Kerala attempts to understand the history of serpent worship in Kerala and the part these play in traditional Kerala society.

For todays modernity, ways have been devised to uproot the groves. The spirit of the Serpent Gods are now made to migrate to new concrete idols, shifted to convenient places without being concerned about the survival of the groves.